Adda247 PUBLICATIONS

चाणक्य ऐस सामान्य ज्ञान

Useful for - **State SSC | Assistant | Junior Assistant LDC Clerks | UDC Clerks | Stenographer | Forest Guard Village Development Officer (VDO) | Amin | Police SI Police Constable | Village Panchayat Officer (VPO) Agriculture Tech Assistant | Lekhpal (Patwari) Excise Police | PET | B.ED | Defence & Paramilitary District Court, High Court & Supreme Court & All Other Competitive Exams**

NCERT पर पूर्णतः आधारित

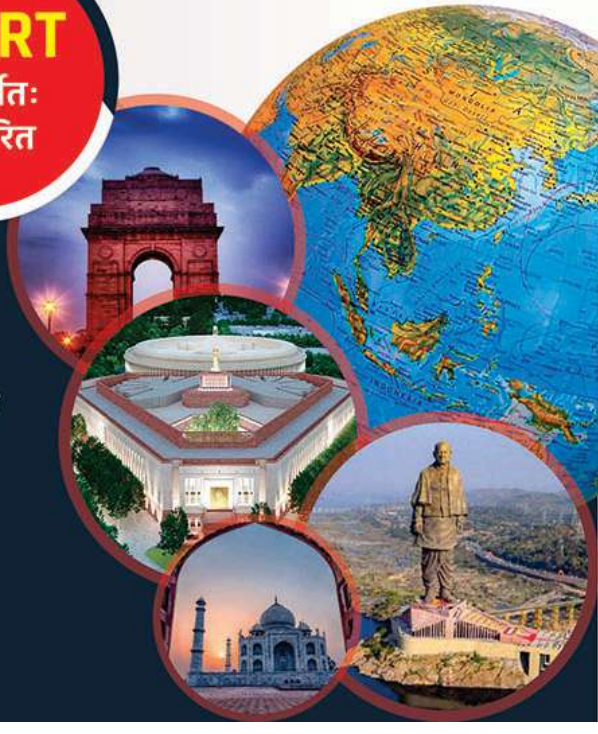

नवीनतम संस्करण सहित

- नवीनतम दृष्टिकोण और तालिकाओं के साथ अवधारणा
- विभिन्न राज्य परीक्षाओं के प्रश्नों का तथ्यों के रूप में समावेश
- समझाने का सरल एवं आसान तरीका

विषय-सूची

खण्ड-I. भारतीय इतिहास 9-96

प्राचीन भारत-मानव विकास-9/प्रागैतिहासिक काल-10/प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत-11/सिन्धु घाटी सभ्यता-15/वैदिक सभ्यता-18/महाजनपदों का उदय-20/जैन धर्म-22/बौद्ध धर्म-24/ब्राह्मण धर्म तथा वैष्णव धर्म-26/शैव धर्म-28/मगध राज्य का उत्कर्ष-29/सिकन्दर-30/मौर्य साम्राज्य-32/ब्राह्मण साम्राज्य (शुंग वंश-34/कण्व वंश-35/सातवाहन वंश-35/चेदि वंश-36/वाकाटक वंश-36)/ मौर्योत्तरकालीन भारत पर विदेशी आक्रमण-36/कुषाण वंश-38/गुप्त वंश-39/पुष्यभूति वंश-42/संगम युग-42/भारत के प्रमुख राजवंश (पल्लव वंश-44/कदंब वंश-45/चालुक्य वंश-45/गुर्जर-प्रतिहार वंश-46/राष्ट्रकूट वंश-46/पाल वंश-47/गहड़वाल वंश-48/चौहान वंश-48/चन्देल वंश- 48/परमार वंश-49/कलचुरी वंश-49/सेन वंश-49/हिन्दूशाही वंश-50/सोलंकी वंश-50/कार्कोट वंश-50/उत्पल वंश-50/लोहर वंश-50/वर्मनवंश-50/ गंग वंश-51/चेर वंश-51/पाण्ड्य वंश-51/चोल वंश-51/ चोल-चालुक्य वंश-52)

मध्यकालीन भारत-भारत पर अरबों का आक्रमण-53/भारत पर तुर्कों का आक्रमण (महमूद गजनवी (998-1030 ई0)-53/शिहाबुद्दीन उर्फ मुईज़ुद्दीन मुहम्मद गोरी-54)/दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई0) (गुलाम वंश या ममलुक वंश (1206-1290 ई0)-54/खिलजी वंश (1290-1320 ई0)-57/तुगलक वंश (1320-1412 ई0)-59/सैय्यद वंश (1414-1451 ई0)-60/लोदी वंश (1451-1526 ई0)-61/स्वतन्त्र प्रान्तीय राज्य-62/उत्तर भारत के राज्य (जौनपुर-62/कश्मीर-63/बंगाल-63/गुजरात-64/मालवा-64/ मेवाड़-65/मारवाड़-65/आंबेर-65)/दक्षिण भारत के राज्य (खानदेश-65/बहमनी राज्य-66/बीजापुर-66/ अहमदनगर-67/बरार-67/गोलकुण्डा-67/बीदर-67/विजयनगर साम्राज्य-67/संगम वंश-67/सालुव वंश-68/ तुलुव वंश-68/अरावीडु वंश-69)/मध्यकालीन भारत में धार्मिक आन्दोलन (सूफी आन्दोलन-69/भक्ति आन्दोलन-70/सिख धर्म-70)/मुगल साम्राज्य (बाबर-71/हुमायूँ-72/अकबर-73/ जहाँगीर-75/ शाहजहाँ-77/औरंगजेब-78/अन्य मुगल बादशाह-79/मुगल शासन व्यवस्था-79)/सूर साम्राज्य/सूर वंश/ अफगान साम्राज्य-81/सिसोदिया वंश (महाराणा प्रताप सिंह)-82/मराठा साम्राज्य-82

आधुनिक भारत-यूरोपीय व्यापार का प्रारम्भ (पुर्तगाली-86/डच-87/अंग्रेज-87/डेन-88/ फ्रांसीसी-88)/ भारत में ब्रिटिश साम्राज्य-88/गवर्नर जनरल (कम्पनी के अधीन बंगाल के गवर्नर-89/कम्पनी के अधीन गवर्नर जनरल-90/चार्टर एक्ट 1833 के अधीन भारत के गवर्नर जनरल-92/भारतीय कौंसिल एक्ट 1858 के अधीन भारत के गवर्नर जनरल एवं वायसराय-93/स्वतंत्र भारत के गवर्नर जनरल-96)

खण्ड-II. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन 97-100

1857 की क्रांति-97/आन्दोलन एवं विद्रोह का प्रारम्भ-97/राष्ट्रीय जागरण-98/उदारवादी आन्दोलन-99/उग्रवादी तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन-102/गाँधी युग और असहयोग आन्दोलन-104/गाँधी युग और सविनय अवज्ञा आन्दोलन-106/गाँधी युग और भारत छोड़ो आन्दोलन-109/गाँधी युग और राष्ट्रीय आन्दोलन का अन्तिम चरण-110

खण्ड-III. विश्व इतिहास 111-126

मेसोपोटामिया की सभ्यता-111/मिस्र की सभ्यता-112/सिन्धु घाटी की सभ्यता-112/ चीन की सभ्यता-113/यूनान की सभ्यता-113/रोम की सभ्यता-113/यूरोप का पुनर्जागरण-114/धर्म सुधार आन्दोलन-115/इंग्लैण्ड की क्रान्ति-115/अमेरिका का स्वतन्त्रता संग्राम-116/फ्रांस की राज्य क्रांति-117/इटली का एकीकरण-118/जर्मनी का एकीकरण-119/रूस की क्रांति-120/प्रथम विश्व युद्ध-121/चीन की क्रांति-123/तुर्की में राष्ट्रीय जागरण-123/इटली में फासिस्टों का उदय-124/जर्मनी में नाजीवाद का उदय-125/जापानी साम्राज्यवाद-125/द्वितीय विश्व युद्ध-126

खण्ड-IV. विश्व का भूगोल 127-198

भूगोल : एक परिचय-127/ब्रह्माण्ड एवं सौर मण्डल (सूर्य-128/ग्रह-130, बुध-131, शुक्र-131, पृथ्वी-131, मंगल-132, बृहस्पति-133, शनि-134, अरुण-134, वरुण-135/उपग्रह-135/आकाशगंगाएँ-136/ निहारिका-136/तारे-136/गैलेक्सी-137/धूमकेतु/पुच्छल तारा-137/उल्का-137/उल्कापिण्ड-137/ क्षुद्र ग्रह या अवान्तर-138/कृष्ण छिद्र-138/श्वेत वामन-138)/पृथ्वी और उसका सौर्यिक सम्बन्ध-138/पृथ्वी की गतियाँ-141/पृथ्वी की उत्पत्ति एवं आन्तरिक संरचना-142/स्थलमण्डल (चट्टान-144/ज्वालामुखी-145/भूकम्प-147/पर्वत-148/पठार-149/मैदान-152/मिट्टियाँ-154/मरुस्थल-154/ द्वीप-155/प्रायद्वीप-157/महाद्वीप-157, एशिया-159, अफ्रीका-161, उत्तरी अमेरिका-164, दक्षिणी अमेरिका-167, अण्टार्कटिका-168, यूरोप-168, ऑस्ट्रेलिया-170/जलमण्डल (महासागर-172, प्रशान्त महासागर-172, अटलांटिक महासागर-172, हिन्द महासागर-172, अण्टार्कटिका महासागर-173, आर्कटिक महासागर-173/महासागरीय जल की गतियाँ-174/झीलें-175)/वायुमण्डल (वायुमण्डल के संस्तर-185, क्षोभमण्डल-185, समतापमण्डल-186, मध्यमण्डल-186, आयनमण्डल-186, बहिर्मण्डल-187/सूर्यातप तथा तापमान-187/वायुमण्डलीय दाब-188/पवन-189/वायुमण्डल की आर्द्रता-191)

खण्ड-V. भारत का भूगोल 199-257

भारत की अवस्थिति-199/भारत का भौतिक स्वरूप (उत्तर के विशाल पर्वत-202/उत्तर भारत का मैदान-203/प्रायद्वीपीय पठार-203, मध्यवर्ती उच्चभूमि-204, दक्कन का पठार-204/तटीय मैदान-204/द्वीपसमूह-204)/ भारत की नदियाँ-204/भारत की झीलें-207/भारत के जलप्रपात-208/भारत की जलवायु-208/भारत की मिट्टियाँ (जलोढ़ मिट्टियाँ-211/काली मिट्टियाँ-211/लाल मिट्टियाँ-211/लैटेराइट मिट्टियाँ-211/पर्वतीय मिट्टियाँ-212/मरुस्थलीय मिट्टियाँ-212)/भारत की भूमि संसाधन-212/भारत की वनस्पतियाँ (उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन-213/उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन-213/उष्ण कटिबंधीय कंटीले वन तथा झाड़ियाँ-213/शीतोष्ण कटिबंधीय वन एवं घास के मैदान-213/अल्पाइन तथा टुंड्रा वनस्पति-213/भारत में वन्य जीव-214/भारत में कृषि-218/भारत की सिंचाई-221/भारत के खनिज-223/भारत के विनिर्माण उद्योग-226/भारत में परिवहन (सड़क परिवहन-236/रेल परिवहन-237/जल परिवहन-238/वायु परिवहन-239)/भारत की जनजातियाँ-240/भारतीय जनगणना-242/ सामाजिक-आर्थिक जनगणना 2011 (आजीविका के आधार पर परिवार-254/परिवारों में शैक्षणिक स्थिति के सम्बन्ध में जनगणना, 2011-255)/प्रमुख भौगोलिक संकेतक-256

खण्ड-VI. भारतीय राजव्यवस्था 258-356

भारतीय संविधान का विकास-258/भारतीय संविधान का निर्माण-263/भारत के राष्ट्रीय प्रतीक (राष्ट्रीय चिह्न-265/राष्ट्रीय ध्वज-265/राष्ट्रीय गान-265/राष्ट्रीय गीत-266/राष्ट्रीय पंचांग-266/अन्य राष्ट्रीय प्रतीक-266)/भारत के संविधान के स्रोत-267/भारतीय संविधान के भाग-268/भारतीय संविधान की अनुसूची-269/राज्यों का पुनर्गठन (राज्य-271/संघ राज्य क्षेत्र/केन्द्रशासित प्रदेश-272/राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर में शामिल राज्यों के जिले)-272/क्षेत्रीय परिषदें-272)/ भारतीय संविधान की विशेषताएँ-277/भारतीय संविधान की उद्देशिका-278/संघ और उसका राज्य क्षेत्र-279/भारतीय नागरिकता-279/मूल कर्त्तव्य-280/मूल अधिकार-281/राज्य के नीति निदेशक तत्व-284/प्रशासन (पंचायती राज -285/नगर प्रशासन-286)/संघीय संसद (राज्यसभा-288/लोकसभा-290)/संघीय कार्यपालिका (राष्ट्रपति-294/उपराष्ट्रपति-300/मंत्रिपरिषद्-302/महान्यायवादी-307/नियन्त्रक-महालेखा परीक्षक-309)राज्य विधानमंडल (विधानपरिषद्-310/विधानसभा-311)/राज्य की कार्यपालिका (राज्यपाल-314/राज्य मंत्रिपरिषद्-316/महाधिवक्ता (एडवोकेट जनरल)-318)/केन्द्रशासित और अनुसूचित तथा जनजातीय क्षेत्रों का प्रशासन (केन्द्रशासित प्रदेश-318/राष्ट्रीय राजधानी राज्य क्षेत्र : दिल्ली-320/अनुसूचित और जनजातीय क्षेत्रों का प्रशासन-320)/न्यायपालिका (सर्वोच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय-323/उच्च न्यायालय-327/अधीनस्थ न्यायालय-330/परिवार न्यायालय-330/

प्रशासनिक अधिकरण-330/लोक अदालत-331/जनहित याचिका-331/ कॉलेजियम प्रणाली-332)/ केन्द्र-राज्य सम्बन्ध-333/लोक सेवाएँ-335/निर्वाचन-338/राजभाषा-340/अन्तर्राज्य परिषद्-341/योजना आयोग (नीति आयोग)-342/राष्ट्रीय विकास परिषद्-342/राष्ट्रीय एकता परिषद्-343/वित्त आयोग-343/ संचित निधि-344/आकस्मिक निधि-344/वरीयता अनुक्रम-345/भारत सरकार के मंत्रालय एवं विभाग-347/संविधान संशोधन-354

खण्ड-VII. भारतीय अर्थव्यवस्था 357-390

अर्थशास्त्र की परिभाषा-357/भारतीय अर्थव्यवस्था : एक परिचय-357/भारत की राष्ट्रीय आय-359/भारत में आर्थिक आयोजन (प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56)-361/द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61)-362/तृतीय पंचवर्षीय योजना (1961-66)-363/वार्षिक योजनाएँ (1966-68)-363/चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-74)-364/पाँचवीं पंचवर्षीय योजना (1974-79)-364/छठी पंचवर्षीय योजना (1980-85)-365/सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985-90)-366/आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97)-366/नौवीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002)-367/दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-2007)-368/ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-12)-368/बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-17)-369/नीति आयोग-369)/औद्योगिक नीति (औद्योगिक नीति, 1948-370/औद्योगिक नीति, 1956-370/नई औद्योगिक नीति, 1991 एवं अन्य औद्योगिक नीतियाँ-371)/औद्योगिक वित्त (भारतीय औद्योगिक वित्त निगम-371/राज्यीय वित्त निगम-371/राज्यीय औद्योगिक विकास निगम-372/भारतीय औद्योगिक ऋण तथा विनियोग निगम-372/भारतीय औद्योगिक विकास बैंक-372/भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक-372/भारतीय औद्योगिक विनियोग बैंक-373/भारतीय निर्यात-आयात बैंक-373)/विनियोग संस्थान (भारतीय इकाई न्यास-373/भारतीय जीवन बीमा निगम-373/भारतीय साधारण बीमा निगम-373)/भारतीय मुद्रा प्रणाली (ब्रिटिशकाल में भारत में मुद्रा प्रणाली-374/स्वतन्त्र भारत में मुद्रा प्रणाली-374/राजकोषीय नीति-374/मौद्रिक नीति-374/वैधानिक तरलता अनुपात-374/मुद्रा बाजार-375)/भारत में बैंकिंग प्रणाली (केन्द्रीय बैंक-375/राष्ट्रीयकरण-376/भारतीय स्टेट बैंक-377/भारतीय महिला बैंक-377/निजी क्षेत्र के भारतीय वाणिज्यिक बैंक-377, बंधन बैंक-377, आईडीएफसी बैंक-377/अन्य बैंक-377, न्यू डेवलपमेंट बैंक-377, भुगतान बैंक-378)/प्रेस एवं टकसाल-379/प्रमुख शेयर मूल्य सूचकांक-380/कर प्रणाली-380/केन्द्रीय/राज्यीय योजनाएँ-382

खण्ड-VIII. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 391-485

विज्ञान : एक परिचय-391

भौतिक विज्ञान-भौतिक विज्ञान : एक परिचय-391/मात्रक (S.I. के मूल मात्रक-392/कुछ प्रमुख मात्रक-393/दस के विभिन्न घातों के प्रतीक-393)/गति-394/कार्य, ऊर्जा एवं शक्ति-397/सार्वत्रिक गुरुत्वाकर्षण-399/दाब-401/पृष्ठ तनाव-403/केशिकत्व-404/श्यानता-404/प्रत्यास्थता-405/ऊष्मा- 406/ ऊष्मागतिकी-407/सरल आवर्त्त गति-407/तरंग-408/प्रकाश-409/दर्पण-411/विद्युत-415/ चुम्बकत्व-419/ परमाणु भौतिकी-420/नाभिकीय भौतिकी-421

रसायन विज्ञान-रसायन विज्ञान : एक परिचय-422/द्रव्य एवं द्रव्य का वर्गीकरण-422/परमाणु संरचना-423/गैसों का आचरण-425/तत्त्वों का आवर्ती वर्गीकरण-427/रासायनिक बन्धन-427/ऑक्सीकरण या उपचयन एवं अवकरण या अपचयन-429/अम्ल, भस्म एवं लवण-430/कार्बन एवं उसके यौगिक-433/ईंधन-435/धातुएँ-435/अधातुएँ-439/साबुन तथा डिटर्जेन्ट-442/सीमेण्ट एवं काँच-443/ रसायन विज्ञान से सम्बन्धित रोचक तथ्य-443

जीव विज्ञान-जीव विज्ञान : एक परिचय-445/जीवधारियों का वर्गीकरण-445/जन्तु जगत-447/कोशिका-450/जन्तु ऊतक-451/मानव तंत्र या संस्थान-453/पोषण-462/विटामिन, स्त्रोत तथा न्यूनता के कारण रोग-463/मानव रोग (बैक्टीरिया से होने वाले रोग-465/वायरस से होने वाले रोग-466)

वनस्पति विज्ञान-पादप जगत-467/पादप आकारिकी-469/पादप ऊतक-474/प्रकाश-संश्लेषण-474/पादप वृद्धि एवं हॉर्मोन्स-475/जैव-विकास-476/आनुवंशिकी-477

कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी-कम्प्यूटर : एक परिचय-480/अन्तरिक्ष उपग्रह-482/विविध (भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन-484/विलयन-484/कोलॉइडल विलयन-484/पर्यावरणीय प्रदूषण से संबंधित कानून-485/वन संरक्षण आंदोलन-485/जीव-जन्तुओं के संरक्षण हेतु योजनाएँ-485)

खण्ड-IX. रक्षा एवं प्रतिरक्षा 486-490

भारतीय प्रतिरक्षा-486

खण्ड-X. कला एवं संस्कृति 491-494

भारत के प्रमुख वाद्ययंत्र और उसके वादक-491/भारत के शास्त्रीय नृत्य-491/भारत के प्रमुख लोक नृत्य-492/स्थल और निर्माणकर्त्ता-493

खण्ड-XI. सामान्य जानकारी 495-544

महत्त्वपूर्ण दिवस (राष्ट्रीय दिवस-495/विश्व/अन्तर्राष्ट्रीय दिवस-496/राज्य दिवस-497/अन्तराष्ट्रीय वर्ष-498)/पुस्तक-लेखक-498/विश्व के प्रमुख संगठन (संयुक्त राष्ट्र संघ-502/प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय संगठन-506)/देश और राष्ट्रीय प्रतीक-508/देश और उनके ध्वज-509/देश और संसद के नाम-509/राष्ट्राध्यक्ष/शासनाध्यक्षों के आधिकारिक निवास/कार्यस्थल-510/देश और राजनीतिक दल-511/देश और स्वतंत्रता दिवस-512/देश और राष्ट्रीय स्मारक-512/प्रमुख देशों के सरकारी दस्तावेज-512/भारत सरकार द्वारा जारी श्वेत-पत्र-512/देश और राष्ट्रीय पशु-513/देश और राष्ट्रीय फूल-513/देश और वायु सेवाएँ-513/देश और समाचार एजेंसी-514/देश और गुप्तचर संस्थाएँ-514/विश्व के प्रमुख समाचार-पत्र-515/विश्व के चिह्न तथा प्रतीक-515/विश्व के प्रमुख भौगोलिक उपनाम-516/आविष्कार और आविष्कारक-518/खोज और खोजकर्ता-522/भारत के प्रमुख शोध संस्थान-525/विश्व में प्रथम-526/भारत में प्रथम-527/विश्व में प्रथम पुरुष-527/भारत में प्रथम पुरुष-528/विश्व में प्रथम महिला-530/भारत में प्रथम महिला-530/विश्व में सबसे बड़ा, छोटा, लम्बा तथा ऊँचा-533/भारत में सबसे ऊँचा, लम्बा, बड़ा-535/विश्व के प्रमुख सामुद्रिक जलमार्ग -537/विश्व के प्रमुख पत्तन और सम्बन्धित नदी-537/विश्व के प्रमुख आतंकवादी/ उग्रवादी/अतिवादी संगठन-538/व्यक्ति और उपनाम-538/व्यक्ति और समाधि स्थल-540/महान कार्य और सम्बन्धित व्यक्ति-540/वचन और व्यक्ति-541/वेबसाइट/कम्पनी एवं इनके संस्थापक-542/ मोबाइल कम्पनी एवं सम्बन्धित देश-543/प्रमुख वाहन कम्पनी एवं सम्बन्धित देश-543/परिवर्तित नाम-543/भारतीय नोटों के रंग एवं उन पर छपे चित्र-544

खण्ड-XII. खेलकूद 545-556

अन्तर्राष्ट्रीय खेल (ओलम्पिक खेल-545/राष्ट्रमंडल खेल-546/एशियाई खेल-546)/प्रमुख खेल (क्रिकेट-546/हॉकी-547/फुटबॉल-548/वालीबॉल-549/बास्केटबॉल-549/कराटे-549/बेसबॉल-549/लॉन टेनिस-550/टेबिल टेनिस-550/गोल्फ-551/बैडमिण्टन-551/बिलियर्ड्स-552/ स्क्वैश-552/ तीरंदाजी-552/ तलवारबाजी (फेंसिंग)-552/निशानेबाजी-552/कुश्ती-553/नौकायन (रोइंग)-553/ तैराकी-553/ मुक्केबाजी-553/एथलेटिक्स-554/जिमनास्टिक-554/जूडो-554/भारोत्तोलन-554/कबड्डी-554/रगबी फुटबॉल-554/विमानरेस-554/घुड़सवारी-555/घुड़दौड़-555/वाटर पोलो-555/पोलो-555/शतरंज-555/ स्नूकर-555/ब्रिज-556/साइकिलिंग-556/आइस हॉकी-556/खो-खो-556)/स्टेडियम और स्थान-556

खण्ड-XIII. पुरस्कार एवं सम्मान 557-560

अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार-557/राष्ट्रीय पुरस्कार-558/भारत रत्न से सम्मानित व्यक्ति-559/नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय व्यक्ति-560

Adda247

खण्ड-I

भारतीय इतिहास

I. प्राचीन इतिहास

1. मानव विकास

आज से लगभग 3.5 करोड़-2.0 करोड़ वर्ष पूर्व 3 फुट-4 फुट ऊँचा एक कपि समूह उष्ण कटिबंध के घने जंगलों से बाहर निकल आया, जहाँ वह वृक्षों पर रहा करता था। ये कपि अपनी अत्यंत लम्बी बाँहों से लटक-लटक कर पेड़ की एक शाखा से दूसरी शाखा पर पहुँच जाया करते थे। धीरे-धीरे जलवायु परिवर्तन के कारण या तो जंगल छोटे होते जा रहे थे या कपि की संख्या जंगल की तुलना में बढ़ती जा रही थी। कारण कुछ भी हो, प्रकृति के नियम को जानते हुए हम यह सहज अनुभव कर सकते हैं कि जलवायु परिवर्तन सम्भवत: इस निष्क्रमण का अधिक युक्तिसंगत कारण था। कारण कुछ भी रहा हो, ये कपि जंगल की सीमा पर मँडराते रहते थे और आगे चलकर मैदानी जीवन के लिए अनुकूलित हो गए। इस क्रम में मानव विकास ने अनेक चरणों से गुजरकर अपनी पूर्णता (वर्तमान स्थिति) को प्राप्त किया, जिसका क्रमवार वर्णन निम्न है—

1. **रामापिथेकस** (Ramapithecus)—लगभग दो करोड़ वर्ष पूर्व आधुनिक मानव का यह पूर्वज समूह विभाजन की एक शाखा बन गया। इसे रामापिथेकस कहा गया।
2. **ऑस्ट्रेलोपिथेकस** (Australopithecus)—जो शाखा जंगलों में रह गई, परन्तु धरती पर रहने के लिए अधिक अनुकूलित थी वह महाकपि वर्ग के रूप में विकसित हुई और कालांतर में इसने खुले घास के मैदान ढूँढ़ना पसन्द किया, इसे ऑस्ट्रेलोपिथेकस कहा गया। ऑस्ट्रेलोपिथेकस मानव का आदि पूर्वज बना और यह पूर्व अत्यन्त नूतन काल (Pleistocene) में प्रकट हुआ।
3. **पिथेकेंथ्रोपस** (Pithecanthropus) **या इरेक्टस** (Ecrectus)—आरम्भिक मध्य-अत्यन्त नूतन काल में विश्व के अनेक भागों में अधिक विकसित मानव जाति का आविर्भाव हुआ, इसे पिथेकेंथ्रोपस या इरेक्टस कहा गया।
4. **नियन्डरथाल** (Neanderthals)—यह मानव मध्य-अत्यन्त नूतन काल के अंत में तथा उत्तर-अत्यन्त नूतन काल के आरम्भ में प्रकट हुआ।
5. **होमोसेपिएन्स सेपिएन्स** (Homosapien Sapiens)—मानव पूर्वजों में शायद ये पहले ऐसे प्राणी थे, जिन्होंने न केवल हिमाच्छादित क्षेत्र की चुनौती को स्वीकार किया, बल्कि ये समशीतोष्ण क्षेत्रों के भीतर भी दूर-दूर तक पहुँच गए।

लगभग 30,000 वर्ष पूर्व 'आधुनिक मानव' का विकास हुआ। उसे हम होमोसेपिएन सेपिएन्स या 'प्रज्ञ मानव' या विशिष्ट अनुसंधान नामों से जानते हैं; जैसे—क्रौ-मैग्नौन, चांस-लेड ग्रीमाल्डी आदि।

5 मिलियन-3 मिलियन ई० पू०	ऑस्ट्रेलोपिथेकस-अफ्रीकनस
4 मिलियन-1 मिलियन ई० पू०	नियन्डरथल
1.3 मिलियन ई० पू०	होमो इरेक्टस
40000 ई० पू०	क्रौमैग्नौन
2000 ई० पू०	आधुनिक मानव

ईसापूर्व (BC) एवं ई० (AD)

ईसाई धर्म के प्रभू ईसा मसीह के जन्म वर्ष पर वर्तमान में प्रचलित ग्रेगोरियन कैलेण्डर/जूलियन

कैलेण्डर/ईसाई कैलेण्डर आधारित है। ईसा मसीह के जन्म के पहले के समय को ईसापूर्व (Before the birth of Jesus Christ-B.C.) कहा जाता है। ईसा पूर्व में वर्षों की गिनती विपरीत दिशा में की जाती है; जैसे महावीर स्वामी का जन्म 540 ई० पू० में एवं मृत्यु 468 ई० पू० में हुआ। तात्पर्य यह है कि ईसा मसीह के जन्म के 540 वर्ष पूर्व महावीर स्वामी का जन्म हुआ एवं 468 वर्ष पूर्व मृत्यु हुई। ईसा मसीह के जन्म वर्ष से प्रारम्भ हुआ सन्, ईसवी सन् कहलाता है। इसे संक्षेप में ई० लिखते हैं। ई० को लैटिन भाषा में A. D. (Anno Domini—जिसका अर्थ है—In the year of lord, Jesus Christ) लिखा जाता है। ई० में वर्षों की गिनती सीधी दिशा में की जाती है; जैसे गुरु नानक जी का जन्म 1469 ई० में एवं मृत्यु 1539 ई० में हुई। तात्पर्य यह है कि ईसा मसीह के जन्म के 1469 वर्ष बाद गुरु नानक जी का जन्म हुआ एवं 1539 वर्ष बाद मृत्यु हुई।

2. प्रागैतिहासिक काल

- मानव जाति के विकास के जिस काल का कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता है, उस काल को प्रागैतिहासिक काल या प्राक् इतिहास काल कहते हैं।
- मानव की प्रगति की कहानी के उस भाग को इतिहास कहते हैं, जिसके लिए लिखित विवरण मिलते हैं।
- मानव की प्रगति के उस भाग को आद्य ऐतिहासिक काल कहते हैं, जिसके लेखन कला के प्रचलन के बाद भी उपलब्ध लेख पढ़े नहीं जा सके हों।
- मानव का प्राचीनतम् इतिहास पाषाण युग से सम्बन्धित है।
- पूर्व पाषाण युग के मानव पेड़ों के नीचे और पहाड़ों की गुफाओं में रहते थे।
- पूर्व पाषाण युग के मानव की जीविका का मुख्य आधार शिकार या अपने आप उगने वाले कन्द, मूल तथा फल था।
- पूर्व पाषाण युग के हथियार पत्थर, हड्डी एवं लकड़ी के बने होते थे।
- मध्य पाषाण युग के मानव की जीविका का मुख्य आधार शिकार तथा पशुपालन था।
- नव पाषाण युग में मानव ने कुत्ते को पालतू बनाया था।
- कृषि के आविष्कार को मानव ने नव पाषाण युग में पूरी तरह अपना लिया था।
- नव पाषाण युग में मानव ने मिट्टी के घरों तथा लकड़ी के खम्भों और घास-फूस के छप्पर से बने मकानों में रहना आरम्भ कर दिया था।
- नव पाषाण युग में एक महत्वपूर्ण औजार पत्थर की चिकनी कुल्हाड़ी थी।
- नव पाषाण युग में दूसरा महत्वपूर्ण औजार हंसिया था।
- अग्नि का आविष्कार पुरा पाषाण काल में हुआ था।
- पहियों का आविष्कार नव पाषाण काल में हुआ था।
- नव पाषाण युग में मानव अपने मृतकों का अंतिम संस्कार शवों को दफनाकर करते थे।
- नव पाषाण युग में कब्रगाहों में बड़े-बड़े पत्थर लगा दिये जाते थे। उन पत्थरों को महापाषाण कहते हैं।
- नव पाषाण युग में मृत व्यक्तियों को हथियार, मिट्टी के बर्तन तथा खाने-पीने की चीजों के साथ कब्रों में दफनाया जाता था।
- मिट्टी के बर्तन का प्रयोग सर्वप्रथम नव पाषाण युग में किया गया था।
- मानव ने नव पाषाण युग में वस्त्र बुनने की कला सीखी थी।
- मानव नव पाषाण युग में रस्सियों को बनाना जान गया था।
- मानव ने ताँबा धातु को सर्वप्रथम ढूँढ़ निकाला और औजार बनाने में उसका इस्तेमाल किया।
- नव पाषाणकालीन बस्तियों में मिट्टी से बनी स्त्रियों की छोटी-छोटी मूर्तियाँ मिली हैं, उन्हें मातृदेवी कहा जाता है।

भारत का नामकरण

- प्राचीन काल में भारत के विशाल उपमहाद्वीप को भारतवर्ष अर्थात् भरतों की भूमि के नाम से जाना जाता था। विष्णुपुराण में उल्लिखित है—

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमोद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षम् तद् भारतम् नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

अर्थात् "समुद्र के उत्तर में तथा हिमालय के दक्षिण में जो स्थित है, वह भारत देश है तथा

वहाँ की सन्तति भारती है।'' इस देश का भारत नामकरण ऋग्वैदिक काल के प्रमुख जन 'भरत' के नाम पर किया गया है। भारत देश जम्बूद्वीप का दक्षिणी भाग था। सिन्धु द्वारा सिंचित प्रदेश को 'इण्डिया' नाम सबसे पहले हखामनी ईरानियों द्वारा दिया गया। पारसियों के पवित्र ग्रन्थ 'जिन्द अवेस्ता' में सरस्वती की सात नदियों के क्षेत्र का उल्लेख करते हुए 'सप्त सैन्धव' शब्द का प्रयोग किया गया है। यूनानियों ने सिन्धु नदी को 'इन्डोस' के नाम से पुकारा।

- ईरानियों या पारसियों की पुस्तक 'मेहरेयास्त' और 'यास्ना' में सप्त सिन्धु के स्थान पर 'हप्त हिन्दू' का उल्लेख मिलता है। इससे यह पता चलता है कि ईरानी 'स' के स्थान पर 'ह' का प्रयोग करते थे। इन्हीं पुस्तकों में आगे चलकर 'हिन्दु' के स्थान पर 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग मिलता है।
- ईसा की प्रथम शताब्दी में चीन में बौद्ध धर्म का प्रवेश होने पर चीनियों ने भारत के लिए 'तिएन-चू' अथवा 'चुआंतू' शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन ह्वेनसांग के बाद वहाँ पर भारत के लिए 'यिन-तू' शब्द का चलन हो गया।
- फारसी में हिन्दू, यूनानी में इण्डोस, हिब्रू में होड्डू, में लैटिन में इण्डस और चीनी में तिएन-चू-ये सभी शब्द सिन्धु शब्द के रूप में हैं। इस प्रकार भरत के वंशज 'भारतीय' अथवा 'हिन्दुओं' के नाम से जाने जाने लगे। इत्सिंग ने लिखा है कि ''हिन्दू नाम का प्रयोग केवल उत्तरी जनजातियों द्वारा किया जाता है और स्वयं भारत के लोग इसे नहीं जानते।'' इत्सिंग ने भारत के लिए 'आर्य देश' तथा 'ब्रह्मराष्ट्र' शब्दों का प्रयोग किया है। पतंजलि के समय में (150 ई० पू०) 'आर्यावर्त' शब्द का उल्लेख मिलता है। मध्यकालीन लेखकों ने भारत देश को हिन्द तथा 'हिन्दुस्तान' नाम से सम्बोधित किया।
- 15 अगस्त, 1947 को जब देश आजाद हुआ, तो इसके दो टुकड़े हो गये। एक का नाम हिन्दुस्तान (भारत) तथा दूसरे का नाम पाकिस्तान हो गया।
- 26 नवम्बर, 1949 को जब भारतीय संविधान को संविधान सभा द्वारा पारित किया गया तब इस देश को नाम भारत (India) दिया गया।

3. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

- इतिहास अतीत को जानने का एक साधन है। किसी समाज या राष्ट्र के इतिहास के अध्ययन द्वारा हम उस समाज या राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता को जान सकते हैं। प्रत्येक राष्ट्र की अस्मिता की पहचान उसकी संस्कृति एवं सभ्यता से की जाती है। संस्कृति के अन्तर्गत मानव के समस्त क्रिया-कलाप आते हैं तथा सभ्यता के अन्तर्गत मानव के भौतिक पहलू आते हैं।
- इतिहास का अध्ययन व्यक्तियों, समाज और राष्ट्रों को समझने में सहायता करता है और अन्ततः सम्पूर्ण मानवता को पहचानने में सहायता करता है। इतिहास का अध्ययन व्यक्तियों को उनकी संस्कृति, धर्म और समाज व्यवस्था को जानने-समझने तथा उनका आदर करने में सहायता करता है। इतिहास का अध्ययन व्यक्तियों को अपने अतीत से वर्तमान और भविष्य के लिए सबक लेना सिखाता है।
- इतिहास व्यक्तियों को उन गलतियों को दोहराने से रोकता है, जिनके कारण मानव को अतीत में मानव निर्मित विपत्तियों को झेलना पड़ा। इतिहास यह भी बताता है कि उन बुराइयों को व्यक्ति कैसे नजरअंदाज करें, जिन्होंने समाज में समस्याएँ खड़ी कर दी थी तथा उन बातों को कैसे अनुसरण करें, जिससे समरसता, शान्ति और समृद्धि को बढ़ावा मिलता है। अतीत के अध्ययन का यह अर्थ नहीं है कि अध्ययनकर्ता अतीत में जीता है, बल्कि वह अतीत के साथ जीना सीख लेता है। इतिहास व्यक्तियों को उनकी पहचान देता है।
- भारतीय इतिहास के विषय में मुख्यतः चार स्रोतों से जानकारी मिलती है, जो इस प्रकार हैं—(i) धर्मग्रन्थ, (ii) ऐतिहासिक एवं समसामयिक ग्रन्थ, (iii) विदेशियों के विवरण और (iv) पुरातत्व सम्बन्धी साक्ष्य।
- वैदिक धर्म ग्रन्थ को ब्राह्मण धर्मग्रन्थ भी कहा जाता है।
- वेद शब्द संस्कृत के 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है—जानना।
- वेद के संकलनकर्त्ता कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास है।
- वेदों से हमें आर्यों के विषय में प्रारम्भिक जानकारी मिलती है।

- वेदों की कुल संख्या चार हैं—(i) ऋग्वेद, (ii) सामवेद, (iii) युजर्वेद और (iv) अथर्ववेद।
- चारों वेदों में सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद है। तथा सबसे बाद का वेद अथर्ववेद है।
- ऋग्वेद का अर्थ है, ऐसा ज्ञान जो ऋचाओं में बद्ध हो।
- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 8 अष्टक तथा 1028 सूक्त हैं।
- ऋग्वेद के दूसरे एवं सातवें मण्डल की ऋचायें सर्वाधिक प्राचीन हैं।
- ऋग्वेद के पहले एवं दसवें मण्डल को अन्त में जोड़ा गया है।
- दसवें मण्डल में सर्वप्रथम शूद्रों का उल्लेख मिलता है, जिसे 'पुरुषसूक्त' के नाम से जाना जाता है।
- नवें मण्डल में सोम का उल्लेख है।
- गायत्री मन्त्र का उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है।
- ऋग्वेद के तीसरे मंडल में सूर्य देवता 'सवितृ' को समर्पित गायत्री मंत्र है।
- ऋग्वेद का रचनाकाल 1500 ई० पू० से 1000 ई० पू० स्वीकार किया गया है।
- ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं—(i) ऐतरेय तथा (ii) कौषीतकी।
- ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ हैं—(i) शाकल, (ii) वाष्कल, (iii) आश्वलायन, (iv) शंखायन और (v) मांडूक्य।
- ऋग्वेद में यदु, द्रहू, तुर्वस, पुरु और अनु पाँच जनों का वर्णन मिलता है।
- साम का अर्थ संगीत या गान होता है।
- सामवेद के दो प्रमुख भाग हैं— (i) आर्चिक और (ii) गान।
- सामवेद का प्रथम द्रष्टा वेद व्यास के शिष्य जैमिनी को माना जाता है।
- सामवेद में कुल 1549 ऋचायें हैं, जिनमें 75 के अतिरिक्त शेष ऋग्वेद से ली गयी हैं।
- सामवेद की महत्त्वपूर्ण तीन शाखाएँ हैं— (i) कीथुय, (ii) जैमिनीय और (iii) राणायनीय।
- सामवेद को भारतीय संगीत का जनक माना जाता है।
- यजुष का अर्थ यज्ञ होता है।
- यजुर्वेद गद्य तथा पद्य दोनों में लिखा गया है।
- यजुर्वेद के दो भाग हैं—(i) कृष्ण यजुर्वेद और (ii) शुक्ल यजुर्वेद।
- कृष्ण यजुर्वेद की मुख्य चार शाखाएँ हैं— (i) तैत्तिरीय, (ii) काठक, (iii) कपिष्ठल तथा (iv) मैत्रायणी।
- शुक्ल यजुर्वेद की मुख्य दो शाखाएँ हैं— (i) माध्यन्दिन तथा (ii) काण्व।
- शुक्ल यजुर्वेद की संहिताओं को बाजसनेय भी कहा जाता है, क्योंकि वाजसेनी के पुत्र याज्ञवल्क्य इसके दृष्टा थे।
- महर्षि पतंजलि द्वारा उल्लिखित यजुर्वेद की 101 शाखाओं में से वर्तमान में पाँच ही उपलब्ध हैं, जो इस प्रकार हैं—(i) तैत्तिरीय, (ii) काठक, (iii) कपिष्ठल, (iv) मैत्रायणी और (v) बाजसनेय।
- यजुर्वेद से उत्तरवैदिक युग की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक जीवन की जानकारी मिलती है।
- अथर्ववेद की रचना अथर्वा ऋषि द्वारा की गई थी।
- अथर्ववेद के प्रथम द्रष्टा अथर्वा ऋषि तथा दूसरे द्रष्टा आंगिरस ऋषि थे।
- अथर्ववेद में कुल 20 मण्डल, 731 सूक्त एवं 5839 मन्त्र हैं।
- अथर्ववेद की दो शाखाएँ हैं—(i) पिप्पलाद और (ii) शौनक।
- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद—इन चारों वेदों को संहिता कहा जाता है।
- प्रत्येक वेद के एक-एक उपवेद हैं, जैसे— ऋग्वेद के आयुर्वेद, सामवेद के गंधर्ववेद, यजुर्वेद के धनुर्वेद तथा अथर्ववेद के शिल्पवेद हैं।
- प्रत्येक वेद के अपने-अपने ब्राह्मण होते हैं; जैसे—ऋग्वेद के ऐतरेय एवं कौषीतिकी ब्राह्मण, यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण या बाजसनेय ब्राह्मण, सामवेद के पंचविश या ताण्डय ब्राह्मण एवं अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण।
- अथर्ववेद में परीक्षित को कुरुओं का राजा कहा गया है।
- अथर्ववेद में कुरु देश की समृद्धि का चित्रण मिलता है।
- ब्राह्मण ग्रंथों से हमें परीक्षित के बाद और बिम्बिसार के पूर्व की घटनाओं का वर्णन मिलता है।

- शतपथ ब्राह्मण में गांधार, शल्य, कैकेय, कुरु पांचाल, कौशल, विदेह आदि राजाओं के नाम का उल्लेख है।
- आरण्यक ग्रंथ को अरण्य अर्थात् वन में पढ़ा जाता था।
- आरण्यक ग्रंथों की संख्या सात हैं—
  (i) ऐतरेय आरण्यक, (ii) शांखायन आरण्यक, (iii) तैत्तिरीय आरण्यक, (iv) मैत्रायणी आरण्यक, (v) माध्यन्दिन वृहदारण्यक, (vi) तल्बकार आरण्यक तथा (vii) जैमिनी आरण्यक।
- उपनिषद् का अर्थ होता है—समीप बैठना।
- उपनिषद् को वेदान्त भी कहा जाता है।
- उपनिषद् की कुल संख्या 108 है, जिसमें प्रमुख हैं—ईश, केन, कठ, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, श्वेताश्वर, वृहदारण्यक, कौषीतिकी, मुण्डक, प्रश्न आदि।
- भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।
- वेदांगों की कुल संख्या छः है, जो इस प्रकार हैं—(i) शिक्षा, (ii) कल्प, (iii) व्याकरण, (iv) निरुक्त, (v) छन्द और (vi) ज्योतिष।
- स्मृतियों को धर्मशास्त्र भी कहा जाता है।
- नारद स्मृति से गुप्त वंश के बारे में जानकारी मिलती है।
- भारत के दो सर्वाधिक प्राचीन महाकाव्य रामायण और महाभारत हैं।
- रामायण की रचना महर्षि बाल्मिकी द्वारा पहली एवं दूसरी शताब्दी के दौरान संस्कृत भाषा में की गयी।
- बाल्मिकी द्वारा रचित रामायण सात काण्डों में बँटा हुआ है, जो इस प्रकार हैं—(i) बालकाण्ड, (ii) अयोध्याकाण्ड, (iii) अरण्यकाण्ड, (iv) सुन्दरकाण्ड, (v) किष्किन्धाकाण्ड, (vi) युद्धकाण्ड और (vii) उत्तरकाण्ड।
- भुशुण्डि द्वारा रचित रामायण को आदिरामायण कहा जाता है।
- रामायण तथा महाभारत से उस समय की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
- महाभारत को जयसंहिता, भारत और शतसाहस्त्री संहिता भी कहा जाता है।
- महाभारत महाकाव्य 18 पर्वों में विभाजित है, जो इस प्रकार हैं—(i) आदि, (ii) सभा, (iii) वन, (iv) विराट, (v) द्योग, (vi) भीष्म, (vii) द्रोण, (viii) कर्ण, (ix) शल्य, (x) सौप्तिक, (xi) स्त्री, (xii) शान्ति, (xiii) अनुशासन, (xiv) अश्वमेघ, (xv) आश्रमवासी, (xvi) मौसल, (xvii) महाप्रास्थानिक एवं (xviii) स्वर्गारोहण।
- प्राचीन आख्यानों से युक्त ग्रंथ को पुराण कहते हैं।
- पुराणों की कुल संख्या अठारह है, जो इस प्रकार हैं—(i) ब्रह्म पुराण, (ii) पद्म पुराण, (iii) विष्णु पुराण, (iv) वायु पुराण, (v) भागवत् पुराण, (vi) नारदीय पुराण, (vii) मार्कण्डेय पुराण, (viii) अग्नि पुराण, (ix) भविष्य पुराण, (x) ब्रह्मवैवर्त पुराण, (xi) लिंग पुराण, (xii) वराह पुराण, (xiii) स्कन्द पुराण, (xiv) वामन पुराण, (xv) कूर्म पुराण, (xvi) मत्स्य पुराण, (xvii) गरुड़ पुराण एवं (xviii) ब्राह्मण्ड पुराण।
- पुराणों से शिशुनाग वंश, नन्द वंश, मौर्य वंश, सातवाहन वंश एवं गुप्तवंश के विषय में जानकारी मिलती है।
- बौद्ध साहित्य को 'त्रिपिटक' कहा जाता है।
- त्रिपिटक तीन हैं—(i) सुत्तपिटक, (ii) विनयपिटक और (iii) अभिधम्म पिटक।
- सुत्तपटिक पाँच निकायों में बँटा हुआ है, जो इस प्रकार हैं—(i) दीघ निकाय, (ii) मज्झिम निकाय, (iii) संयुक्त निकाय, (iv) अंगुत्तर निकाय और (v) खुद्दक निकाय।
- अभिधम्म पिटक का संकलन मोग्गलिपुत्त तिस्स ने किया था।
- अभिधम्म पिटक के अन्य सात ग्रंथ हैं, जो इस प्रकार हैं—(i) धम्मसंगणि, (ii) विभंग, (iii) धातुकथा, (iv) पुग्गलपंचत्ति, (v) कथावस्तु, (vi) यमक और (vii) पत्थान।
- मिलिन्दपन्हों ग्रंथ में यूनानी राजा मीनेण्डर अर्थात् मिलिन्द एवं बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच वार्तालाप का वर्णन है।
- बौद्ध साहित्य से सिंहल द्वीप तथा मगध के बारे में जानकारी मिलती है।
- जैन साहित्य को 'आगम' कहा जाता है।

- जैन साहित्य के 12 अंग हैं, जो इस प्रकार हैं— (i) आचरंग सूत्त, (ii) सूय कडंग, (iii) धाणंग, (iv) समवायंग, (v) भगवती सूत्र, (vi) न्याय धम्मकसाओ, (vii) उवासगदसाओ, (viii) अंतगडदसाओ, (ix) अणुत्तरोववाइदयदसाओ, (x) पण्हावागरणिआई, (xi) विवागसुयं तथा (xii) दिट्ठिवाय।
- जैन साहित्य में 12 उपांग ग्रंथ हैं, जो इस प्रकार हैं—(i) औपपातिक, (ii) रायप्रश्नीय, (iii) जीवाभिगम, (iv) प्रसापणा, (v) सूर्य प्रवरित, (vi) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, (vii) चन्द प्रज्ञप्ति, viii) निर्यावलिका, (ix) कल्पावंतसिका, (x) पुष्पिका, (xi) पुष्पचूलिका तथा (xii) वृष्णिदशा।
- जैन साहित्य में 10 प्रकीर्ण हैं, जो इस प्रकार हैं— (i) चतुःशरण, (ii) आतुर प्रत्याख्यान, (iii) भक्ति परीक्षा, (iv) संस्तार, (v) तंदुल वैतालिक, (vi) चंद्रवैहयक, (vii) गणिविद्या, (viii) देवेन्द्रस्तव, (ix) वीरस्तव और (x) महाप्रत्याख्यान।
- जैन साहित्य में 6 छंदसूत्त हैं, जो इस प्रकार हैं— (i) निशीथ, (ii) महानिशीथ, (iii) व्यवहार, (iv) आचार दशा, (v) कल्प, (vi) पंचकल्प।
- जैन साहित्य से अनेक ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी मिलती है।
- आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) द्वारा लिखित 'अर्थशास्त्र' से मौर्यकालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
- विशाखदत्त द्वारा लिखित 'मुद्राराक्षस' से नंद वंश के पतन एवं मौर्य वंश की स्थापना के बारे में जानकारी मिलती है।
- कालिदास द्वारा लिखित 'मालविकाग्निमित्रम्' से पुष्यमित्र शुंभ एवं उनके पुत्र अग्निमित्र के समय की राजनीतिक घटनाओं की जानकारी मिलती है।
- बाणभट्ट द्वारा लिखित 'हर्षचरित' से हर्षवर्द्धन के जीवन तथा उनके समय में भारत के इतिहास की जानकारी मिलती है।
- शूद्रक द्वारा लिखित 'मृच्छकटिकम्' से गुप्तकालीन सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है।
- कल्हण द्वारा लिखित 'राजतरंगिणी' से आदिकाल से लेकर 1151 ई० के आरम्भ तक के कश्मीर के प्रत्येक शासक के काल की घटनाओं की जानकारी मिलती है।
- सोमेश्वर द्वारा लिखित 'कीर्तिकौमुदी' से चालुक्यवंशीय इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।
- महाकवि दण्डी द्वारा लिखित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' से पल्लवों के बारे में जानकारी मिलती है।
- यूनानी लेखक हेरोडोटस द्वारा लिखित 'हिस्टोरिका' से भारत और फारस के सम्बन्धों की जानकारी मिलती है।
- हेरोडोटस को 'इतिहास का पिता' कहा जाता है।
- मेगस्थनीज द्वारा लिखित 'इण्डिका' से मौर्यवंशीय समाज एवं संस्कृति की जानकारी मिलती है।
- प्लिनी द्वारा लिखित 'नेचुरल हिस्टोरिका' से भारतीय पशु, पेड़-पौधों एवं खनिज पदार्थों की जानकारी मिलती है।
- चीनी यात्री फाह्यान चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय (375-415 ई०) के समय में भारत आया था। उसने तत्कालीन भारत की सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक स्थिति के बारे में लिखा।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग कन्नौज के राजा हर्षवर्धन (606-47 ई०) के शासनकाल में भारत आया था। ह्वेनसांग द्वारा लिखित 'सी-यू-की' से हर्षकालीन सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग को 'प्रिंस ऑफ पिलग्रिम्स' कहा जाता है।
- चीनी यात्री इत्सिंग 613-715 ई० में भारत आया था। इत्सिंग ने नालन्दा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा तत्कालीन भारत के बारे में लिखा है।
- अरबी लेखक अलबरूनी, जिसे अबूरिहान नाम से भी जाना जाता था, को महमूद गजनवी अपने साथ भारत लाया था। अलबरूनी द्वारा लिखित 'तहकीक-ए-हिन्द' से राजपूतकालीन समाज, धर्म, रीति-रिवाज आदि के बारे में जानकारी मिलती है।
- अरबी यात्री सुलेमान ने प्रतिहार एवं पाल शासकों के तत्कालीन आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक दशा का वर्णन किया है।

- यूरोपीय यात्री (वेनिस, इटली) मार्कोपोलो से दक्षिण के पाण्ड्य राज्य के बारे में जानकारी मिलती है।
- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के 'बोगजकोई' नामक स्थान से करीब 1400 ई० पू० के पाये गये।
- बोगजकोई अभिलेख से वैदिक देवताओं इन्द्र, मित्र, वरुण, नासत्य आदि का उल्लेख मिलता है।
- हैदराबाद के मास्की नामक स्थान से प्राप्त अभिलेख में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।
- अशोक के अभिलेख मुख्यत: ब्राह्मी, खरोष्ठी और आरमेइक लिपियों में खुदे हुए हैं।
- अशोक के ज्यादातर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में खुदे हुए हैं, जो बाएँ से दाएँ लिखे गए हैं।
- पश्चिमोत्तर भारत से प्राप्त अशोक के अभिलेख खरोष्ठी लिपि में खुदे हुए हैं, जो दाएँ से बाएँ लिखे गए हैं।
- अशोक के अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं।
- अशोक के अभिलेखों को सबसे पहले जेम्स प्रिंसेप ने 1837 ई० में पढ़ा।
- यवन राजदूत हेलियोडोरस के बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरुड़-स्तम्भ लेख से द्वितीय शताब्दी ई० पू० में मध्य भारत में भागवत धर्म के विकसित होने का साक्ष्य प्राप्त होता है।
- मध्य प्रदेश के एरपा से प्राप्त वराह प्रतिमा पर हूण राजा तोरमाण का लेख अंकित है।
- धनदेव के अयोध्या अभिलेख से शुंग शासक पुष्यमित्र द्वारा किए गए अश्वमेघ यज्ञ के बारे में जानकारी मिलती है।
- पर्सिपोलिस के वेहिस्तून अभिलेख से दारा प्रथम द्वारा सिन्धु नदी घाटी को जीते जाने का प्रमाण मिलता है।
- अभिलेखों से तत्सम्बन्धित शासकों को जानने में सहायता मिलती है; जैसे—खारवेल-हाथी, गुम्फा अभिलेख; शकक्षत्रप रूद्रदामन-जूनागढ़ अभिलेख; सातवाहन नरेश पुलुमावी-नासिक गुहालेख; समुद्रगुप्त-प्रयाग स्तम्भलेख; मालव नरेश यशोवर्मन-मंदसौर अभिलेख; चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय-ऐहोल अभिलेख; प्रतिहार नरेश भोज-ग्वालियर अभिलेख तथा बंगाल शासक विजय सेन-देवपाड़ा अभिलेख।
- आहत सिक्के (Punch marked) भारत के सबसे प्राचीन सिक्के हैं।
- आहत सिक्के, जो लेख विहीन तथा अनेक प्रकार के चिह्नों से युक्त हैं, राजा तथा व्यापारी द्वारा चलाए गए थे।
- हिन्द यवन शासकों ने सबसे पहले स्वर्ण मुद्राएँ चलाई।
- कुषाण शासकों द्वारा जारी किए गए स्वर्ण सिक्के सर्वाधिक शुद्ध थे।
- गुप्त शासकों ने सबसे अधिक स्वर्ण सिक्के जारी किए।
- समुद्रगुप्त के कुछ सिक्कों पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया है, जिससे उसका संगीत प्रेमी होना झलकता है।
- समुद्रगुप्त के कुछ सिक्कों पर अश्वमेघ यज्ञ दिखाया गया है, जिससे अश्वमेघ यज्ञ के बारे में जानकारी मिलती है।
- कनिष्क द्वारा जारी किए गए सिक्कों से यह पता चलता है कि वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- सातवाहन नरेश शातकर्णि की एक मुद्रा पर जलपोत का चित्र अंकित है, जिससे यह पता लगता है कि उसने समुद्र विजय की थी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय की व्याघ्रशैली की मुद्राओं से उसकी पश्चिमी भारत के शकों के ऊपर विजय को दर्शाता है।
- उत्तर भारत के मन्दिर नागर शैली में, दक्षिण भारत के मन्दिर द्रविड़ शैली में तथा दक्षिणापथ के मन्दिर बेसर शैली (जिसमें नागर तथा द्रविड़ दोनों शैलियों का समावेश हो) में बने थे।
- पाटलिपुत्र की खुदाई से चन्द्रगुप्त मौर्य के समय लकड़ी के बने राजप्रसाद का ध्वंसावशेष प्राप्त हुआ है।
- कौशाम्बी की खुदाई से महाराज उदयन का राजप्रसाद प्राप्त हुआ है।

4. सिन्धु घाटी सभ्यता

- भारतीय उपमहाद्वीप में प्रथम सभ्यता उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में विकसित हुई थी।
- भारत की प्रथम सभ्यता सिन्धु (हड़प्पा संस्कृति) है।
- सिन्धु सभ्यता के निर्माता द्रविड़ थे।

- सिन्धु सभ्यता की खोज ब्रिटिश अधिकारी सर जॉन मार्शल के संरक्षण में राय बहादुर दयाराम साहनी व राखल दास बैनर्जी द्वारा 1920-21 ई० में हुई थी।
- जॉन मार्शल के निर्देशन में 1921 ई० में राय बहादुर दयाराम साहनी ने हड़प्पा स्थल का उत्खनन कार्य प्रारम्भ करवाया।
- मोहनजोदड़ो के टीलों को 1922 ई० में खोजने का श्रेय राखल दास बैनर्जी को है।
- सिन्धु सभ्यता को वर्तमान में हड़प्पा सभ्यता कहा जाता है।
- हड़प्पा सभ्यता को ऋग्वेद में हरियूपिया कहा जाता है।
- सिन्धु सभ्यता का सर्वाधिक उपयुक्त नाम हड़प्पा सभ्यता है।
- हड़प्पा सभ्यता प्रस्तरयुगीन काल से सम्बन्धित मानी जाती है।
- 'सिन्धु का बाग' हड़प्पा सभ्यता के मोहनजोदड़ो के पुरास्थल को कहा गया है।
- 'मृतकों का टीला' हड़प्पा सभ्यता के मोहनजोदड़ों के पुरास्थल को कहा गया है।
- सैन्धव काल की लिपि को चित्राक्षर लिपि कहा जाता है।
- हड़प्पा सभ्यता के सम्पूर्ण क्षेत्र का आकार त्रिभुजाकार था।
- हड़प्पा सभ्यता की मुद्राएँ मिट्टी से निर्मित की जाती थीं।
- हड़प्पा सभ्यता की मुद्राएँ आयताकार थीं।
- अधिकतर हड़प्पाई मुहर पर साँड़ का चित्र अंकित है।
- हड़प्पावासी 16 के गुणक का प्रयोग करते थे।
- सिन्धु सभ्यता का काल डॉ०बी०ए०स्मिथ के अनुसार 2500 ई० पू० से 1500 ई० पू० तक था, परन्तु रेडियोकार्बन C^{14} के अनुसार 2300 ई० पू० से 1700 ई० पू० तक था।
(द गजेटियर ऑफ इण्डिया के अनुसार, 2400 ई०पू० से 1700 ई०पू०)

सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थल

क्र०	स्थल	नदी	खोजकर्त्ता/उत्खननकर्त्ता	वर्ष	स्थिति
1.	हड़प्पा	रावी	ए० कनिंघम, दयाराम साहनी, माधोस्वरूप वत्स	1856 1921 1926-27	पाकिस्तान का माण्टगोमरी जिला (शाहीवाल जनपद)
2.	मोहनजोदड़ो	सिन्धु	राखल दास बैनर्जी	1922	पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त का लरकाना जिला
3.	सुत्कागेनडोर	दाश्क	ऑरेल स्टाइन, जॉर्ज डेल्स	1927 1962	पाकिस्तान का बलूचिस्तान (मकरान)
4.	चन्हूदड़ो	सिन्धु	गोपाल मजूमदार	1931	पाकिस्तान का सिन्ध प्रान्त
5.	कोटदीजी	सिन्धु	घुरये (खोजकर्त्ता), फजल अहमद	1935 1955	पाकिस्तान का सिन्ध प्रान्त (खैरपुर)
6.	रोपड़	सतलज	यज्ञदत्त शर्मा	1953-55	पंजाब का रोपड़ जिला (रूपनगर)
7.	रंगपुर	मादर	माधोस्वरूप वत्स एवं रंगनाथ राव	1953-56	गुजरात का काठियावाड़ जिला (सुरेन्द्रनगर)
8.	लोथल	भोगवा	रंगनाथ राव	1954-62	गुजरात का अहमदाबाद जिला
9.	आलमगीरपुर	हिण्डन	यज्ञदत्त शर्मा	1958	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला
10.	बनावली	सरस्वती	रवीन्द्र सिंह विष्ट	1974	हरियाणा का हिसार जिला (फतेहाबाद)
11.	कालीबंगा	घग्घर	अमलानंद घोष, ब्रजवासी लाल, बी०के० थापड़	1961	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला
12.	धौलावीरा	-	जे०पी० जोशी रवीन्द्र सिंह विष्ट	1967-68 1990-91	गुजरात का कच्छ जिला

- सिन्धु सभ्यता को सिन्धु घाटी सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता, नागरीय सभ्यता, कांस्ययुगीन सभ्यता कहा जाता है।
- सिन्धु सभ्यता के अधिकांश नगर नदियों के किनारे स्थित थे।
- सिन्धु सभ्यता, सिन्धु तथा उसकी सहायक नदियों के किनारे विकसित हुई थी।
- सिन्धु सभ्यता में कालीबंगा से नक्काशीदार ईंटों के प्रयुक्त होने के प्रमाण मिले हैं।
- सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत मोहनजोदड़ो का अन्नागार थी।
- सिन्धु सभ्यता में प्रयुक्त ईंटों की लम्बाई, चौड़ाई तथा ऊँचाई का अनुपात क्रमश: 4 : 2 : 1 था।
- मेलुहा सिन्धु क्षेत्र का प्राचीन नाम था।
- सबसे पहले सिन्धु सभ्यता के दो प्रमुख स्थल हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो में मिले थे।
- हड़प्पा पाकिस्तान (साहिवाल) में स्थित था।
- स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हड़प्पा सभ्यता के सर्वाधिक स्थल गुजरात (भारत) में खोजे गये।
- सर्वप्रथम हड़प्पा सभ्यता से स्वास्तिक चिह्न (卐) के अवशेष मिले हैं।
- हड़प्पावासी फिनीशिया के मूल निवासी थे।
- सर्वप्रथम कपास उपजाने का श्रेय हड़प्पावासियों को है।
- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ 'मृतकों का टीला' होता है।
- सिन्धु सभ्यता में कुम्भकारों के भट्ठों के अवशेष मोहनजोदड़ो से मिले हैं।
- मोहनजोदड़ो में विशाल स्नानागार स्थित है।
- मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार की खोज जॉन मार्शल ने की थी।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त विशाल स्नानागार के लिए जल की आपूर्ति कुँओं से होती थी।
- मोहनजोदड़ो के स्नानागार के पूर्व में स्थित स्तूप का निर्माण कुषाण काल में किया गया था।
- अण्डाकार शव के अवशेष सुरकोतडा से मिले हैं।
- एक कब्र में दो शव आपस में लिपटे हुए लोथल से मिले हैं।
- पुजारी का सिर मोहनजोदड़ो से मिले हैं।
- सिन्धु सभ्यता का प्रधान बन्दरगाह लोथल था।
- सिन्धु सभ्यता का विस्तार क्षेत्र जम्मू, पंजाब, गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बलूचिस्तान (पाकिस्तान) तथा सिन्ध (पाकिस्तान) था।
- सिन्धु सभ्यता में प्राप्त परिपक्व अवस्था वाले स्थलों में केवल सात (हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल, कालीबंगा, हिसार एवं बनवाली) को ही नगर की संज्ञा दी जाती है।
- सिन्धु सभ्यता में समाज चार (विद्वान, योद्धा, व्यावसायी तथा श्रमजीवी) वर्गों में विभाजित था।
- सिन्धु सभ्यता के मानव शाकाहारी तथा माँसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे।
- सिन्धु सभ्यता के मानव सूती तथा ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्र पहनते थे।
- सिन्धु सभ्यता के मानव आवागमन हेतु दो पहियों एवं चार पहियों वाली बैलगाड़ियों तथा इक्के गाड़ियों का प्रयोग करते थे।
- सिन्धु सभ्यता के मानव शतरंज, संगीत, नृत्य तथा जुआ आदि से मनोरंजन करते थे।
- सिन्धु सभ्यता के मानव मातृदेवी और शिवलिंग की उपासना करते थे।
- सैन्धव समाज मातृसत्तात्मक था।
- सिन्धुवासी साँड को पवित्र मानते थे।
- सिन्धुवासी बैल को शक्ति का प्रतीक मानते थे।
- सिन्धुवासियों का प्रिय पशु साँड़ था।
- सुरकोतडा के लोगों को घोड़े का ज्ञान था।
- मोहनजोदड़ो से घोड़े के दाँत के अवशेष मिले थे।
- मोहनजोदड़ो से सीप का तथा लोथल से हाथी दाँत से निर्मित एक-एक पैमाना (Scale) मिला है।
- लोथल से घोड़े की लघु मृण्मूर्तियों के अवशेष मिले हैं।
- सुरकोतडा से घोड़े की अस्थियों के अवशेष मिले हैं।

सप्तसिन्धु

1. सिन्धु (सिन्ध), 2. वितस्ता (झेलम), 3. असिक्नी (चिनाव), 4. परुष्णी (रावी), 5. विपाशा (व्यास), 6. शतुद्रि (सतलज), 7. सुरसुती (सरस्वती)

- कालीबंगा से जुते हुए खेत का प्रथम साक्ष्य मिला है।
- मेहरगढ़ से भारत में कृषि का प्राचीनतम् साक्ष्य मिला है।
- हड़प्पीय नगरों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षण योजनाबद्ध विन्यास है।
- सिन्धुवासी ताँबा धातु का प्रयोग ज्यादा करते थे।
- सिन्धुवासी को लोहा धातु का ज्ञान नहीं था।
- सिन्धु घाटी के लोगों द्वारा प्रयुक्त भाषा आज तक पूर्णरूपेण पढ़ी नहीं जा सकी है।
- मोहनजोदड़ो की मुख्य सड़क की लम्बाई 400 मीटर तथा चौड़ाई 10 मीटर थी।
- सिन्धुवासियों का प्रमुख पेशा कृषि तथा पशुपालन था।
- अब तक सिन्धु सभ्यता में कुल नौ फसलों के उगाये जाने का संकेत मिल चुका है।
- हड़प्पावासी सुमेर देश से व्यापार करते थे।
- सिन्धु सभ्यता के विनाश के लिए बाढ़ या सूखा या विदेशी आक्रमण (आर्यों का आगमन) को जिम्मेदार ठहराया गया है।
- अर्नेस्ट मैके एवं जॉन मार्शल के अनुसार, सिन्धु सभ्यता बाढ़ के कारण नष्ट हुई।

5. वैदिक सभ्यता

- जिस काल (1500-1000 ई० पू०) में ऋग्वेद की रचना हुई, उस काल को ऋग्वैदिक काल कहा जाता है।
- जिस काल (1000-600 ई० पू०) में ऋग्वेद के अतिरिक्त अन्य वेदों की रचनाएँ हुई, उस काल को वैदिक काल कहा जाता है।
- आर्य 2000-1500 ई० पू० में भारत आये।
- आर्य सर्वप्रथम पंजाब एवं अफगानिस्तान में बसे।
- आर्य भारत में मध्य एशिया से आये थे
- आर्य शब्द का अर्थ है—कुलीन, श्रेष्ठ, उत्कृष्ट।
- भारत में आने वाले आर्य इण्डो आर्य कहलाये।
- भारत में आर्यों ने आकर वैदिक सभ्यता की नींव डाली।
- आर्यों के प्राचीन आदरणीय ग्रंथ वेद था।
- आर्यों का सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद था।
- आर्यों के समूह को विश कहा जाता था।
- आर्य, अनार्यों को 'दस्यु' और 'दास' कहते थे।
- आर्यों का आहार अन्न तथा माँस दोनों था।
- आर्य धार्मिक अवसरों पर सोमपान करते थे।
- आर्यों के प्रमुख देवता इन्द्र थे।
- आर्य युद्ध करते समय दुन्दुभी बजाते थे।
- आर्यों का प्रधान पेशा पशुपालन तथा खेती था।
- आर्य प्राकृतिक शक्तियों (वर्षा के देवता-इन्द्र, वायु के देवता-मरुत, प्रकाश के देवता-सूर्य) की पूजा करते थे।
- आर्य दार्शनिक ऋषि कहलाते थे।
- आर्य घोड़े को ज्यादा महत्व देते थे।
- आर्य सरस्वती नदी को ज्यादा महत्व देते थे।
- आर्य कबीलों में रहते थे, उनके संरक्षक राजा कहलाते थे।
- आर्यों के मनोरंजन के साधन रथदौड़, घुड़दौड़, आखेट, संगीत, चौपड़ तथा जुआ आदि थे।
- आर्यों की भाषा संस्कृत थी।
- आर्यों ने लोहे की धातु की खोज की।
- आर्यों के समय में समाज के चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) थे।
- आर्यों के समय में समाज की प्रमुख इकाई परिवार थी।
- समाज की सबसे छोटी इकाई कुल या परिवार थी।
- कई परिवार मिलकर ग्राम या गोत्र का निर्माण करते थे।
- कई ग्राम मिलकर विश का निर्माण करते थे।
- कई विश मिलकर जन का निर्माण करते थे।
- समाज में चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, और संन्यास) थे।
- समाज में जातीय, अन्तर्जातीय तथा विधवा विवाह प्रथा प्रचलित थी।
- व्यापारियों के अध्यक्ष को श्रेणी कहा जाता था।
- व्यापार हेतु दूर-दूर तक जाने वाला व्यक्ति पणि कहलाता था।

- ऋण देकर ब्याज लेने वाला व्यक्ति बेकनॉट (सूदखोर) कहलाता था।
- आर्य मुख्यत: तीन प्रकार के वस्त्रों (वास, अधिवास तथा उष्णीष) का उपयोग करते थे।
- अन्दर पहनने वाले कपड़े को नीबि कहा जाता था।
- जीवनभर अविवाहित रहने वाली महिला को अमाजू कहा जाता था।
- ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था कार्य के आधार पर थी।
- सामवेद का संकलन ऋग्वेद पर आधारित है।
- ईरानी भाषा के ग्रंथ 'अवेस्ता' की तुलना भारतीय ग्रंथ 'ऋग्वेद' से की जाती है।
- ब्राह्मण ग्रंथों में सर्वाधिक प्राचीन शतपथ ब्राह्मण है।
- राजा की उत्पत्ति के विषय में प्रथम साक्ष्य ऐतरेय ब्राह्मण से मिलता है।
- भरत कुल के नाम से ही इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।
- भरत तथा कुरु कबीलों ने मिलकर कुरु वंश की स्थापना की थी।
- जाति व्यवस्था, गोत्र व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था का उल्लेख सर्वप्रथम उत्तर वैदिक काल में ही मिलता है।
- पूर्व पुरुषों की पूजा का प्रचलन उत्तर वैदिक काल में हुआ।
- चौबीस बैलों द्वारा हल खींचे जाने का उल्लेख काठक संहिता से मिलता है।
- हल सम्बन्धी अनुष्ठान का वर्णन सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण से मिला है।
- ऋग्वैदिक काल में सम्पत्ति का प्रमुख रूप गौधन था।
- ऋग्वैदिक काल की महत्वपूर्ण फसल यव और गेहूँ थी।
- ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक प्राचीन संस्था विद्थ थी।
- ऋग्वैदिक में जन का 275 तथा विश का 170 बार उल्लेख हुआ है।
- उत्तर वैदिक काल के महत्वपूर्ण देवता प्रजापति थे।
- सभा तथा समिति प्रजापति की दो पुत्रियाँ थीं, इसका उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- ऋग्वेद में इन्द्र देवता का 250 सूक्तों में वर्णन मिलता है।
- उत्तर वैदिक काल में लाल रंग के मृद्भाण्ड सर्वाधिक प्रचलन में थे।
- ऋग्वैदिककालीन समाज पितृसत्तात्मक था और एक विवाह प्रथा प्रचलित थी।
- ऋग्वैदिककालीन प्रशासन तन्त्र गणतंत्रात्मक तथा राजतन्त्रात्मक था।
- उत्तर वैदिक काल की मुख्य फसल चावल और गेहूँ थी।
- सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में कृषि की समस्त प्रक्रियाओं का उल्लेख मिलता है।
- धान, यव तथा गेहूँ आदि अनाजों का वर्णन यजुर्वेद में मिलता है।
- ईख का उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- सिंचाई के साधन के रूप में वर्षा, कूप एवं नहर का उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- तैत्तिरीय उपनिषद् में अन्न को ब्रह्म कहा गया है।
- यजुर्वेद में हल को 'सीर' कहा गया है।
- बाजसनेयी संहिता तथा तैत्तिरीय उपनिषद् में मछुआरे, धोबी, कुलाल, चिकित्सक आदि व्यवसायी का उल्लेख मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण में 'कौश' (रेशम) का उल्लेख मिलता है।
- मैत्रायणी ब्राह्मण में 'क्षोम' का उल्लेख मिलता है।
- अथर्ववेद में 'तक्ष' शब्द का उल्लेख बढ़ई के लिए हुआ है।
- यजुर्वेद में 'कैवर्त' शब्द का उल्लेख मछुआरे के लिए हुआ है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में 'श्रेष्ठी' शब्द का उल्लेख मिलता है।
- बाजसनेयी संहिता में 'गण' तथा 'गणपति' शब्द का उल्लेख मिलता है।
- 'पूषण' शूद्रों के देवता के रूप में प्रचलित थे।
- 'रूद्र' जिन्हें ऋग्वेद काल में पशुओं का देवता माना जाता था, इनकी पूजा उत्तरवैदिक काल में शिव के रूप में होने लगी।
- ऋग्वेद में सात पुरोहितों का वर्णन मिलता है।
- उत्तरवैदिक कालीन साहित्य में चौदह पुरोहितों का वर्णन मिलता है।

प्रमुख दर्शन एवं रचयिता/प्रवर्त्तक	
1. चार्वाक	चार्वाक
2. सांख्य	कपिल
3. योग	पतंजलि
4. न्याय	गौतम
5. पूर्वमीमांसा	जैमिनी
6. उत्तर मीमांसा	बादरायण
7. वैशेषिक	कणाद या उलूक

- ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री को 'कृपण' कहा गया है।
- तैत्तिरीय ब्राह्मण में कहा गया है कि पत्नी के बिना पति यज्ञ कार्यों को सम्पन्न नहीं कर सकता है।
- शतपथ ब्राह्मण में क्षत्रियों को ब्राह्मण से श्रेष्ठ बताया गया है।
- शतपथ ब्राह्मण में बारह प्रकार के रत्नियों का विवरण दिया गया है।
- ऋग्वेद में नदी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख है।
- ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी सिन्धु थी।
- ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक पवित्र नदी सरस्वती थी।
- ऋग्वेद में अयस् धातु का उल्लेख मिलता है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में हिरण्य, त्रपु, सीसा, अयस् एवं लौह का विवरण मिलता है।
- अथर्ववेद में चाँदी का विवरण मिलता है।
- चारों वर्णों का उल्लेख सर्वप्रथम पुरुष सूक्त में मिलता है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में सर्वप्रथम चारों वर्णों के कर्मों के विषय में विवरण मिलता है।
- सर्वप्रथम जाबालोपनिषद् में चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है।
- 'राष्ट्र' एवं 'राजा' शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम उत्तरवैदिक काल में हुआ।
- निरुक्त में पंचजनों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं निषाद की गणना की गयी है।
- षड्दर्शन का बीजारोपण उत्तरवैदिक काल में हुआ।
- श्राद्ध प्रथा का सर्वप्रथम प्रारम्भ दत्रात्रेय ऋषि के पुत्र निमि ने किया था।
- अथर्ववेद में सामूहिक वाद-विवाद के स्थल को 'नरिष्ठा' कहा गया है।

6. महाजनपदों का उदय

- लगभग छठीं शताब्दी ई० पू० में भारतवर्ष सोलह महाजनपदों में बँटा हुआ था।
- बौद्ध ग्रंथ के 'अंगुत्तरनिकाय' में सोलह जनपदों की सूची मिलती है।
- जैन ग्रंथ के 'भगवतीसूत्र' में सोलह जनपदों की सूची मिलती है, परन्तु उसमें नाम कुछ भिन्न प्रकार का है।
- महाजनपद दो प्रकार के थे—(i) राजतन्त्रात्मक राज्य एवं (ii) गणतन्त्रात्मक राज्य।
- वज्जि और मल्ल गणतन्त्रामत्क राज्य थे तथा शेष सभी राजतन्त्रात्मक राज्य थे।
- पाणिनि की अष्टाध्यायी में महाजनपदों की संख्या 22 बताई गई है।
- बौद्ध ग्रंथ महावस्तु में सात महाजनपदों का उल्लेख है।
- एकमात्र अश्मक महाजनपद दक्षिण भारत में था, जबकि शेष सभी पन्द्रह महाजनपद उत्तर भारत से सम्बन्धित थे।
- महाजनपद युग में उत्तरी भारत में गंगा की घाटी में 36 गणराज्य थे।
- ई० पू० छठी शताब्दी में मुद्रा-प्रणाली का उदय हुआ।
- गणराज्यों में ही सर्वप्रथम सिक्के जारी किए गए, जिन्हें 'पंचमार्क्ड' की संज्ञा दी जाती है।
- गौतम बुद्धकालीन गणतन्त्र राज्य दस थे, जो इस प्रकार थे—(i) कपिलवस्तु के शाक्य, (ii) सुमसुमार गिरि के भग्ग, (iii) अलकप्प के बुलि, (iv) केसपुत्त के कलाम, (v) रामग्राम के कोलिय, (vi) कुशीनारा के मल्ल, (vii) पावा के मल्ल, (viii) पिप्पलिवन के मोरिय, (ix) वैशाली के लिच्छवि तथा (x) मिथिला के विदेह।
- महाजनपद युग के प्रमुख नगर इन्द्रप्रस्थ, हस्तिनापुर, कौशाम्बी और वाराणसी थे।
- महाजनपद युग के सर्वाधिक शक्तिशाली जनपद मगध, अवन्ति, कोसल और वत्स थे।

महाजनपद

क्र०	महाजनपद	राजधानी	वर्तमान स्थिति
1.	अंग	चम्पा	आधुनिक बिहार राज्य के भागलपुर तथा मुँगेर जिलों को मिलाकर अंग कहा जाता था
2.	मगध	गिरिव्रज (राजगृह)	आधुनिक बिहार राज्य के पटना और गया जिलों को मिलाकर मगध कहा जाता था। राजगृह को आजकल राजगीर कहा जाता है।
3.	काशी	वाराणसी	उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को काशी कहा जाता था। वाराणसी को आजकल भी वाराणसी ही कहा जाता है।
4.	कोशल		
	I. उत्तरी कोशल	साकेत	आधुनिक उत्तर प्रदेश के राज्य के साकेत, अयोध्या और श्रावस्ती को मिलाकर कोशल कहा जाता था।
	II. दक्षिणी कोशल	श्रावस्ती	श्रावस्ती आजकल उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में स्थित टीलों की ढेर में सुरक्षित है।
5.	वज्जि	वैशाली/मिथिला/ विदेह	आधुनिक बिहार राज्य के दरभंगा, मधुबनी तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को वज्जि कहा जाता था।
6.	मल्ल	कुशीनारा/पावा/ कुशावती	आधुनिक उत्तर प्रदेश राज्य के देवरिया कुशीनगर, बस्ती, सिद्धार्थनगर तथा गोरखपुर के क्षेत्रों को मल्ल कहा जाता था।
7.	चेदि	सूक्तिमति	आधुनिक बुंदेलखण्ड और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को चेदि कहा जाता था।
8.	वत्स	कौशाम्बी	आधुनिक उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद, मिर्जापुर और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को वत्स कहा जाता था। कौशाम्बी को आजकल कौशम कहा जाता है।
9.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ	आधुनिक दिल्ली एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को कुरु कहा जाता था।
10	पांचाल		
	I. उत्तरी पांचाल	अहिच्छत्र	आधुनिक रूहेलखण्ड के बरेली, बदायूँ एवं फर्रुखाबाद जिलों को मिलाकर पांचाल कहा जाता था।
	II. दक्षिणी पांचाल	काम्पिल्य	
11.	मत्स्य	विराटनगर	आधुनिक राजस्थान के जयपुर, अलवर, भरतपुर और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को मत्स्य कहा जाता था।
12.	शूरसेन	मथुरा	आधुनिक मथुरा और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को शूरसेन कहा जाता था।
13.	अश्मक	पोतन/पोटली	नर्मदा तथा गोदावरी नदियों के बीच में स्थित था।
14.	अवन्ति		
	I. उत्तरी अवन्ति	उज्जयिनी	आधुनिक मालवा क्षेत्र ही अवन्ति कहलाता था।
	II. दक्षिणी अवन्ति	महिष्मती	आधुनिक मालवा क्षेत्र ही अवन्ति कहलाता था।
15.	गांधार	तक्षशिला	आधुनिक पाकिस्तान का पश्चिमी और अफगानिस्तान का पूर्वी भाग गांधार कहलाता था।
16.	कम्बोज	राजपुर/हाटक	आधुनिक पाकिस्तान के हजारा जिले को कम्बोज कहा जाता था।

7. जैन धर्म

- 'जैन' शब्द 'जिन' से बना है, जिसका अर्थ है—विजेता अर्थात् जिसने इन्द्रियों को जीत लिया है।
- जैन धर्म के संस्थापक ऋषभदेव थे।
- जैन अनुयायी के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे।
- जैन धर्म के आचार्य तीर्थंकर कहलाते थे।
- जैन धर्म में पार्श्वनाथ के अनुयायियों को निर्ग्रंथ कहा जाता था।
- पार्श्वनाथ ने चार (अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह) महाव्रतों का प्रतिपादन किया था।
- पार्श्वनाथ ने अहिंसा महाव्रत पर अधिक जोर दिया था।
- पार्श्वनाथ ने कायाक्लेश एवं तपश्चर्या से मोक्ष-प्राप्ति की बात कही थी।
- पार्श्वनाथ 23वें तीर्थंकर थे।
- जैन धर्म के 24वें तथा अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे।
- जैन परम्परा के अनुसार जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए।
- जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी को माना जाता है।
- पार्श्वनाथ ने भिक्षुओं को श्वेत वस्त्र पहनने का आदेश दिया।
- महावीर स्वामी का जन्म वैशाली के निकट कुण्डग्राम (वज्जि संघ का गणतन्त्र) ज्ञातृक क्षत्रिय कुल के प्रधान 'सिद्धार्थ' के यहाँ 599 ई० पू० में हुआ था।
- महावीर स्वामी की माता का नाम 'त्रिशाला' था, जो वैशाली के लिच्छवी शासक चेटक की बहन थीं।
- महावीर स्वामी का विवाह 'यशोदा' नामक राजकुमारी से हुआ था।
- महावीर स्वामी की पुत्री का नाम अनोज्जा प्रियदर्शनी तथा दामाद का नाम जामालि था।
- महावीर स्वामी ने 30 वर्ष की अवस्था में अपने बड़े भाई नन्दिवर्धन की आज्ञा लेकर घर को त्याग दिया। घर त्यागने के बाद महावीर संन्यासी अर्थात् यती हो गये तथा 12 वर्ष की गहन तपस्या के पश्चात् ऋम्भिक ग्राम के निकट ऋजुपालिका नदी के तट पर एक साल वृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई।
- महावीर स्वामी के बचपन का नाम वर्धमान था। ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्हें कई नामों से जाना जाने लगा, जैसे—कैवलिन (सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करने के कारण), जिन (सभी इन्द्रियों को जीतने के कारण), महावीर (अपरिमित पराक्रम दिखाने के कारण), अर्हत (योग्य), निर्ग्रन्थ (बंधन रहित होने के कारण)।
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर स्वामी ने कोशल, मगध, मिथिला, चम्पा, वैशाली, राजगृह, श्रावस्ती, अंग, विदर्भ आदि स्थानों का भ्रमण कर जैन मत का 30 वर्षों तक प्रचार-प्रसार किया।
- लगभग 72 वर्ष की आयु में 527 ई० पू० में महावीर स्वामी की राजगृह के समीप पावापुरी में मल्लराज सस्तिपाल के महल में मृत्यु हो गई।
- महावीर स्वामी ने पहला उपदेश राजगृह में दिया था।
- राजगृह में महावीर स्वामी ने सर्वाधिक वास वर्षा ऋतु में किया था।
- महावीर स्वामी ने पहला उपदेश पालिभाषा में दिया था।
- आदि जैन ग्रंथों की भाषा प्राकृत थी।
- जैनियों ने सबसे पहले प्राकृत भाषा को अपनाया था।
- जैन मतावलम्बियों ने आम बोल-चाल में प्राकृत भाषा को अपनाया।
- जैन धर्म के धार्मिक ग्रंथ अर्द्धमगधी भाषा में लिखे गये हैं।
- अर्द्धमगधी भाषा से अपभ्रंश का विकास हुआ।
- जैनधर्म का महत्वपूर्ण ग्रंथ 'कल्पसूत्र' संस्कृत भाषा में लिखा गया है।
- महावीर स्वामी की प्रथम जैन भिक्षुणी पद्मावती (जो चम्पारण नरेश की महिषी थी) थी।
- महावीर स्वामी ने अपने पूर्वगामी तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वारा दिये गये चार महाव्रतों (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह) में पाँचवाँ व्रत ब्रह्मचर्य जोड़ा।
- जैन धर्म के त्रिरत्न हैं—सम्यक् ज्ञान, सम्यक् श्रद्धा, सम्यक् आचरण।
- जैन धर्म के अनुसार ज्ञान पाँच प्रकार का होता है—मति, श्रुति, अवधि, मन:पर्याय, कैवल्य।
- जैन धर्म में दो प्रकार के शीलव्रत हैं—(i) गुणव्रत (दिग्व्रत, देशव्रत तथा अनर्थदण्डव्रत) तथा (ii) शिक्षाव्रत (सामयिक व्रत, प्रोषधोपवासव्रत, उपभोग प्रतिभोग परिमाणव्रत, अतिथि-संविभाग व्रत)

- जैन साहित्य में आगम का स्थान सर्वोपरि है, इसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छंद सूत्र, नन्दि सूत्र, अनुयोग द्वार और मूल सूत्र सम्मिलित हैं।
- ऋषभदेव का प्रतीक चिह्न साँड है।
- पार्श्वनाथ का प्रतीक चिह्न सर्प है।
- महावीर स्वामी का प्रतीक चिह्न सिंह है।
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर स्वामी ने पावापुरी में जैन संघ की स्थापना की थी।
- जैन धर्म के अनुसार यह संसार छः तत्वों से बना है—जीव, पुद्गल अर्थात् भौतिक तत्व, धर्म, अधर्म, आकाश, काल।
- स्यादवाद सप्तभंगी ज्ञान को कहते हैं।
- जैन धर्म के स्यादवाद का अर्थ है-शायद है भी और नहीं भी।
- स्यादवाद जैन धर्म का मूलाधार था।
- जैन धर्म में सिद्धों का क्रम इस प्रकार हैं—(i) साधु, (ii) उपाध्याय, (iii) आचार्य, (iv) अर्हत तथा (v) तीर्थंकर।
- न्यायवाद का सम्बन्ध जैन धर्म से है।
- जैन धर्म अनीश्वरवादी है।
- जैन धर्म आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करता है।
- जैन धर्म के अनुसार सृष्टि का अस्तित्व शाश्वत है।
- जैन धर्म के दो सम्प्रदाय थे—(i) श्वेताम्बर (सफेद वस्त्र धारण करने वाले), (ii) दिगम्बर (नग्न रहने वाले)।
- जैन धर्म की पहली जैन संगीति 310 ई० पू० में पाटलिपुत्र में स्थूलभद्र की अध्यक्षता में चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में हुई। इस संगीति में जैन धर्म के महत्वपूर्ण 12 ग्रंथों का प्रणयन किया गया तथा जैन धर्म श्वेताम्बर तथा दिगम्बर में बँट गया।
- जैन धर्म की दूसरी जैन संगीति 512 ई० में बल्लभी में देवर्धि क्षमाश्रमण की अध्यक्षता में हुई। इस संगीति में जैन धर्म ग्रंथों को अन्तिम रूप से संकलित कर लिपिबद्ध किया गया।
- जैन धर्म के त्रिरत्नों का पालन करने से कर्मों का जीव की ओर बहाव रुक जाता है, इसे संवर कहा जाता है
- जब जीव में पहले से किये गये कर्म का प्रभाव समाप्त होने लगता है, तो उसे निर्जरा कहते हैं।
- जैन धर्म में युद्ध और कृषि वर्जित हैं।
- जैन संघ के सदस्य चार वर्गों में बँटे थे—भिक्षु, भिक्षुणी, श्रावक, श्राविका।
- जैन संघ को महासभा कहा जाता था।
- महावीर स्वामी के शिष्य मक्खलिपुत्र गौशाल ने आजीविक सम्प्रदाय की स्थापना की थी।
- श्रवणवेलगोला के निकट गोमतेश्वर की मूर्ति (जैन प्रतिमा) का निर्माण चामुण्डराय ने करवाया था।
- जैन धर्म का कर्नाटक में प्रचार चन्द्रगुप्त मौर्य (321-297 ई० पू०) ने किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन धर्म को अपनाकर राज्य त्याग दिया और अपने जीवन के अन्तिम वर्ष तक साधु होकर धर्म प्रचार किया।
- पाँचवीं सदी में कर्नाटक में बहुत सारे जैन मठ स्थापित हुए, जो बसदिस कहलाते थे।
- रणथम्भौर के जैन मन्दिर का शिखर पृथ्वीराज चौहान ने बनवाया था।
- चौथी शताब्दी ई० पू० में मगध में बारह वर्षों तक भयंकर अकाल पड़ा रहा।
- मगध में अकाल पड़े रहने के कारण स्थूलभद्र अपने शिष्यों के साथ कर्नाटक चले गये और अकाल के खत्म होने पर जब लौटे तो उन्हें दिगम्बर या दक्षिणी जैन कहा जाने लगा।
- मगध में अकाल पड़े रहने पर भी स्थूलप्रद अपने शिष्यों के साथ मगध में ही रहे और ये श्वेताम्बर कहलाये।
- कलिंग में जैन धर्म का प्रचार कलिंग राजा खारवेल ने किया।
- जैन धर्म का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार व्यापारी वर्ग में हुआ।
- महावीर स्वामी का अपने दामाद जामालि से क्रियामाणकृत सिद्धान्त पर मतभेद हुआ था।
- आरम्भ में जैन धर्म में मूर्ति पूजा का प्रचलन नहीं था, लेकिन कालान्तर में श्वेताम्बर सम्प्रदाय के लोगों ने महावीर एवं अन्य तीर्थंकरों की पूजा आरम्भ कर दी।
- जैन धर्म के समर्थक राजाओं में उदयिन, बिम्बिसार, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार एवं खारवेल का उल्लेख मिलता है।
- स्थापत्य कला में जैनियों के महत्वपूर्ण योगदान के रूप में हाथी गुम्फा मन्दिर (ओडिशा), दिलवाड़ा मन्दिर, (माउण्ट आबू, राजस्थान), गोमतेश्वर मन्दिर (कर्नाटक), पार्श्वनाथ मन्दिर (खुजराहो) आदि उल्लेखनीय हैं।

8. बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे।
- महात्मा बुद्ध का जन्म नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी ग्राम के आम्र-कुंज में 563 ई० पू० (NCERT Book के अनुसार 566 ई०पू०) में शाक्य क्षत्रिय कुल के राजा शुद्धोधन के यहाँ हुआ था।
- महात्मा बुद्ध की माता का नाम महामाया था, जिनकी मृत्यु बुद्ध के जन्म के सातवें दिन ही हो गई थी, अत: इनका पालन-पोषण इनकी मौसी प्रजापति गौतमी ने किया था, इसलिए ये गौतम के नाम से चर्चित थे।
- महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ गौतम था।
- सिद्धार्थ का अर्थ होता है—जिसकी आकांक्षा पूर्ण हो।
- असित ब्राह्मण ने सिद्धार्थ का नामकरण किया था।
- कालदेव तथा ब्राह्मण कौण्डिन्य ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक चक्रवर्ती राजा अथवा संन्यासी होगा।
- 16 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ का विवाह यशोधरा (इनके अन्य नाम गोपा, बिम्बा तथा भद्रकच्छा भी हैं) से कर दिया गया। इनसे राहुल नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।
- गौतम बुद्ध के जीवन सम्बन्धी चार दृश्य अत्यन्त प्रसिद्ध हैं, जिन्हें देखकर उनके मन में वैराग्य की भावना उठी—(i) वृद्ध व्यक्ति को देखना, (ii) बीमार व्यक्ति को देखना, (iii) मृत व्यक्ति को देखना और (iv) प्रसन्न मुद्रा में संन्यासी को देखना।
- गौतम बुद्ध ने 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया। बौद्ध ग्रंथों में इस घटना को महाभिनिष्क्रमण कहा गया है।
- बुद्ध के सारथी का नाम चन्ना तथा घोड़े का नाम कन्थक था, जो महात्मा बुद्ध को रथ द्वारा महल से कुछ दूर ले जाकर छोड़ आया।
- महात्मा बुद्ध सर्वप्रथम अनुपिय नामक आम्र उद्यान में एक सप्ताह तक रहे। इसके बाद मगध की राजधानी राजगृह पहुँचे।
- वैशाली के समीप बुद्ध की मुलाकात आलार कालाम नामक संन्यासी से हुई, जो सांख्य दर्शन का आचार्य था।
- राजगृह के समीप बुद्ध की मुलाकात रूद्रक रामपुत्र नामक धर्माचार्य से हुई, तदुपरान्त वे उरूवेला पहुँचे तथा निरंजना नदी के तट पर एक वृक्ष के नीचे तपस्या प्रारम्भ कर दी। इसके साथ पाँच ब्राह्मण संन्यासी (कौण्डिन्य, ऑज,
- अस्सजि, वप्प और भद्दिय) भी तपस्या कर रहे थे।
- जातक कथाओं से यह पता चलता है कि उरूवेला के सेनानी की पुत्री सुजाता द्वारा लाई गई भोज्य सामग्री को ग्रहण कर लेने के कारण पाँचों ब्राह्मण बुद्ध का साथ छोड़कर ऋषिपत्तन (सारनाथ) चले गये।
- बुद्ध उरूवेला से गया पहुँचे और वहाँ एक पीपल वृक्ष के नीचे समाधि लगायी। आठवें दिन उन्हें ज्ञान (बोधि) की प्राप्ति हुई (वैशाख पूर्णिमा के दिन) और वे बुद्ध कहलाए।
- महात्मा बुद्ध को तथागत (जिसका अर्थ है—सत्य है ज्ञान जिसका) तथा शाक्यमुनि (शाक्य का अर्थ है—सर्वशक्तिमान) भी कहा जाता है।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद बोध गया में ही महात्मा बुद्ध ने दो बंजारों (तपस्सु और मल्लिक) को अपना सेवक बना लिया।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद सर्वप्रथम बुद्ध गया से ऋषिपत्तन या मृगवन (सारनाथ) पहुँचे, जहाँ पहले से ही पाँचों ब्राह्मण मौजूद थे। यहीं पर बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश इन्हीं पाँचों ब्राह्मणों को दिया। इस घटना को बौद्धधर्म में धर्मचक्रप्रवर्तन कहा गया।
- सर्वप्रथम मगध का राजा बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी बना और उसने वेणुवन विहार दान में दे दिया।
- श्रावस्ती का एक व्यापारी सुदात बौद्ध धर्म का अनुयायी बना और उसने जेतवन विहार (श्रावस्ती में स्थित) दान में दे दिया।
- राजगृह में ही सारिपुत्र, मोद्गलायन, उपालि, अभय आदि महात्मा बुद्ध के शिष्य बने।
- बुद्ध ने अपने परम शिष्य आनन्द के कहने पर वैशाली में महिलाओं को संघ में प्रवेश की अनुमति दे दी। प्रजापति गौतमी ही सर्वप्रथम संघ में शामिल हुई। बाद में गौतमी की पुत्री नन्दा तथा बुद्ध की पत्नी यशोधरा भी भिक्षुणी बन गई। वैशाली की प्रसिद्ध नगरवधू आम्रपाली भी शिष्या बनी। बिम्बिसार की पत्नी क्षेमा भी शिष्या बन गई।

- कौशाम्बी का शासक उदयन बौद्ध भिक्षु पिण्डोला भारद्वाज के प्रभाव से बौद्ध बन गया।
- बुद्ध के सबसे अधिक शिष्य कोसल राज्य में ही हुए तथा यहीं पर उन्होंने अपने धर्म का सबसे अधिक प्रचार किया।
- जीवन के अन्तिम वर्ष में बुद्ध अपने शिष्य चुन्द (लोहार अथवा सुनार) के यहाँ पावा पहुँचे। यहाँ सूकरमाद्दव भोज्य सामग्री खाने से अतिसार रोग से पीड़ित हो गए। फिर ये पावा से कुशीनगर चले गए और यहीं पर सुभद्र को अन्तिम उपदेश दिया।
- 80 वर्ष की अवस्था में (483 ई० पू०) कुशीनगर में बुद्ध की मृत्यु हो गई, जिसे बौद्ध ग्रंथों में महापरिनिर्वाण कहा गया है। (NCERT Book के अनुसार 486 ई०पू० में बुद्ध का निर्वाण हुआ।)
- महात्मा बुद्ध के प्रमुख शिष्य इस प्रकार थे—सारिपुत्र, आनन्द, मोद्गलायन, उपालि, सुनीत, अनरुद्ध, अनाथ पिण्डक (सुदात), बिम्बिसार, प्रसेनजित, अजातशत्रु, जीवक, महाकश्यप।
- बौद्ध धर्मानुयायी प्रमुख स्त्रियाँ इस प्रकार हैं—महाप्रजापति गौतमी, यशोधरा, नन्दा, खेमा या क्षेमा, आम्रपाली, विशाखा।
- बौद्ध धर्म का मूल आधार चार आर्य सत्य हैं—दु:ख, दु:ख समुदाय, दु:ख निरोध तथा दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा।
- दु:ख के कारणों को प्रतीत्य समुत्पाद (इसके प्राप्त होने से यह उत्पन्न होता है) कहा गया है। इसे हेतु परम्परा भी कहा गया है। प्रतीत्य समुत्पाद बौद्ध दर्शन का मूल तत्व है। अन्य सिद्धान्त इसी में समाहित हैं। बौद्ध दर्शन का क्षण-भंगवाद भी प्रतीत्य समुत्पाद से ही उत्पन्न सिद्धान्त है।
- आष्टांगिक मार्ग ही दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा है। आष्टांगिक मार्ग ये हैं—(i) सम्यक् दृष्टि, (ii) सम्यक् संकल्प, (iii) सम्यक् वाक्, (iv) सम्यक् कर्मान्त, (v) सम्यक् आजीव (vi) सम्यक् व्यायाम (vii) सम्यक् स्मृति, (viii) सम्यक् समाधि।
- बौद्ध धर्म मूलत् अनीश्वरवादी है। यह अनात्मवादी भी है, परन्तु पुनर्जन्म की इसमें मान्यता है।
- बौद्ध धर्म में आचरण की शुद्धता हेतु दस शीलों पर बल दिया गया है, जो इस प्रकार हैं—(i) अहिंसा, (ii) सत्य, (iii) अस्तेय (चोरी न करना), (iv) अपरिग्रह (धन संचय न करना), (v) ब्रह्मचर्य, (vi) नृत्य व संगीत का त्याग, (vii) सुगन्धित पदार्थों का त्याग, (viii) असमय भोजन का त्याग, (ix) कोमल शय्या का त्याग तथा (x) कामिनी कंचन का त्याग।
- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं—(i) बुद्ध, (ii) धम्म तथा (iii) संघ।
- संघ में प्रविष्ट होने को उपसम्पदा कहा जाता था।
- गृहस्थ जीवन का त्याग प्रवज्या कहलाता था तथा प्रवज्या ग्रहण करने वाले को श्रामणेर कहा जाता था।
- गृहस्थ जीवन में रहकर ही बौद्ध धर्म को मानने वाले लोगों को उपासक कहा जाता था।
- बौद्ध धर्म के अनुयायी दो वर्गों में बँटे हुए थे—(i) भिक्षु तथा भिक्षुणी और (ii) उपासक तथा उपासिकाएँ।
- महात्मा बुद्ध की मृत्यु के तुरन्त बाद 483 ई० पू० में राजगृह की सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति आयोजित हुई। इसके अध्यक्ष महाकस्सप थे। इस समय मगध का शासक अजातशत्रु था। इस संगीति में बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन हुआ तथा उन्हें सुत्त और विनय नाम के दो पिटकों में विभाजित किया गया।
- महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 100 वर्ष के बाद 383 ई० पू० में कालाशोक के समय में चुल्लबग्गा (वैशाली) में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता साबकमीर ने की। इस संगीति में भिक्षुओं के दो वर्ग बन गए—(i) स्थविर अथवा थेरावादी तथा (ii) महासांधिक या सर्वास्तिवादी।
- महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद 247 ई० पू० में पाटलिपुत्र में अशोक के शासनकाल में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुततिस्स ने की। इसमें अभिधम्म नामक तीसरा पिटक जोड़ दिया गया तथा इस पिटक के ग्रंथ कथावस्तु का संकलन किया गया।

- महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद प्रथम शताब्दी ई० में कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर के कुण्डलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता वसुमित्र ने की जबकि उपाध्यक्ष अश्वघोष थे। इस संगीति में विभाषाशास्त्र नामक एक अन्य ग्रंथ की रचना हुई। इसी समय में बौद्धों ने संस्कृत के रूप में भाषा को अपना लिया। इसी समय बौद्ध धर्म स्पष्ट रूप से हीनयान तथा महायान नामक दो सम्प्रदायों में विभाजित हो गया। हीनयान में वस्तुत: स्थविरवादी तथा महायान में महासंघिक थे।
- गौतम बुद्ध ने अपने जीवन के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये।
- गौतम बुद्ध के सर्वाधिक प्रिय शिष्य आनन्द थे।
- बौद्ध धर्म ग्रहण करने वाली पहली महिला प्रजापति गौतमी थी।
- बौद्ध के पंचशील सिद्धान्त का वर्णन छांदोग्य उपनिषद् में मिलता है।
- बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग का स्रोत तैत्तिरीय उपनिषद् है।
- निर्वाण का अर्थ है, जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाना।
- बौद्ध संघ का संगठन गणतन्त्र प्रणाली पर आधारित था।
- बुद्ध ने अपने उपदेशों में पाली भाषा का प्रयोग किया।
- बौद्ध धर्म का प्रचार प्राकृत भाषा में किया गया।
- सुत्तपिटक को प्रारम्भिक बौद्ध धर्म का इनसाक्लोपीडिया कहा जाता है।
- बौद्ध ग्रंथों में अभिधाम्मपिटक से संस्कृत का प्रयोग प्रारम्भ होता है।
- दीघनिकाय में बुद्ध के समय के छ: नगरों (चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती, साकेत, कौशाम्बी, वाराणसी) का उल्लेख मिलता है।
- बौद्ध धर्म के पिटक पाली भाषा में लिखे गए हैं।
- कमल और साँड बुद्ध के जन्म के, घोड़ा बुद्ध के गृह त्याग के, पीपल बुद्ध के ज्ञान के, पद चिह्न बुद्ध के निर्वाण के तथा स्तूप बुद्ध की मृत्यु के प्रतीक हैं।
- बौद्ध धर्म के पिटक का अर्थ है—पिटारी अर्थात् ज्ञान की पिटारी।
- बौद्ध धर्म में जातक एक बौद्ध साहित्य है, जिसमें बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियाँ संकलित हैं।
- बौद्ध धर्म के अनुसार, भविष्य में बुद्ध का अवतार पशु-योनि में होगा।
- वैशाली (बिहार) में सबसे ऊँचा बौद्ध स्तूप है तथा मध्य भारत में सांची का बौद्ध स्तूप विश्व प्रसिद्ध है।
- मिलिन्दपन्हो नामक ग्रंथ में राजा मिलिन्द और नागसेन बौद्ध भिक्षु के मध्य संवाद हैं।
- बुद्ध की प्राचीनतम् मूर्तियाँ लगभग एक ही समय में मथुरा और गांधार में बनी थी।
- भारत में पूजित पहली मानव प्रतिमा महात्मा बुद्ध की है।
- बोधगया में स्थित वह बोधिवृक्ष, जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था, गौड़ के राजा शशांक द्वारा कटवाया गया था।
- महात्मा बुद्ध के उपदेश यथार्थवाद की भावना से प्रेरित थे।
- भारत में अशोक के समान जापान में बौद्ध धर्म का प्रचार राजकुमार शोतांकु ने किया था।
- अशोक के शासनकाल में उसके पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ श्रीलंका गये थे।
- चौथी सदी ई० में नेपाल जाने वाले बौद्ध दार्शनिक आचार्य अतिशा थे।
- चीन से बौद्ध धर्म कोरिया और जापान गया।
- ग्यारहवीं सदी के लेखक अलबरूनी ने लिखा है कि मुसलमान होने से पहले ईरान, ईराक जैसे देशों के निवासी बौद्ध थे।
- बुद्धचरित को बौद्ध धर्म का महाकाव्य माना जाता है।

9. ब्राह्मण धर्म तथा वैष्णव धर्म

- ब्राह्मण धर्म के प्रणेता ब्राह्मण थे।
- ब्राह्मण धर्म को वैदिक धर्म के नाम से भी जाना जाता है।
- ब्राह्मण धर्म की सबसे बड़ी विशेषता यज्ञ सम्बन्धी कर्मकाण्ड थे।
- ब्राह्मण धर्म के अनुयायी पुष्यमित्र शुंग ने ब्राह्मण धर्म के प्रचार और प्रसार में सहायता की तथा बौद्धों को दण्डित किया।

- ब्राह्मण धर्म के सबसे समर्थ आचार्य, जिन्होंने बौद्ध धर्म को ब्राह्मण धर्म में समाहित कर दिया, शंकराचार्य थे।
- वैष्णव धर्म के विषय में प्रारम्भिक जानकारी उपनिषदों से मिलती है।
- वैष्णव धर्म के प्रवर्तक कृष्ण थे।
- कृष्ण वृष्णि कबीले से सम्बन्धित थे।
- कृष्ण का निवास स्थान मथुरा था।
- सर्वप्रथम छांदोग्य उपनिषद में देवकी पुत्र एवं अंगिरस के शिष्य के रूप में कृष्ण का उल्लेख आया है।
- कृष्ण के समर्थक कृष्ण को भागवत् (पूज्य) कहते थे।
- कृष्ण द्वारा स्थापित धर्म को भागवत् धर्म कहा गया।
- भागवत् धर्म का नाम वैष्णव धर्म में परिवर्तित हो गया।
- महाभारत काल में कृष्ण का उल्लेख विष्णु के रूप में किया जाने लगा।
- ऐतरेय ब्राह्मण में विष्णु का उल्लेख सर्वोच्च देवता के रूप में किया जाने लगा।
- जब कृष्ण, विष्णु का तादात्म्य नारायण से स्थापित हुआ तो वैष्णव धर्म का नया नाम पाँच रात्रधर्म हुआ।
- नारायण का उल्लेख सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।
- मत्स्य पुराण में विष्णु के दस अवतारों का उल्लेख हैं, जो इस प्रकार है—मत्स्य, कूर्म अथवा कच्छप, वराह, नृसिह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध, कल्कि या कलि।
- कृष्ण का प्रारम्भिक नाम वासुदेव था।
- वासुदेव की उपासना करने वाले वासुदेवक कहलाते थे।
- भगवत् सम्प्रदाय का उदय 'सात्वत' जाति से हुआ था।
- वैष्णव धर्म में ईश्वर की प्राप्ति हेतु तीन साधन हैं, जो इस प्रकार हैं—ज्ञान, कर्म एवं भक्ति।
- वैष्णव धर्म में ईश्वर-प्राप्ति हेतु भक्ति साधन सबसे महत्वपूर्ण है।
- अवतारवाद का सर्वप्रथम स्पष्ट उल्लेख भगवद्गीता में मिलता है।
- अवतारवाद गुप्तकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर था।
- वैष्णव धर्म में मन्दिर तथा मूर्ति पूजा को विशेष महत्व दिया गया।
- वैष्णव धर्म के प्रारम्भिक अभिलेख के रूप में दूसरी शताब्दी ई० पू० में यूनानी राजदूत होलिओडोरस तक्षशिला निवासी ने गरुड़ध्वज स्थापित कराया।
- पहली सदी ई० पू० के नानाघाट अभिलेख से संकर्षण (बलराम) एवं वासुदेव का विवरण मिलता है।
- वैष्णव धर्म गुप्तकाल में चरमोत्कर्ष पर था।
- दक्षिण भारत में वैष्णव धर्म का प्रचार वेंगी के पूर्वी चालुक्य एवं राष्ट्रकूटों के समय में हुआ था।
- एलोरा में दशावतार का मन्दिर राष्ट्रकूट नरेश दन्तिदुर्ग ने स्थापित किया।
- तमिल प्रदेश में वैष्णव धर्म आलवार सन्तों के माध्यम से विकसित हुआ।
- महाराष्ट्र में वैष्णव धर्म के प्रमुख स्थल के रूप में भैरथी नदी के किनारे पण्ढ़रपुर नगर था, जहाँ पर प्रसिद्ध बिठोवा मन्दिर है।
- निम्बार्क सम्प्रदाय की स्थापना निम्बार्क ने की थी।
- निम्बार्क सम्प्रदाय तैलंग ब्राह्मणों का सम्प्रदाय था।
- सर्वाधिक प्रसिद्ध आलवार संत तिरूमंगई थे।
- आलवार संतों में एकमात्र महिला साध्वी आण्डाल थी।
- गृहपति एवं गृहपत्नी, जो भागवत् धर्म का अनुसरण करते थे, उन्हें भागवती एवं भागवतम् कहा जाता था।
- भागवत धर्म का प्रथम विदेशी उपासक हेलिओडोरस (यूनानी राजदूत) था। उसने अपने को भागवत घोषित किया।
- भागवत धर्म का प्रधान ग्रंथ श्रीमद्भागवद्गीता था, जिसकी रचना महर्षि वेदव्यास ने की थी।
- विदेशी यात्री मेगस्थनीज ने कृष्ण को हेराक्लीज कहा है।
- वासुदेव को 'सात्वर्षम' भी कहा जाता है।
- ब्राह्मण सूत्र के अनुसार, भागवत धर्म में पूजा की पाँच विधियाँ हैं—अभिगमन, उपादान, इज्या, स्वाध्याय, योगसमाधि।

- नारद पंचरात्र ग्रंथ में भक्ति के पाँच प्रकार बताए गए हैं—स्मरण, नाम महिमा और यश का कीर्तन, प्रणयन, चरणों का सेवन, निरन्तर पूजा, भगवान के सम्मुख आत्मनिवेदन।
- पंचरात्र का प्रधान आधार व्यूहवाद था। अमरकोष में पंचरात्र मत के सभी व्यूहों का उल्लेख है।
- भागवत् पुराण में भक्ति के तीन प्रकार निर्दिष्ट किए गए हैं—श्रवण, दास्य, सांख्य, भाव।
- महाभारत के शान्तिपर्व में नारायणीय खण्ड की कथा 'नारायण' से सम्बद्ध है।
- निम्बार्क सम्प्रदाय ने अपने मत के प्रचार हेतु संस्कृत भाषा का प्रयोग किया।
- पूर्वी चालुक्यों का राजचिह्न गरुड़ था।

10. शैव धर्म

- शैव धर्म के लोग शिव की पूजा करते थे।
- शिव भक्ति के विषय में प्रारम्भिक जानकारी हमें सिन्धु घाटी सभ्यता से मिलती है।
- ऋग्वेद में शिव के लिए 'रुद्र' शब्द का प्रयोग किया गया है।
- अथर्ववेद में शिव को भव, शर्व, पशुपति तथा भूपति कहा गया है।
- श्वेताश्वर एवं अथर्वशिरस उपनिषद् में भगवान 'रुद्र' की महानता का उल्लेख है।
- लिंग पूजा का पहला स्पष्ट वर्णन मत्स्य पुराण में मिलता है।
- महाभारत के अनुशासन पर्व में लिंग पूजा का उल्लेख मिलता है।
- पतंजलि द्वारा लिखित 'महाभाष्य' में शिव की मूर्ति बनाकर पूजा करने का विवरण मिलता है।
- गुप्त काल में ही सर्वप्रथम शिव एवं पार्वती की संयुक्त मूर्तियों के निर्मित होने के प्रमाण मिलते हैं। गुप्त काल में ही सर्वप्रथम मूर्ति पूजा के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की पूजा का उल्लेख मिलता है। गुप्त काल में हरिहर के रूप में शिव की विष्णु के साथ सर्वप्रथम मूर्तियाँ बनायी गयीं।
- कुमार गुप्त प्रथम के समय में करमदंडा एवं खोह में शिवलिंग की स्थापना हुई तथा भूमरा एवं नचना कुठार में शिव एवं पार्वती के मन्दिरों का निर्माण हुआ।
- चन्देलों के समय में खजुराहो में कन्दारिया महादेव मन्दिर का निर्माण हुआ।
- एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण राष्ट्रकूटों ने किया।
- दक्षिण भारत में नायनार संतों ने पल्लव काल में शैव धर्म का प्रचार-प्रसार किया।
- तन्जौर में राजराजेश्वर शैव मन्दिर का निर्माण चोल शासक राजाराम प्रथम ने करवाया था।
- चोलशासक राजेन्द्र ने बृहदेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया था।
- 'वामन पुराण' में शैव सम्प्रदाय की संख्या चार बताई गई है, जो इस प्रकार हैं— (i) शैव, (ii) पाशुपात, (iii) कापालिक तथा (iv) कालामुख।
- शैवों का सर्वाधिक प्राचीन सम्प्रदाय पाशुपत सम्प्रदाय है। पाशुपत सम्प्रदाय का विवरण महाभारत में मिलता है। इसके संस्थापक नकुलीश या लकुलीश थे। इसके अनुयायियों को पंचाभिक कहा जाता था। इस सम्प्रदाय के तीन अंग थे—(i) पति (स्वामी), (ii) पशु (आत्मा) तथा (iii) पाश (वचन)। इस सम्प्रदाय का प्रमुख सैद्धान्तिक ग्रंथ पाशुपत सूत्र है। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत पाँच पदार्थों को स्वीकार किया गया है, जो इस प्रकार हैं—कार्य, कारण, योग, विधि तथा दुःखांत। इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित नेपाल स्थित काठमाण्डू में पशुपतिनाथ का मन्दिर है।
- कापालिक सम्प्रदाय के इष्टदेव भैरव थे। इस सम्प्रदाय का मुख्य केन्द्र श्रीशैल था, जिसका प्रमाण भवभूति रचित मालतीमाधव नामक पुस्तक में मिलता है। इस सम्प्रदाय के लोगों को शिव पुराण में महाव्रतधर कहा गया है। इस सम्प्रदाय के लोग नर-कपाल में भोजन, जल और सुरापान करते हैं।
- लिंगायत सम्प्रदाय दक्षिण भारत में प्रचलित था। इस सम्प्रदाय को जंगम तथा वीरशिव सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता था। इस सम्प्रदाय के लोग शिवलिंग की उपासना करते थे। इस सम्प्रदाय की स्थापना बारहवीं शताब्दी में हुई थी। इसके प्रवर्तक अल्लभ प्रभु थे। इस सम्प्रदाय के अधिकार साहित्य कन्नड़ भाषा में हैं।

- कश्मीरी शैव सम्प्रदाय का विकास कश्मीर में हुआ था। इसके प्रवर्तक वसुगुप्त थे। इस सम्प्रदाय को त्रिक, स्पंद तथा प्रत्यभिज्ञा सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है।
- नाथ सम्प्रदाय की स्थापना दसवीं शताब्दी में हुई थी। इसके प्रवर्तक मत्स्येन्द्रनाथ थे।
- विदेशी यात्री मेगास्थनीज ने शिव को डायोनिसस कहा है।
- अथर्ववेद में शिव को सहस्त्राक्ष कहा गया है।
- गुण्डफर्न शासक के कुछ सिक्कों पर त्रिशूल और जटाधारी शिव का चित्र उत्कीर्ण है।

11. मगध राज्य का उत्कर्ष

- मगध का नाम सर्वप्रथम यजुर्वेद और अथर्ववेद में मिलता है।
- मगध राज्य की स्थापना बृहद्रथ ने की थी। मगध के प्रथम राजवंश 'बृहद्रथ राजवंश' था, जिसका संस्थापक बृहद्रथ था।
- मगध की राजधानी गिरिव्रज अथवा वसुमतिनगर की स्थापना बृहद्रथ के पिता वसु ने की थी।
- जरासंध का पिता बृहद्रथ था।
- बृहद्रथ वंश का अन्तिम शासक निपुंजय था। निपुंजय की हत्या उसके मन्त्री पुलिक ने की थी।
- बिम्बिसार हर्यंक वंश का संस्थापक नहीं था, क्योंकि महावंश में कहा गया है कि उसके पिता ने 15 वर्ष की आयु में ही उसका राजतिलक कर दिया था। हर्यंक वंश की उत्पत्ति के सम्बन्ध में निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं है। बिम्बिसार हर्यंक वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक था। इसे मगध साम्राज्य की महत्ता का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है। डॉ० मजूमदार के अनुसार बिम्बिसार ने हर्यंक वंश की स्थापना की थी। (NCERT Book के अनुसार, हर्यंक वंश की स्थापना बृहद्रथों को परास्त करने के बाद बिम्बिसार द्वारा मगध में की गयी थी।)
- बिम्बिसार के पिता का नाम भटीय या भट्टीय था। तिब्बतवासी उसे महापद्म कहते हैं। पुराणों के अनुसार उनका नाम क्षेमजित, हेमजित क्षात्रौज या क्षेत्रोज था।
- बिम्बिसार मगध की राजगद्दी पर 545 ई० पू० में बैठा। उसने वैवाहिक सन्धियों और विजय की अपनी नीति से मगध के मान और यश को बढ़ाया। बिम्बिसार ने मगध की राजधानी राजगृह बनाई।
- बिम्बिसार ने तीन विवाह किए—प्रथम पत्नी कोसलराज की पुत्री व प्रसेनजित की बहन कोसलदेवी, दूसरी पत्नी वैशाली के राजा चेतक की सात पुत्रियों में सबसे छोटी पुत्री राजकुमारी चेल्लना, तीसरी पत्नी पंजाब के मद्र के राजा की पुत्री खेमा या क्षेमभद्रा। तिब्बत के एक लेखक का मत है कि बिम्बिसार की एक और पत्नी वासवी थी, जिसने बिम्बिसार को अजातशत्रु द्वारा बन्दी बनाये जाने पर कारागार में उसे भोजन देकर उसके प्राण बचाए। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि वासवी चेल्लना ही थी।
- महावंश में कहा गया है कि बिम्बिसार ने 52 वर्षों तक शासन किया। डॉ० स्मिथ के अनुसार बिम्बिसार ने 28 वर्षों तक शासन किया।
- बिम्बिसार का उपनाम श्रेणिक था।
- बिम्बिसार का राजवैद्य जीवक था।
- बिम्बिसार ने अंग राज्य को अपने राज्य में मिला लिया था।
- काशी ग्राम बिम्बिसार को दहेज में प्रथम पत्नी कोसलराज की पुत्री कोसल देवी से प्राप्त हुआ था। काशी ग्राम का राजस्व एक लाख मुद्राएँ था।
- बिम्बिसार के राज्य में 80000 गाँव थे और उनका क्षेत्रफल लगभग 2700 वर्ग मील था।
- बिम्बिसार के उच्चाधिकारी (राजभट) चार श्रेणियों में विभक्त थे—(i) सभात्थक (जो सामान्य कार्यों की देखरेख करते थे।), (ii) सेनानायक महामात्त (जो सेना के अधिकारी थे), (iii) वोहारिक महामात्त (जो न्यायाधीश थे), और (iv) महामात्त (जो उत्पादन कर इकट्ठा करते थे)
- बौद्ध साहित्य के अनुसार बिम्बिसार ने बौद्ध धर्म अपनाया। ब्राह्मणों का कथन था कि बिम्बिसार ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। जैन साहित्य 'उत्तरध्यानसूत्र' के अनुसार, बिम्बिसार जैन धर्म का अनुयायी था। बिम्बिसार के धर्म के विषय में इतिहासकारों में कोई सहमति नहीं है।

- बिम्बिसार की हत्या उसके पुत्र अजातशत्रु ने कर दी और वह 493 ई० पू० में मगध की राजगद्दी पर बैठा। अजातशत्रु ने महात्मा बुद्ध के चचेरे भाई देवदत्त के बहकावे में आकर अपने पिता की हत्या की थी। अजातशत्रु का उपनाम कूणिक था। अजातशत्रु पितृहन्ता के नाम से इतिहास में कुख्यात है।
- अजातशत्रु ने कोशल नरेश प्रसेनजित की पुत्री वजीरा के साथ विवाह किया।
- अजातशत्रु ने 32 वर्षों तक शासन किया। इसके राज्य-काल में हर्यंक राजवंश अपने गौरव के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा। यह मगध के प्रभुत्व का संस्थापक था।
- जैन लेखकों के अनुसार अजातशत्रु जैन मतावलम्बी था। लेकिन बौद्ध धर्मावलम्बी अजातशत्रु को बौद्ध भी बताते थे। अजातशत्रु के शासनकाल में राजगृह की सप्तपर्णि गुफा में 483 ई० पू० में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था।
- अजातशत्रु का मन्त्री वस्सकार विशिष्ट कूटनीतिज्ञ (भारतीय मैक्यावेली) के रूप में बहुत प्रसिद्ध था, उसी के प्रयत्न से वैशाली के लिच्छिवियों पर अजातशत्रु को विजय प्राप्त हुई थी। इस युद्ध में अजातशत्रु ने 'रथ मूसल' तथा 'महाशिला कंटक' हथियारों का प्रयोग किया था।
- अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदयिन ने 461 ई० पू० (NCERT Book के अनुसार 475 ई० पू०) में कर दी और वह मगध की राजगद्दी पर बैठा।
- उदयिन ने पाटलिपुत्र या कुसुमपुर नगर की स्थापना की और अपनी राजधानी बनाई।
- उदयिन जैन धर्म का अनुयायी था।
- उदयिन के पश्चात् अनिरुद्ध, मुंडक और नागदशक (दर्शक) ने क्रमशः 412 ई० पू० तक शासन किया।
- हर्यंक वंश के अन्तिम राजा नागदशक (दर्शक) को शिशुनाग नामक एक अमात्य ने पदच्युत कर मगध की राजगद्दी पर अधिकार कर लिया और 'शिशुनाग' नामक नवीन वंश की नींव डाली।
- शिशुनाग ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से हटाकर वैशाली बनाई।
- शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक या काकवर्ण था।
- कालाशोक ने वैशाली के स्थान पर पुनः पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया।
- कालाशोक के शासनकाल में ही वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति आयोजित की गई थी।
- कालाशोक की मृत्यु 366 ई० पू० में हुई थी। कालाशोक के उत्तराधिकारियों ने उसकी मृत्यु के पश्चात् 344 ई० पू० (22 वर्ष तक) तक शासन किया। नंदिवर्द्धन (महानंदिन) शिशुनाग वंश का अंतिम शासक था।
- नंदवंश का संस्थापक महापद्म नन्द था, जिसने शिशुनाग वंश का अन्त कर नंद वंश की नींव डाली।
- महापद्म नन्द मगध का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा था। पुराणों में महापद्म नन्द को 'एक छत्र पृथ्वी का राजा', 'एकराट', 'भार्गव', 'सर्वक्षत्रान्तक', 'द्वितीय परशुराम' आदि उपाधियों से अलंकृत किया गया है।
- पुराणों तथा बौद्ध ग्रंथों में महापद्म नन्द के आठ उत्तराधिकारियों (पण्डुक, पण्डुमति, भूतपाल, राष्ट्रपाल, गोविंद शांक, दासिद्धक, कैवर्त तथा घनानन्द) का उल्लेख है।
- नंद वंश का अंतिम राजा घनानन्द था। घनानन्द सिकन्दर महान का समकालीन था। इसके शासनकाल में सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया था।
- ग्रीक लेखकों ने घनानन्द को 'अग्रमीज' एवं 'जैन्द्रमीज' कहा है।
- नन्द साम्राज्य का महान सेनापति राक्षस था।
- नन्दवंशीय राजा घनानन्द ने एक प्रतिभाशाली ब्राह्मण का अपमान किया था, जो कालान्तर में उसके विनाश का कारण बना, उसका नाम विष्णुगुप्त या कौटिल्य या चाणक्य था।
- घनानन्द को चन्द्रगुप्त मौर्य ने युद्ध में पराजित किया और मगध पर एक नये राजवंश 'मौर्य वंश' की स्थापना की।

12. सिकन्दर

- सिकन्दर का जन्म 356 ई० पू० में हुआ था। इसके पिता फिलिप मकदूनिया के राजा थे।
- फिलिप मकदूनिया का शासक 359 ई० पू० में बना। इसकी हत्या 329 ई० पू० में कर दी गई।

- भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान के हखामनी वंश के राजाओं ने किया था।
- हखामनी वंश का संस्थापक कुरुष था, जिसने जेड्रोसिया के रेगिस्तानी रास्ते से होते हुए भारत पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया था।
- कुरुष के उत्तराधिकारियों में प्रमुख दारयवहु था, जिसे भारत पर आक्रमण करने में प्रथम सफलता मिली।
- दारयवहु के भारत-विजय के अभियान की सफलता का उल्लेख बेहिस्तून, पर्सिपोलिस एवं नक्शे रुस्तम अभिलेखों में मिलता है।
- हेरोडोटस के अनुसार, भारतीय भू-भागों को जीतने के बाद विजित क्षेत्र फारस साम्राज्य का बीसवाँ प्रान्त बना।
- दारयवहु तृतीय को सिकन्दर द्वारा पराजित कर दिये जाने पर भारत पर से ईरानी अधिकार समाप्त हो गया।
- ईरानी व फारसी रजतमुद्रा सिग्नोई के आधार पर भारत में सर्वप्रथम मुद्रा प्रचलन का कार्य प्रारम्भ हुआ।
- कौशाम्बी की खुदाई से मिली ताम्र मुद्राओं को सिग्नोई मुद्रा से पहले का माना जाता है।
- भारत में ईरानी आक्रमण से खरोष्ठी लिपि का प्रचलन हुआ। खरोष्ठी लिपि के स्रोत के रूप में पारसीक एरेमाइक लिपि को माना जाता है।
- अशोक ने चट्टानों पर अभिलेख खुदवाने की प्रथा एकमेनिड शासकों से ली थी।
- मौर्यकाल में दण्ड के रूप में सर घुटवाने की प्रथा, स्त्री शरीर रक्षकों की नियुक्ति, मन्त्रियों के कक्ष में हर समय अग्नि प्रज्जवलित रखने आदि की व्यवस्था पारसियों से ग्रहण की गई थी।
- ईरानी तथा पारसिक आक्रमणों के फलस्वरूप भारतीय राजाओं में साम्राज्यवादी विचारधारा की भावना प्रबल हुई।
- ईरानी आक्रमण के बाद भारत को यूनानी आक्रमण का सामना करना पड़ा।
- यूनानी आक्रमणकारी सिकन्दर था।
- सिकन्दर 329 ई० पू० में मकदूनिया का शासक बना था और 326 ई० पू० में भारत पर आक्रमण किया था।
- सिकन्दर अरस्तू का शिष्य था।
- भारत-विजय अभियान के तहत सिकन्दर ने 326 ई० पू० में बैक्ट्रिया को जीतने के बाद काबुल होते हुए हिन्दुकुश पर्वत को पार किया। सिकन्दर खैबर दर्रा पार करके भारत में आया था।
- सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी के तट पर पहुँचकर आगे बढ़ने से इंकार कर दिया।
- सिकन्दर के आक्रमण के समय तक्षशिला का शासक आम्भि था, जिसने सिकन्दर की आधीनता स्वीकार कर ली थी।
- सिकन्दर का पहला और सबसे शक्तिशाली प्रतिरोध पोरस राजा ने किया था। सिकन्दर और राजा पोरस के बीच झेलम नदी के किनारे वितस्ता का युद्ध हुआ था। इस युद्ध में पोरस की हार हुई थी। इस युद्ध को हाइडेस्पीज का युद्ध भी कहा जाता है। सिकन्दर ने राजा पोरस की बहादुरी और साहस से खुश होकर जीता हुआ राज्य वापस कर दिया था।
- सिकन्दर ने दो नगरों की स्थापना की थी— पहला नगर 'निकैया' अर्थात् 'विजय नगर' विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में तथा दूसरा नगर 'बुकाफेला' अपने प्रिय घोड़े के नाम पर स्थापित किया।
- सिकन्दर स्थल-मार्ग द्वारा 325 ई० पू० में भारत लौटा।
- सिकन्दर विजित भारतीय प्रदेशों को सेनापति फिलिप को सौंपकर अपने देश की ओर लौट गया। नियारकस की अध्यक्षता में सेना का एक भाग जलमार्ग से स्वदेश की ओर रवाना हुआ था।
- सेल्यूकस निकेटर, सिकन्दर का सेनापति था।
- सिकन्दर की मृत्यु 323 ई० पू० में बेबीलोन में 33 वर्ष की आयु में हुई थी।
- सिकन्दर ने समुद्र तट पर अलेक्जैंड्रिया नामक नगर बसाया था।
- सिकन्दर ने हखमनी वंश को नष्ट कर दिया था।
- भारतीयों ने यूनानियों से 'क्षत्रप प्रणाली' और 'मुद्रा निर्माण' की कला को ग्रहण किया।
- भारत में गांधार शैली की कला यूनानी प्रभाव का परिणाम है।

13. मौर्य साम्राज्य

- मौर्य राजवंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म 345 ई० पू० में हुआ था। इनकी माता का नाम मुरा था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए 'वृषल' उपनाम मुद्राराक्षस नामक ग्रंथ में मिलता है। 'वृषल' शब्द अर्थ है—निम्न कुल। 'चन्द्रगुप्त' मौर्य को ब्राह्मण साहित्य में शूद्र कुल, बौद्ध एवं जैन ग्रंथ में क्षत्रिय कुल तथा रोमिला थापर ने वैश्य कुल में उत्पन्न माना है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य की 'चन्द्रगुप्त' संज्ञा का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से मिलता है। यूनानी ग्रंथों में चन्द्रगुप्त मौर्य को सैन्ड्रोकोट्स कहा गया है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्दराज वंश के राजा घनानन्द को युद्ध में पराजित करके मगध में मौर्यवंश की स्थापना की थी। चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई० पू० (NCERT Book के अनुसार, 324 ई०पू०) में मगध की राजगद्दी पर बैठा।
- चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने राजा घनानन्द को युद्ध में हराया था। चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु तथा प्रधानमन्त्री थे। इनका दूसरा नाम कौटिल्य या विष्णुगुप्त था। चाणक्य ने तीन मौर्य राजाओं के शासन का संचालन किया। चाणक्य का जन्म तक्षशिला में हुआ था। वृहत्कथा कोष में चाणक्य की पत्नी का नाम यशोमती मिलता है। चाणक्य ने 'अर्थशास्त्र' नामक पुस्तक की रचना की।
- सेल्यूकस निकेटर को चन्द्रगुप्त मौर्य ने 305 ई० पू० में हराया। सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में मेगस्थनीज को राजदूत के रूप में भेजा था। सेल्यूकस ने अपनी बेटी हेलन की शादी चन्द्रगुप्त मौर्य से की थी। मेगस्थनीज ने भारत के विषय में 'इण्डिका' नामक पुस्तक की रचना की।
- चन्द्रगुप्त का साम्राज्य चार प्रान्तों में बँटा था। चन्द्रगुप्त के शासनकाल में सेना के छः अंग थे। चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में आमात्यों की संख्या अठारह थी। मेगस्थनीज द्वारा लिखित पुस्तक 'इण्डिका' के अनुसार मौर्यकाल में समाज सात भागों में बँटा हुआ था।
- केन्द्रीय शासन की सुविधा की दृष्टि से मन्त्रिपरिषद् को कई भागों में बाँटा गया था, प्रत्येक विभाग के अध्यक्ष को आमात्य कहते थे।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म को स्वीकार कर भद्रबाहु नामक जैन भिक्षु के साथ मैसूर चला गया।
- चन्द्रगुप्त की मृत्यु 297 ई० पू० (NCERT Book के अनुसार, 300 ई०पू०) में श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में उपवास द्वारा हुई थी।
- वी०ए० स्मिथ ने चन्द्रगुप्त मौर्य के बारे में लिखा है कि वही सही अर्थों में पहला ऐतिहासिक व्यक्ति था, जिसे भारत का सम्राट कहा जा सकता है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त का पुत्र बिन्दुसार था, जो 297 ई० पू० (NCERT Book के अनुसार, 300 ई०पू०) में मगध की राजगद्दी पर बैठा। बिन्दुसार अमित्रघात की उपाधि धारण कर मगध सिंहासन पर बैठा था। अमित्रघात का अर्थ है—शत्रुओं को मारने वाला।
- बिन्दुसार को एक यूनानी लेखक ने अमित्रोचेड्स, स्ट्रेबो ने अलिट्रोकेड्स तथा ग्रीक लेखक ने अमित्रघात कहा है। वायु पुराण में बिन्दुसार को भद्रसार (या वारिसार) तथा जैन ग्रंथों में सिंहसेन कहा गया है।
- बौद्ध विद्वान तारानाथ ने बिन्दुसार को सोलह राज्यों का विजेता बताया है।
- बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला में विद्रोह हुआ था, जिसको दबाने के लिए बिन्दुसार ने पहले सुशिम को और फिर अपने पुत्र अशोक को भेजा था।
- आर्य मंजूश्रीमूलकल्प के अनुसार बिन्दुसार, के राज्य का संचालन चाणक्य करता था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- बिन्दुसार के दरबार में सेल्यूकस के पुत्र और सीरिया के राजा एण्टीओकस का राजदूत डाइमेकस तथा मिस्र के शासक फिलोडेल्फस (टॉलेमी-II) का राजदूत डायोनीसियस रहते थे।
- डाइमेकस को मेगस्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- बिन्दुसार और सेल्यूकस के पुत्र और सीरिया के राजा एण्टीओकस प्रथम सोटर के बीच होने

वाली आपसी मित्रता सम्बन्धी चिट्ठी-पत्री की विचित्र कहानियाँ सुरक्षित हैं। एथीनियस के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया के शासक एण्टीओकस से मदिरा, सूखे अंजीर एवं एक दार्शनिक भेजने की प्रार्थना की थी।

- बिन्दुसार की मृत्यु 273 ई० पू० में हुई थी। इसकी मृत्यु के बाद अशोक मगध की गद्दी पर 269 ई० पू० में 99 भाइयों को मारकर बैठा। अशोक का राज्याभिषेक पाटलिपुत्र में हुआ था। अशोक ने सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात् देवानाम्पिय तथा प्रियदर्शी नामक उपाधि धारण की थी। राजा बनने से पूर्व अशोक तक्षशिला का प्रांतपति था।
- सिंहली अनुश्रुति से यह ज्ञात होता है कि अशोक अपने 99 भाइयों की हत्या कर मगध की गद्दी पर बैठा। अशोक राधागुप्त के सहयोग से मौर्य सिंहासन पर बैठा।
- कलिंग का युद्ध 261 ई० पू० में हुआ था। यह युद्ध अशोक के जीवन में एक महान परिवर्तन का सूत्रपात करता है। इस युद्ध के बारे में अशोक के 13वें अभिलेख से जानकारी मिलती है। इस युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया। अशोक के समय में कलिंग की राजधानी तोशली थी।
- अशोक के अभिलेखों को तीन (चौदह शिलालेख, दो लघु शिलालेख तथा सात स्तम्भ लेख) भागों में बाँटा गया है। साँची के स्तूप का निर्माण अशोक ने करवाया था। अशोक के सारनाथ के स्तम्भ पर चार सिंहों का शीर्ष बनाया गया है। अशोक के अधिकांश लेख लोगों द्वारा समझने हेतु प्राकृत भाषा में लिखे गये।
- अशोक ने अपने शासनकाल में तक्षशिला में हुए विद्रोह को दबाने के लिए कुणाल को भेजा था।
- मौर्य साम्राज्य में सबसे महान सम्राट अशोक को कहा जाता है। इसका कारण है—भारतीय समाज में एकता स्थापित करने पर भरसक प्रयास।
- कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार, अशोक ने कश्मीर में श्रीनगर नामक नगर को बसाया था। तिब्बती जनश्रुति के अनुसार अशोक ने नेपाल में ललितपत्तन नामक नगर की स्थापना की थी। अशोक की पुत्री चारूमति ने देवपत्तन नामक नगर को बसाया था।
- अशोक ने बौद्ध धर्म को राजधर्म बना दिया था। इसने बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु अपने पुत्र महेन्द्र तथा अपनी पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका और अपनी पुत्री चारूमति को नेपाल भेजा था। अशोक ने 'भेरीघोष' के स्थान पर 'धर्मघोष' कर दिया। अशोक के बौद्ध गुरु उपगुप्त थे। बौद्ध धर्म के पहले अशोक ब्राह्मण धर्म में विश्वास करता था। अशोक के धम्म की परिभाषा राहुलोवादसुत्त से ली गयी है। भाब्रू (वैराट) लघु शिलाभिलेख से अशोक के धम्म का उल्लेख मिलता है। बौद्ध साहित्य दिव्यावदान से मौर्य साम्राज्य के बारे में जानकारी मिलती है। अशोक की रानी तिष्यरक्षिता अशोक के बुद्ध धर्म की ओर झुकाव का विरोध करती थी।

शिलालेख

इनकी संख्या चौदह है, जो निम्न प्रकार हैं–

1. प्रथम शिलालेख–पशुबलि की निन्दा
2. द्वितीय शिलालेख–मनुष्य और पशु दोनों की चिकित्सा व्यवस्था
3. तृतीय शिलालेख–राजकीय अधिकारियों को यह आदेश दिया गया कि हर पाँच वर्ष के उपरान्त दौरे पर जाएँ तथा कुछ धार्मिक नियम बनाएँ
4. चतुर्थ शिलालेख–धर्म से सम्बन्धित शेष नियम
5. पाँचवें शिलालेख–धर्म महापात्रों की नियुक्ति
6. छठे शिलालेख–आम नियन्त्रण की शिक्षा
7. सातवें शिलालेख–अशोक की तीर्थ यात्रा
8. आठवें शिलालेख–अशोक की तीर्थ यात्रा
9. नौवें शिलालेख–सच्ची भेंट एवं सच्चे शिष्टाचार
10. दसवें शिलालेख–राजा तथा उच्च पदाधिकारी हर क्षण प्रजा के हित में सोचे
11. ग्यारहवें शिलालेख–धर्म के वरदान को सर्वोकृष्ट
12. बारहवें शिलालेख–सभी प्रकार के विचारों का सम्मान
13. तेरहवें शिलालेख–कलिंग युद्ध का वर्णन तथा अशोक का हृदय परिवर्तन
14. चौदहवें शिलालेख–जनता को धार्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।

- अशोक की मृत्यु 232 ई० पू० में हुई थी। मौर्य वंश का अन्तिम शासक बृहद्रथ (185 ई० पू० तथा NCERT Book के अनुसार, 187 ई० पू०) था, जिसकी सैनिक विद्रोह में हत्या कर दी गयी थी। मौर्य शासन लगभग 137 वर्षों (321-185 ई० पू०) तक रहा था।
- मास्की राज्यादेश में अशोक के व्यक्तिगत नाम का उल्लेख मिलता है अर्थात् सर्वप्रथम मास्की अभिलेख में अशोक का नाम अशोक मिलता है।
- अशोक ने राष्ट्रीय भाषा के रूप में पालि भाषा का तथा राष्ट्रीय लिपि के रूप में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया। अभिलेखों में ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक एवं आर्मेइक लिपियों का प्रयोग किया गया है। ग्रीक तथा आर्मेइक लिपियों का शिलालेख शार-ए-कुना (कंधार) से प्राप्त हुआ है। मानसेहरा एवं शहबाजगढ़ी से खरोष्ठी लिपि में शिलालेख प्राप्त हुए हैं। खरोष्ठी लिपि दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाती थी। मौर्यकालीन इतिहास के बारे में सर्वाधिक जानकारी अभिलेखों द्वारा मिलती है।
- शिलालेख की कुल संख्या चौदह है तथा स्तम्भ लेख की कुल संख्या सात है।
- अशोक ने प्रजा के नैतिक विकास के लिए जिन आचारों की संहिता के पालन की बात कही, उसे ही अभिलेखों में धम्म कहा गया।
- लोरिया नन्दनगढ़ से प्राप्त अशोक के अभिलेख के निचले भाग में मयूर का चिह्न अंकित है। अशोक के कौशाम्बी से प्राप्त अभिलेख को 'रानी का अभिलेख' कहा जाता है। अशोक का सबसे छोटा स्तम्भ लेख रूम्मिनदेई का है। अशोक का सबसे लम्बा स्तम्भलेख सातवाँ है। अशोक के कुल तीन गुहालेख अब तक मिले हैं। अशोक ने आजीवक सम्प्रदाय के लिए चार गुहाओं का निर्माण करवाया था। संकिसा स्तम्भ के शीर्ष पर हाथी का, रूम्मिनदेई स्तम्भ के शीर्ष पर घोड़े का तथा रामपुरवा स्तम्भ के शीर्ष पर सिंह का चित्र बना है।
- अशोक के महास्थान लेख से अन्न भंडार के विषय में जानकारी मिलती है।
- 1837 ई० में अशोक के लेखों को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा।
- मौर्यकालीन अधिकारियों के धर्म प्रचार यात्रा को अनुसन्धान कहा गया है।
- राज्य के सप्तांग सिद्धान्त को चाणक्य ने प्रतिपादित किया था।
- मेगस्थनीज ने कहा कि भारतीय लिखने की कला को नहीं जानते।
- अशोक के समय में प्रान्तों को चक्र कहा जाता था। प्रान्तों को आहार या विषय में बाँटा गया था।
- मौर्यकाल में जिले का प्रशासन स्थानिक के हाथों में रहता था। स्थानिक समाहर्त्ता के अधीन काम करते थे। गोप स्थानिक के अधीन होते थे। गोप का अधिकार क्षेत्र गाँव होते थे। स्थानिक, गोप एवं ग्राम अधिकारियों के कार्यों की जाँच प्रदेष्टि करता था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। गाँव के मुखिया को ग्रामिक कहा जाता था।
- साम्राज्य का सर्वोच्च न्यायाधीश सम्राट होता था। जनपदीय न्यायालय के न्यायाधीश को राजुक कहा जाता था। अशोक ने अपने शासनकाल में पच्चीस बार बन्दियों को मुक्त किया था।
- मौर्य साम्राज्य में पाटलिपुत्र के नगर शासन प्रबन्ध को जानने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत मेगस्थनीज द्वारा लिखित पुस्तक 'इण्डिका' है। मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र को पोलिब्रोथा कहा है।
- मेगस्थनीज ने भारतीय समाज का वर्गीकरण सात भागों में किया है।

14. ब्राह्मण साम्राज्य

(i) शुंग वंश

- मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या करके पुष्यमित्र शुंग ने शुंग वंश की स्थापना 185 ई० पू० में (NCERT Book के अनुसार, 187 ई०पू०) की थी।
- पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण जाति का था तथा यह ब्राह्मण धर्म को मानता था। यह बौद्ध धर्म का प्रबल विरोधी था।
- पुष्यमित्र शुंग को मगध में प्रथम ब्राह्मण राज्य स्थापित करने एवं ब्राह्मण धर्म के पुनरोद्धार का श्रेय दिया जाता है। बेसनगर का गरूड़ स्तम्भ तत्कालीन पहला प्रस्तर स्तम्भ था, जो ब्राह्मण धर्म से सम्बन्धित था। भरहूत स्तूप का निर्माण पुष्यमित्र शुंग ने करवाया था।

- पुष्यमित्र शुंग ने दो बार अश्वमेध यज्ञ कराये। इसके लिए पतंजलि ने अश्वमेध यज्ञ कराये।
- शुंग शासकों ने विदिशा को अपने राज्य की राजधानी बनाया।
- अशोक द्वारा निर्मित सांची के स्तूप का आकार शुंग वंश के शासकों ने दोगुना करवाया।
- पुष्यमित्र शुंग दो बार यवनों से लड़ा। प्रथम युद्ध में यवन सेना का नेतृत्व डेमेट्रियस तथा द्वितीय युद्ध में मेनाण्डर ने किया था। द्वितीय यवन युद्ध में शुंग सेना का प्रतिनिधित्व वसुमित्र ने किया था।
- शुंग वंश काल में रामायण, महाभारत तथा मनुस्मृति की रचना हुई थी।
- पुष्यमित्र शुंग की मृत्यु 148 ई० पू० में हुई थी। पुष्यमित्र के बाद अग्निमित्र राजगद्दी पर बैठा। शुंग वंश का अन्तिम शासक देवभूति था, जिसकी हत्या वसुदेव ने की थी। शुंग वंश का 112 वर्षों तक राज्य रहा।

(ii) कण्व वंश

- शुंग वंश के शासक देवभूति की हत्या करके वासुदेव ने कण्व वंश (73 ई० पू० तथा NCERT Book के अनुसार, 75 ई० पू०) की स्थापना की थी।
- कण्व वंश में चार राजा हुए—(i) वसुदेव, (ii) भूमिमित्र, (iii) नारायण तथा (iv) सुशर्मण।
- कण्व वंश का शासन 45 वर्षों तक रहा। कण्व वंश का अन्तिम शासक सुशर्मण था।

(iii) सातवाहन वंश

- सिमुक ने कण्व वंश के शासक सुशर्मा की हत्या करके सातवाहन वंश (60 ई० पू०) की स्थापना की थी। सिमुक को सिंधुक, शिशुक, शिप्रक तथा बृषल भी कहा जाता है। सातवाहन वंश का दूसरा नाम आन्ध्र वंश भी है।
- सिमुक के बाद उसका छोटा भाई कृष्ण (कान्ह) राजगद्दी पर बैठा। सातवाहन वंश के प्रमुख शासक सिमुक, शातकर्णि, गौतमी पुत्र शातकर्णि, वासिष्ठीपुत्र, पुलुमावी तथा यज्ञ श्री शातकर्णि आदि थे।
- शातकर्णि ने दो अश्वमेध यज्ञ एवं एक राजसूय यज्ञ किये। शातकर्णि प्रथम ने शातकर्णि, सम्राट दक्खिनापथपति तथा अप्रतिहतचक्र की उपाधियाँ धारण की थीं। शातकर्णि ने प्रतिष्ठान को अपनी राजधानी बनाया।
- सातवाहन वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक गौतमी पुत्र शातकर्णि था। गौतमी पुत्र शातकर्णि ने वेणकटक स्वामी, राजाराज, महाराज तथा स्वामी की उपाधियाँ धारण की थीं। वेणकटक नामक नगर की स्थापना गौतमी पुत्र शातकर्णि ने की थी। 'त्रि-समुद्र तोय-पितावाहन' गौतमीपुत्र शातकर्णि को कहा जाता है। शून्यवाद के संस्थापक एवं माध्यमिक सम्प्रदाय के प्रवर्तक नागार्जुन गौतमी पुत्र शातकर्णि के समकालीन थे।
- श्री यज्ञ शातकर्णि (165-195 ई०) सातवाहन वंश के महान शासकों में से अंतिम था।
- भूगोलवेत्ता टॉलेमी ने वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी को पोलोमैओस कहा है। वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी ने नवनगर स्वामी, महाराज तथा दक्षिणापथेश्वर की उपाधियाँ धारण की थीं। वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी के समय में अमरावती बौद्ध स्तूप के चारों ओर बेष्टिनी का निर्माण कर स्तूप को सम्बर्द्धित किया गया था।
- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत थी। सातवाहन ब्राह्मी लिपि का प्रयोग करते थे।
- सातवाहन काल में सप्तशतक, कथा सरित सागर तथा वृहत कथा आदि ग्रंथों की रचना हुई थी।
- सातवाहनवंशी राजकुमारों को कुमार कहा जाता था।
- सातवाहन काल में सरकारी आय के महत्वपूर्ण साधन भूमि कर, नमक कर तथा न्याय शुल्क कर था।
- सातवाहन काल में प्रशासन के महत्वपूर्ण अधिकारी अमात्य, महामात्र तथा भंडारगारिक आदि थे।
- सातवाहन काल में तीन प्रकार के सामंत (महारथी, महाभोज तथा महासेनापति) थे।
- सातवाहन काल में अधिकतर सिक्के सीसे के थे।
- सातवाहन काल में व्यापारी को नैगम कहा जाता था। व्यापारियों के काफिले के प्रमुख को सार्थवाह कहा जाता था। व्यापार निगम के प्रमुख को श्रेष्ठिक कहा जाता था।
- सातवाहनों ने ब्राह्मणों को सर्वप्रथम भूमिदान एवं जागीर देने की प्रथा का आरम्भ किया था।

- सातवाहन शासक हाल, जो स्वयं एक श्रेष्ठ कवि तथा साहित्यकार था, उसने प्राकृत भाषा में 'गाथा सप्तशती' नामक एक काव्य ग्रंथ की रचना की थी। हाल राजा के सेनापति विजयानन्द ने लंका को अपने स्वामी के लिए विजित किया था। हाल राजा ने लंका के शासक की पुत्री लीलावती से विवाह किया था।

(iv) चेदि वंश

- चेदि वंश का अधिकार कलिंग पर था।
- चेदि वंश के महामेघवाहन, खारवेल तथा कुदेप प्रमुख शासक थे। चेदि वंश का महान शासक खारवेल था।
- खारवेल शासनकाल की जानकारी हाथी गुम्फा नामक गुफा शिलालेख से प्राप्त होती है। खारवेल जैन धर्म का अनुयायी था। खारवेल ने मगध तथा अंग राज्य को विजित करने के बाद वहाँ से प्रथम जैन तीर्थंकर की मूर्ति को वापस लाया था। खारवेल ने जैन भिक्षुकों के लिए अनेक गुफाओं का निर्माण करवाया था। खारवेल शासक ने ब्राह्मणों को सोने का कल्पवृक्ष भेंट किया था। खारवेल ने 35 लाख रजत मुद्राओं की लागत से विजय प्रसाद नामक एक महल बनवाया था। खारवेल ने लकड़ी द्वारा निर्मित तेरह सौ वर्ष पुरानी केतुभद्र की प्रतिमा के साथ एक जुलूस निकाला, इसके पूर्व यह प्रतिमा पृथु-दक-कर्म नामक शहर में स्थापित थी। खारवेल ने ऐरा, महामेघवाहन, कलिंगाधिपति, आर्य महाराज, श्री खारवेल तथा राजाश्री की उपाधियाँ धारण की थीं। खारवेल को शांति एवं समृद्धि का सम्राट एवं धर्मराज के रूप में जाना जाता है।

(v) वाकाटक वंश

- वाकाटक वंश का संस्थापक विंध्यशक्ति था। विंध्यशक्ति को शिलालेखों में वाकाटक वंशकेतु कहा गया है। विंध्यशक्ति विष्णु बुद्धि गोत्र का ब्राह्मण था।
- वाकाटक राजवंश की स्थापना लगभग 250 ई० में विंध्यशक्ति ने की थी।
- विंध्यशक्ति का पुत्र एवं उत्तराधिकारी हरितिपुत्र प्रवरसेन था, जिसे 'सम्राट' की पदवी मिली थी।
- प्रवरसेन को सात प्रकार के यज्ञ (अग्निष्टोम, अप्तोर्यम, वाजपेय, ज्योतिष्टोम, वृहस्पतिव, शड्यस्क, अश्वमेध) करने का श्रेय प्राप्त है। प्रवरसेन ने चार अश्वमेध यज्ञ किये।
- गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक वंश के नरेश रुद्रसेन द्वितीय से किया था।
- प्रभावती के पुत्र दामोदर सेन ने प्रवरसेन की उपाधि धारण की थी। प्रवरपुर नामक नगर की स्थापना दामोदर सेन ने की थी। 'सेतुबंध' नामक ग्रंथ की रचना दामोदर सेन ने की थी। 'सेतुबंध' ग्रंथ को रावणवहो भी कहा जाता है।
- वाकाटक वंश के खोये हुए भाग्य को निर्मित करने वाला पृथ्वीसेन द्वितीय को कहा जाता है। पृथ्वीसेन द्वितीय ने अपनी राजधानी पद्मपुर में बनायी।
- सर्वसेन ने वत्स गुल्मा को अपनी राजधानी बनाकर धर्ममहाराज की उपधि धारण की थी। सर्वसेन को प्राकृत ग्रंथ 'हरिविजय' एवं 'गाथासप्तशती' के कुछ अंशों का लेखक माना जाता है।
- वाकाटकों की वत्स-गुल्मा या अमुख्य शाखा का संस्थापक सर्वसेन (प्रवरसेन प्रथम का पुत्र) था।
- सर्वसेन के उत्तराधिकारी विंध्यसेन द्वितीय ने विंध्यशक्ति द्वितीय एवं धर्ममहाराज की उपाधि धारण की थी।
- वाकाटक वंश के अधिकांश शासक शैव धर्म के अनुयायी थे।
- रुद्रसेन द्वितीय वैष्णव धर्म का अनुयायी था।
- हरिषेण के शासनकाल में वाकाटक साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था।
- कलचूरि वंश ने वाकाटक वंश का अन्त कर दिया।

15. मौर्योत्तरकालीन भारत पर विदेशी आक्रमण

- मौर्योत्तर काल में विदेशी आक्रमणकारियों में बैक्ट्रियन ग्रीक शासकों का नाम आता है। बैक्ट्रियन ग्रीक शासकों को यवन के नाम से भी जाना जाता है।
- बैक्ट्रिया हिन्दुकुश पर्वत एवं ऑक्सस के मध्य में था।

- बैक्ट्रिया में यूनानी बस्तियों का प्रारम्भ एकेमेनिडकाल (लगभग 5वीं शताब्दी ई० पू०) में हुआ था।
- सिकन्दर की मृत्यु के बाद सेल्यूकस ने बैक्ट्रिया की सीमाओं का विस्तार किया।
- सेल्यूकस का उत्तराधिकारी एण्ट्योकस प्रथम था, जिसने सोटर या सेवियर की उपाधि प्राप्त की। एण्ट्योकस प्रथम के डायोडोटस प्रथम क्षत्रप ने उसके खिलाफ विद्रोह कर स्वतन्त्र बैक्ट्रिया राज्य की स्थापना की। ऐण्ट्योकस द्वितीय को थीसस या देवता कहा जाता था। डायोडोटस प्रथम के बाद उसका पुत्र डायोडोटस द्वितीय राजा हुआ। इसकी हत्या यूथीडेमस सरदार ने कर दी।
- यूथीडेमस की मृत्यु के बाद उसका पुत्र डेमेट्रियस राजा बना। सिकन्दर के बाद डेमेट्रियस पहला यूनानी शासक था, जिसकी सेना भारतीय सीमा में प्रवेश पा सकी। डेमेट्रियस ने साकल को अपनी राजधानी बनाया। डेमेट्रियस के भारतीय अभियान में व्यस्त होने के कारण यूक्रेटाइडीज ने बैक्ट्रिया पर अधिकार कर लिया।
- लेखक जस्टिन के अनुसार यूक्रेटाइडीज ने भारत की भी विजय की। स्ट्रैबो ने यूक्रेटाइडीज को एक हजार नगरों का स्वामी कहा है।
- यूक्रेटाइडीज ने विजित भारतीय प्रदेशों के प्रशासन के लिए तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया।
- भारतीय यवन साम्राज्य दो कुलों (डेमेट्रियस तथा यूक्रेटाइडीज) में विभाजित हो गया।
- बौद्ध साहित्य 'मिलिन्दपन्हो' में मिनाण्डर को मिलिन्द कहा गया है। मिनाण्डर डेमेट्रियस कुल से सम्बन्धित था। मिलिन्दपन्हो में मिनाण्डर एवं नागसेन बौद्ध भिक्षु के मध्य सम्पन्न वाद-विवाद एवं जिसके परिणामस्वरूप मिनाण्डर ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया, की कथा का वर्णन है। मिनाण्डर को बौद्ध धर्म में बौद्ध भिक्षु नागसेन ने दीक्षित किया था।
- मिनाण्डर की राजधानी साकल थी।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख उत्कीर्ण करवाने एवं सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी करवाने का श्रेय यवनों को है। यूनानी भाषा में सिक्के के लिए द्रम्भ शब्द का प्रयोग किया गया है।
- एण्टियालकिडास के राजदूत हेलियोडोरस ने भागवत धर्म को स्वीकार किया। बेसनगर में गरुड़ध्वज की स्थापना हेलियोडोरस ने की थी।
- ज्योतिष पोलिश एवं रोमन सिद्धान्तों को भारतीयों ने यूनानियों से सीखा। भारतीयों ने यूनानियों से निश्चित तिथि से काल गणना की प्रथा, सम्वतों का प्रयोग, सप्ताह के सात दिनों का विभाजन, विभिन्न ग्रहों के नाम आदि को जाना।
- पहलव का वास्तविक संस्थापक मिथ्रेडेट्स था। मिथ्रेडेट्स यूक्रेटाइडीस का समकालीन था। पहलव को पार्थियन के नाम से जाना जाता है। भारत का प्रथम पार्थियन शासक माउस था। सिक्कों पर खरोष्ठी लिपि में माउस का नाम मोय मिलता है।
- पार्थियन शासकों में सर्वाधिक ख्यातिलब्ध शासक गोदोफर्निस था। तख्तेबही अभिलेख में गोदोफार्निस का नाम गुदण्हर अंकित है। गोदोफर्निस के शासनकाल में प्रथम ईसाई धर्म प्रचारक सेंट थॉमस भारत आया था। सेंट थॉमस की हत्या मद्रास के समीप म्यालपुर में हुई थी।
- भारतीय पार्थियन सत्ता को यू-ची जाति के कबीलों ने तहस-नहस कर दिया। यू-ची जाति के कबीलों द्वारा शकों को मध्य एशिया से भगाया गया और भागते हुए शक लोग बैक्ट्रिया एवं पार्थिया पर आक्रमण करते हुए भारत पहुँचे।
- शक मध्य एशिया के एक पर्यटनशील जाति के लोग थे।
- शकों के विषय में प्रारम्भिक जानकारी दारा के नक्शी रुस्तम प्रस्तर लेख से मिलती है।
- चीनी ग्रंथ में शक को सई व सईवांग कहा गया है। भारतीय साहित्य में शकों के प्रदेश को शकद्वीप व शकस्थान कहा गया है।
- भारत के पश्चिमोत्तर प्रान्त में बसने वाले शकों ने अपने को क्षत्रप कहा। 'क्षत्रप' शब्द ईरानी शब्द 'क्षत्रपवन' (प्रान्तीय गवर्नर) से लिया गया है।
- भारतीय शकों की दो शाखाएँ (उत्तरी क्षत्रप तथा पश्चिमी क्षत्रप) भारत पर शासन कर रही थी। तक्षशिला एवं मथुरा के शक शासक उत्तरी क्षत्रप तथा नासिक एवं उज्जैन के शक शासक पश्चिमी क्षत्रप कहलाते थे।

- तक्षशिला का प्रथम शक क्षत्रप शासक मोग या मोयेज था। गांधार में प्रथम शक राज्य की स्थापना मोग या मोयेज ने की थी। मथुरा के सिंह अभिलेख से राजूल या राजवुल के प्रथम शक क्षत्रप होने का उल्लेख मिलता है।
- नासिक में शासन करने वाला प्रथम क्षहरातवंशी शक क्षत्रप भूमक था। भूमक के बाद नहपान राजगद्दी पर बैठा। नहपान ने राजा की उपाधि धारण की। नहपान के समय में भड़ौचा का बन्दरगाह प्रसिद्ध था। गौतमीपुत्र शातकर्णि ने नहपान को युद्ध में परास्त कर हत्या कर दी।
- उज्जयिनी का प्रथम शकक्षत्रप शासक कार्दमवंश का चष्टन था। चष्टन के बाद उसका पौत्र रुद्रदामन राजगद्दी पर बैठा। रुद्रदामन के विषय में विस्तृत जानकारी जूनागढ़ से तथा शक सम्वत् 72 के अभिलेख से मिलती है।
- रुद्रदामन ने सातवाहन राजा शातकर्णि को दो बार पराजित किया। रुद्रदामन ने चन्द्रगुप्त मौर्य के मन्त्री द्वारा बनाये गये सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण में बहुत धन व्यय किया। सबसे अधिक विख्यात शक शासक रुद्रदामन प्रथम था।
- कार्दम वंश के अन्तिम शासक रुद्रसिंह तृतीय की हत्या चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने की थी। विक्रम सम्वत् नाम का एक नया सम्वत् 57 ई० पू० में शकों पर विजय से आरम्भ हुआ था।

16. कुषाण वंश

- कुषाण चीन के पश्चिमोत्तर प्रदेश में निवास करने वाली यू-ची जाति थी।
- यू-ची कबीले ने शकों से ताहिआ क्षेत्र को जीत लिया।
- इतिहासकार स्यू-माचियन का यह मानना है कि यू-ची कबीले के कई शुआँग (कुषाण) सर्वाधिक शक्तिशाली थे।
- यू-ची कबीले के कुजुल कैडफिसेस सरदार ने पाँच अन्य कबायली समुदायों को अपने नेतृत्व में संगठित कर उत्तर के पर्वतों को पार करता हुआ भारतीय उपमहाद्वीप की सीमा में प्रवेश किया।
- कुजुल कैडफिसेस ने हरमोयस को हराकर काबुल और कश्मीर पर अपने राज्य की स्थापना की। कुजुल कैडफिसेस ने केवल ताँबे के सिक्के ही जारी करवाये।
- कुजुल कैडफिसेस के बाद कैडफिसेस द्वितीय या विम कैडफिसेस उत्तराधिकारी बना। विम कैडफिसेस ने सोने एवं ताँबे के सिक्के जारी करवाये। विम कैडफिसेस ने अपने सिक्कों पर महाराज, राजाधिराज, महीश्वर, तथा सर्वलोकेश्वर आदि उपाधियाँ अंकित करवाई थी। विम कैडफिसेस शैवमत का अनुयायी था।
- विम कैडफिसेस के बाद कुषाण शासन की बागडोर कनिष्क ने सम्भाली।
- कनिष्क का राज्यारोहण 78 ई० में हुआ था। इसने अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) को बनाया।
- कनिष्क के राज्य की दूसरी राजधानी मथुरा थी। शक सम्वत् का प्रारम्भ सन् 78 ई० में कनिष्क ने किया था।
- कनिष्क के कश्मीर विजय का उल्लेख राजतरंगिणी नामक ग्रंथ में मिलता है। कश्मीर में कनिष्कपुर नामक नगर को कनिष्क ने बसाया।
- कनिष्क बौद्ध धर्म की महायान शाखा का अनुयायी था।
- इसके समय में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था। बौद्ध धर्म के प्रचार कार्य हेतु कनिष्क को द्वितीय अशोक भी कहा जाता है।
- कनिष्क के दरबार में महान साहित्यकार तथा कवि अश्वघोष थे, जिन्होंने बुद्धचरित एवं सूत्रालंकार की रचना की। अश्वघोष की रचनाओं की तुलना मिल्टन, गेटे, काण्ट, वॉल्टेयर आदि से की गई है। अश्वघोष द्वारा रचित बुद्धचरित की तुलना बाल्मिकी की रामायण से की जाती है। कनिष्क को बौद्ध धर्म में अश्वघोष ने दीक्षित किया था।
- कनिष्क के दरबार में महान दार्शनिक एवं वैज्ञानिक नागार्जुन थे। नागार्जुन की तुलना मार्टिन लूथर से की जाती है। नागार्जुन को भारत का आईन्सटाइन कहा जाता है। नागार्जुन ने अपनी पुस्तक 'माध्यमिक सूत्र' में सापेक्षता के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया है। शून्यवाद के व्याख्याकार नागार्जुन थे।
- कनिष्क का राजवैद्य आयुर्वेद के महापण्डित चरक थे। चरक ने औषधि पर 'चरकसंहिता' नामक ग्रंथ की रचना की।

- बौद्ध धर्म के विश्वकोश 'महाविभाषसूत्र' की रचना वसुमित्र ने की थी।
- कुषाण वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक कनिष्क था, जिसका साम्राज्य मध्य एशिया, अफगानिस्तान तथा पश्चिमोत्तर भारत तक विस्तृत था।
- कनिष्क के युग में गांधार कला, सारनाथ कला, मथुरा कला तथा अमरावती कला का विकास हुआ था। गांधार शैली में बौद्ध मूर्तियों का निर्माण हुआ था। भगवान बुद्ध की मूर्तियों का सर्वप्रथम निर्माण गांधार शैली में हुआ था।
- कनिष्क के बाद वासिष्क, वासिष्क के बाद हुविष्क तथा हुविष्क के बाद वासुदेव प्रथम राजगद्दी पर बैठे। वासुदेव कुषाण वंश का अन्तिम शासक था। वासुदेव प्रथम विष्णु तथा शिव का उपासक था।

17. गुप्त वंश

- गुप्त कुषाणों के सामन्त थे।
- गुप्त साम्राज्य का उदय तीसरी सदी के अन्त में प्रयाग के निकट कौशाम्बी में हुआ था।
- गुप्त वंश के संस्थापक श्री गुप्त थे।
- श्रीगुप्त का उल्लेख गुप्तवंश के 'आदिराज' के रूप में प्रभावती गुप्त के पूना स्थित ताम्रपत्र अभिलेख में किया गया है। इत्सिंग के अनुसार श्रीगुप्त ने मगध के मृग शिखावन में एक मन्दिर का निर्माण करवाया था तथा मन्दिर के खर्च हेतु चौबीस गाँवों को दान में दिया था।
- श्रीगुप्त का शासनकाल 275 से 300 ई० तक था। श्रीगुप्त ने महाराज की उपाधि धारण की थी। एस. आर. गोयल के अनुसार श्री गुप्त का राज्यारोहण लगभग 295 ई० में हुआ था।
- श्रीगुप्त ने लगभग 300 ई० में घटोत्कच को अपना उत्तराधिकारी बनाया था।
- घटोत्कच को प्रभावती गुप्त के पूना एवं रिद्धपुर ताम्रपत्र अभिलेखों में गुप्तवंश का प्रथम राजा बताया गया है।
- घटोत्कच के उत्तराधिकारी के रूप में चन्द्रगुप्त प्रथम 319 ई० में गद्दी पर बैठा।
- गुप्त वंश का प्रथम महान सम्राट चन्द्रगुप्त प्रथम था। इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी कुल की कन्या कुमारदेवी से शादी की थी। चन्द्रगुप्त प्रथम ने गुप्त सम्वत् चलाया, जिसका प्रथम वर्ष 26 फरवरी, 320 ई० से 15 मार्च, 321 ई० तक था। शक सम्वत् तथा गुप्त सम्वत् के बीच लगभग 242 वर्ष का अन्तर है। चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319 ई० से 335 ई० तक शासन किया। चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने पुत्र को उत्तराधिकारी बनाने के बाद संन्यास ग्रहण कर लिया।
- समुद्रगुप्त 335 ई० में राजगद्दी पर बैठा।
- समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण थे। हरिषेण ने इलाहाबाद के प्रशस्ति लेख में समुद्रगुप्त के विजय अभियानों का उल्लेख किया है।
- समुद्रगुप्त ने अपनी विजयों की उद्घोषणा हेतु अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करवाया था। समुद्रगुप्त के सिक्कों में कुछ पर 'अश्वमेध' खुदा है।
- समुद्रगुप्त ने छः प्रकार (गरुड़, धनुर्धर, परशु, अश्वमेध, व्याघ्रहन्ता, वीणासरण) की स्वर्ण मुद्राएँ जारी की। समुद्रगुप्त की गरुड़ स्वर्ण मुद्रा सर्वाधिक लोकप्रिय थी।
- श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने कुछ उपहार भेजकर समुद्रगुप्त से गया में एक बौद्ध मन्दिर बनवाने की अनुमति माँगी थी।
- भारतीय इतिहास में समुद्रगुप्त को भारतीय नेपोलियन के नाम से जाना जाता है। समुद्रगुप्त को सौ युद्धों का विजेता माना जाता है।
- समुद्रगुप्त को कविराज कहा गया है।
- समुद्रगुप्त ने 335 ई० से 375 ई० तक शासन किया था। इसकी मृत्यु के बाद रामगुप्त राजा बना।
- रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवीदेवी को एक अत्याचारी शक के हाथों में समर्पित कर दिया था।
- रामगुप्त की हत्या चन्द्रगुप्त द्वितीय ने की थी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय 375 ई० में राजगद्दी पर बैठा। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। चन्द्रगुप्त द्वितीय शकों पर विजय प्राप्त करके शकारि कहलाने लगा।
- शक राज्य का अन्त चन्द्रगुप्त द्वितीय ने किया। शकों को पराजित करने के उपलक्ष्य में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने चाँदी के विशेष सिक्के जारी किये। चन्द्रगुप्त द्वितीय को देवराज तथा देवगुप्त के नामों से भी जाना जाता है।

- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन से किया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अप्रत्यक्ष रूप से वाकाटक राज्य को अपने राज्य में मिलाकर उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में नवरत्न थे। चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में कालिदास (कवि तथा नाटककार), आर्यभट्ट (नक्षत्र वैज्ञानिक), वराहमिहिर (नक्षत्र वैज्ञानिक), ब्रह्मगुप्त (नक्षत्र वैज्ञानिक) धन्वंतरि (चिकित्सक) तथा अमरसिंह आदि थे।
- चीनी यात्री फाह्यान (405-411 ई०) चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में भारत आया था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के सम्बन्ध में महरौली शिलालेख से जानकारी प्राप्त होती है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने 375 ई० से 415 ई० तक शासन किया था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद 415 ई० में कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य राजगद्दी पर बैठा। ह्वेनसांग ने कुमारगुप्त का नाम शक्रादित्य बताया है।
- नालन्दा विश्वविद्यालय का संस्थापक कुमार गुप्त था।
- बयाना-मृद्भाण्ड से कुमारगुप्त की करीब 623 मुद्राएँ मिली हैं। कुमारगुप्त की मयूर शैली की मुद्राएँ विशेष महत्वपूर्ण थीं।
- कुमारगुप्त को अपने शासन के अन्तिम समय में पुष्यमित्र जातियों के विद्रोह का सामना करना पड़ा।
- कुमारगुप्त ने 415 से 455 ई० तक शासन किया था।
- कुमारगुप्त के बाद 455 ई० में स्कन्दगुप्त राजगद्दी पर बैठा। स्कन्दगुप्त ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- स्कन्दगुप्त ने गिरिनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील के पुनर्रोद्धार का कार्य गवर्नर पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित को सौंपा था।
- स्कन्दगुप्त के शासनकाल में हूणों का भारत पर आक्रमण हुआ था।
- स्कन्दगुप्त को कहौम स्तम्भ लेख में शक्रोपम तथा जूनागढ़ अभिलेख में श्री परिक्षिप्त वृक्षा कहा गया है।
- गुप्त वंश का अन्तिम महान सम्राट स्कन्दगुप्त था। इसने 455 ई० से 467 ई० तक शासन किया था।
- स्कन्दगुप्त के बाद स्कन्दगुप्त का सौतेला भाई पुरुगुप्त 467 ई० में राजगद्दी पर बैठा।
- पुरुगुप्त ने श्री विक्रम की उपाधि धारण की थी। इसने 467 ई० से 476 ई० तक शासन किया था।
- पुरुगुप्त के बाद नरसिंह गुप्त, कुमारगुप्त द्वितीय, बुद्धगुप्त, वैन्यगुप्त, भानुगुप्त, कुमारगुप्त तृतीय तथा विष्णुगुप्त आदि गुप्त वंश के शासक बने।
- हूणों का द्वितीय आक्रमण भानुगुप्त के शासनकाल में हुआ था।
- गुप्तकाल में राजपद वंशानुगत सिद्धान्त पर आधारित था।
- गुप्त सम्राट न्याय, सेना एवं दीवानी विभाग का प्रधान होता था।
- गुप्तकालीन रानियों को परमभट्टारिका, परमभट्टारिकाराज्ञी तथा महादेवी की उपाधियाँ दी गयी हैं।
- गुप्तकाल में राजा की तुलना, कुबेर, वरूण, इन्द्र तथा यमराज से की गयी थी।
- गुप्तकाल में प्रान्तीय प्रशासकों को प्रान्तों में पाँच वर्षों के लिए नियुक्त किया जाता था।
- गुप्तकाल में नगरों का प्रशासन नगर महापालिकाओं द्वारा चलाया जाता था।
- गुप्तकाल में शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी।
- गुप्तकाल में भू-राजस्व कुल उत्पादन का $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{6}$ भाग तक होता था।
- गुप्तकाल में उज्जैन नगर सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थल था।
- गुप्तकाल की स्वर्ण मुद्राओं को अभिलेखों में दीनार कहा गया है।
- दासों को दासत्व से मुक्त कराने का प्रथम प्रयास नारद ने किया था।
- सती होने का प्रथम प्रमाण 510 ई० के भानुगुप्त के एरण अभिलेख में मिलता है।
- गुप्त शासकों का व्यक्तिगत धर्म वैष्णव धर्म था।
- शिव के अर्धनारीश्वर रूप की कल्पना एवं शिव तथा पार्वती की एक साथ मूर्तियों का निर्माण सर्वप्रथम गुप्तकाल में आरम्भ हुआ था।
- शैव एवं वैष्णव धर्म के समन्वय को दर्शाने वाले भगवान 'हरिहर' की मूर्तियों का निर्माण गुप्तकाल में हुआ था।

- त्रिमूर्ति पूजा के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की पूजा गुप्तकाल में आरम्भ हुई थी।
- गुप्तकाल में चार शैव सम्प्रदायों (शैव, पाशुपत, कापालिक तथा कालामुख) का प्रचलन था।
- गुप्तकाल में प्रसिद्ध बौद्ध विहार नालन्दा की स्थापना हुई थी।
- गुप्तकाल में बसुबन्धु, असंग तथा दिङ्नाथ आदि प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य हुये।
- गुप्तकाल में मथुरा एवं बल्लभी में जैन सभाएँ आयोजित हुई थीं।
- गुप्तकाल में मन्दिर निर्माण कला का जन्म हुआ था।
- सारनाथ में बैठे हुए बुद्ध की मूर्ति, मथुरा में खड़े हुए बुद्ध की मूर्ति एवं सुल्तानगंज में ताँबे की बुद्ध मूर्ति गुप्तकाल की बुद्ध मूर्तियाँ हैं।
- भगवान शिव के 'एकमुखी' एवं 'चतुर्मुखी शिवलिंग' का निर्माण सर्वप्रथम गुप्तकाल में हुआ।
- औरंगाबाद में स्थित अजन्ता की गुफाओं तथा ग्वालियर के समीप स्थित बाघ पर्वत गुफाओं की चित्रकारी गुप्तकाल की देन है।
- अजन्ता के चित्र तकनीकी दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान रखते हैं। अजन्ता की गुफा संख्या 16 में उत्कीर्ण मरणासन्न राजकुमारी का चित्र प्रशंसनीय है। अजन्ता की गुफा संख्या 17 में उत्कीर्ण माता एवं शिशु का चित्र सर्वोत्कृष्ट है।
- अजन्ता की गुफाएँ बौद्ध धर्म के महायान शाखा से सम्बन्धित हैं। अजन्ता में निर्मित कुल 29 गुफाओं में से वर्तमान में केवल छः (गुफा संख्या 1, 2, 9, 10, 16, 17) गुफाएँ शेष हैं। अजन्ता में निर्मित गुफा संख्या 16 तथा 17 गुप्तकाल से सम्बन्धित हैं।
- ग्वालियर के समीप बाघ नामक स्थान पर स्थित विंध्य पर्वत को काटकर बाघ की गुफाएँ बनाई गईं। इन गुफाओं को 1818 ई० में डेंजर फील्ड ने खोजा।
- गुप्तकाल में भारत के पूर्वी तट पर सबसे बड़ा बन्दरगाह ताम्रलिप्ति तथा पश्चिमी तट पर भड़ौच था।
- यूरोपीय भाषा में अनुवादित प्रथम भारतीय ग्रंथ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' है।
- पंचतन्त्र की गणना संसार के सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ बाइबिल के बाद दूसरे स्थान पर की जाती है। पंचतन्त्र की रचना गुप्तकाल में विष्णु शर्मा ने की थी।
- गुप्तकाल में आय का मुख्य साधन भू-राजस्व था।
- गुप्तकाल में अठारह प्रकार के कर थे।
- गुप्तकाल में संस्कृत राष्ट्रभाषा बन गयी थी।
- गुप्तकाल में उच्च शिक्षा का केन्द्र नालन्दा में था।
- प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्तकाल का वही महत्व है, जो यूनान के इतिहास में पेरिक्लीयन युग का है।
- स्मिथ ने गुप्तकाल की तुलना ब्रिटिश इतिहास के एलिजाबेथ तथा स्टुअर्ट के कालों से की है।
- गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है।
- गुप्तकाल के सर्वाधिक लोकप्रिय देवता विष्णु थे।

गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के नवरत्न

क्र०	रत्न	क्षेत्र	कृति/रचना
1.	हरिषेण	कवि	कविता
2.	वाराहमिहिर	खगोल विज्ञान	वृहदसंहिता
3.	वररूचि	व्याकरण	व्याकरण (संस्कृत)
4.	धनवन्तरी	चिकित्सा	आयुर्वेद (चिकित्सा की पुस्तक)
5.	क्षपणक	ज्योतिष विद्या	ज्योतिष शास्त्र
6.	अमर सिंह	शब्दकोष रचना	अमरकोश (शब्दावली)
7.	कालिदास	नाटक व काव्य	अभिज्ञानशाकुंतलम्, मेघदूत
8.	शंकु	वास्तुकला	शिल्पशास्त्र
9.	वेतालभट्ट	जादू	मन्त्र शास्त्र

18. पुष्यभूति वंश

- पुष्यभूति वंश का संस्थापक पुष्यभूति था।
- पुष्यभूति ने हरियाणा के अम्बाला जिले में थानेश्वर नामक एक नये राज्य की स्थापना की थी।
- पुष्यभूति वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक प्रभाकरवर्धन था। यह पुष्यभूति वंश का चौथा शासक था। इसके विषय में जानकारी हमें हर्षचरित नामक पुस्तक से मिलती है।
- प्रभाकरवर्धन ने महाराजाधिराज तथा परमभट्टारक की उपाधि धारण की थी।
- प्रभाकरवर्धन की माँ मगध के गुप्त सम्राट दामोदर गुप्त की राजकुमारी थी।
- प्रभाकरवर्धन के दो पुत्र (राज्यवर्धन तथा हर्षवर्धन) तथा एक पुत्री (राज्यश्री) थी।
- प्रभाकरवर्धन ने अपनी पुत्री राज्यश्री का विवाह मौखरिवंश के शासक गृहवर्मन से किया। मालवा नरेश देवगुप्त एवं गौड़ शासक शशांक ने मिलकर गृहवर्मन की हत्या कर राजश्री को बन्दी बना लिया।
- प्रभाकरवर्धन की मृत्यु 605 ई० में हुई थी। प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के समय राज्यवर्धन हूणों से युद्ध कर रहा था।
- प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के बाद राज्यवर्धन राजगद्दी पर बैठा, परन्तु शीघ्र ही उसे मालवा के खिलाफ अभियान के लिए जाना पड़ा।
- मालवा के खिलाफ अभियान की सफलता के उपरान्त लौटते हुए मार्ग में गौड़ के शशांक राज्यवर्धन की हत्या कर दी।
- राज्यवर्धन के बाद हर्षवर्धन 606 ई० में थानेश्वर के सिंहासन पर बैठा।
- हर्षवर्धन के विषय में व्यापक जानकारी बाणभट्ट के हर्षचरित तथा ह्वेनसांग के यात्रा वृतान्त में मिलती है। हर्षवर्धन का जन्म 590 ई० में हुआ था।
- हर्षवर्धन अपनी राजधानी थानेश्वर से स्थानान्तरित कर कन्नौज ले गया।
- हर्षवर्धन शिलादित्य के नाम से भी जाना जाता था। हर्षवर्धन ने परमभट्टारक मगध नरेश की उपाधि धारण की थी।
- हर्षवर्धन के शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था 'यात्रियों में राजकुमार', 'नीति का पण्डित' एवं 'वर्तमान शाक्यमुनि' कहा जाने वाला चीनी यात्री ह्वेनसांग था।
- चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को नर्मदा नदी के किनारे परास्त किया था। हर्षवर्धन एवं पुलकेशिन द्वितीय के मध्य हुए संघर्ष की जानकारी ऐहोल अभिलेख से मिलती है।
- हर्षवर्धन ने नागानन्द, रत्नावली तथा प्रियदर्शिका नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- हर्षवर्धन के दरबार में बाणभट्ट, मयूर, हरिदत्त तथा जयसेन आदि विद्वान थे।
- हर्षवर्धन बौद्ध धर्म की महायान शाखा का समर्थक था। हर्षवर्धन बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- 643 ई० में चीनी सम्राट ने ल्यांग-हो-आई-किंग नाम के दूत को हर्षवर्धन के दरबार में भेजा था।
- हर्षवर्धन प्रत्येक पाँच वर्ष बाद प्रयाग में एक धार्मिक सम्मेलन का आयोजन करता था। हर्षवर्धन द्वारा प्रयाग में आयोजित सभा को मोक्षपरिषद् कहा गया है।
- राज्यवर्धन का प्रधानमन्त्री भण्डी था। हर्षवर्धन का प्रधानमन्त्री अवन्ति तथा महासेनापति सिंहनाद था।
- हर्षवर्धन की मृत्यु 647 ई० में हुई। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद हर्षवर्धन का मन्त्री उत्तराधिकारी बना।
- हर्षवर्धन के समय भूमिकर कृषि उत्पादन का 1/6 भाग वसूला जाता था।
- हर्षवर्धन के समय राजस्व के स्रोत के रूप में तीन प्रकार (भाग, हिरण्य, बलि) के कर थे।

19. संगम युग

- 'संगम' का अर्थ तमिल कवियों, विद्वानों तथा आचार्यों की परिषद् या गोष्ठी या सम्मेलन से है।
- तमिल कवियों का एक संगम मदुरा में राजकीय संरक्षण में हुआ। इसमें 9990 वर्षों के लम्बे अंतराल पर तीन संगम आयोजित हुए, जिनमें 8598 कवियों ने भाग लिया। इसके मुख्य संरक्षक 197 पांड्य राजा थे।
- इन्हीं सभाओं में रचित साहित्य 'संगम साहित्य' कहलाता है। ऐतिहासिक युग के प्रारम्भ में दक्षिण भारत का क्रमबद्ध इतिहास हमें जिस साहित्य से प्राप्त होता है, उसे 'संगम साहित्य' कहते है।

- पांड्य शासकों के संरक्षण में तीन संगम (गोष्ठियाँ) आयोजित किये गये।
- प्रथम संगम का आयोजन पांड्यों की राजधानी मदुरा में किया गया। इस संगम के अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि थे। प्रथम संगम को सर्वाधिक 89 पांड्य शासकों ने संरक्षण दिया था। इसकी कोई रचना अब उपलब्ध नहीं है।
- द्वितीय संगम का आयोजन कपाटपुरम (अलवै) में आयोजित किया गया। प्रारम्भ में इसके अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि थे, बाद में तोलकाप्पियर हुए। द्वितीय संगम को 59 पांड्य शासकों ने संरक्षण दिया था। इस संगम में रचा गया एकमात्र ग्रंथ 'तोलकाप्पियम' है। इस ग्रंथ की रचना तोलकाप्पियर ने की थी। इसे तमिल भाषा का प्राचीनतम् व्याकरण ग्रंथ माना जाता है।
- तृतीय संगम का आयोजन उत्तरी मदुरा में किया गया। इसके अध्यक्ष नक्कीरर थे। तृतीय संगम को 49 पांड्य शासकों ने संरक्षण दिया था। यद्यपि इसके भी अधिकांश ग्रंथ नष्ट हो गए हैं; फिर भी जो तमिल साहित्य बचा है, वह इसी संगम से संबंधित है।
- संगमकाल में पाँच महाकाव्यों का उल्लेख मिलता है, ये हैं–1. शिलप्पादिकारम, 2. मणिमेकलै, 3. जीवकचिंतामणि, 4. वलयपति तथा 5. कुंतलकेसी।
- तिरूक्कुरल को तमिल बाइबिल भी कहा जाता है।
- संगम साहित्य से हमें तमिल प्रदेश के तीन राज्यों चोल, चेर और पांड्य का विवरण प्राप्त होता है। चोल राज्य का प्रमुख शासक करिकाल था। चोल की राजधानी प्रारम्भ में उरैपुर तथा कालांतर में कावेरीपत्तनम थी। संगम युग का दूसरा राज्य चेर का था, जो केरल प्रांत में स्थित था। इस वंश का प्रमुख शासक सेनगुट्टवन था। चेरों की राजधानी करूयुर (बाजीपुर) थी। सेनगुट्टवन ने ही 'पत्तिनी' नामक धार्मिक सम्प्रदाय की स्थापना की और पत्तिनी देवी की पूजा प्रारम्भ करवाई। संगम युग का तीसरा राज्य पांड्य का था। इसकी राजधानी मदुरा थी। इस वंश का प्रमुख शासक नेडुजेलियन था।

संगम

संगम	स्थान	अध्यक्षता	सदस्यों की संख्या	विवरण
प्रथम	मदुरा	अगस्त्य ऋषि	549	इसकी कोई रचना अब उपलब्ध नहीं है।
द्वितीय	कपाटपुरम (अलवै)	अगस्त्य ऋषि, बाद में तोलकाप्पियर	49	इसका एकमात्र प्राप्त ग्रंथ 'तोलकाप्पियम' है।
तृतीय	उत्तरी मदुरा	नक्कीरर	49	यद्यपि इसके भी अधिकांश ग्रंथ नष्ट हो गए हैं; फिर भी जो तमिल साहित्य बचा हैं, वह इसी संगम से संबंधित है; जैसे-एत्तुतौगै (8 गीत), पत्तुपत्तु (10 गीत), परिपादल आदि।

प्रमुख ग्रंथ और उसके लेखक

क्र०	ग्रंथ	लेखक	विवरण
1.	तोलकाप्पियम्	तोलकाप्पियर	तमिल व्याकरण की पुस्तक
2.	शिलप्पादिकारम्	इलंगो आदिगल (चोल शासक करिकाल का पौत्र)	महाकाव्य
3.	मणिमेकलै	शीतलै सत्तनार	महाकाव्य
4.	शिवगसिंदामणि	तिरूत्तक्कदेवर	महाकाव्य
5.	जीवकचिंतामणि	तिरूत्तक्कदेवर	महाकाव्य
6.	तरूक्कुरल	तिरूवल्लुवर	महाकाव्य, तमिल बाइबिल

20. भारत के प्रमुख राजवंश

(i) पल्लव वंश

- पल्लव वंश का संस्थापक तथा प्रथम शासक बप्पादेव था।
- पल्लवों की राजधानी कांची थी।
- पल्लव लोग स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने से पूर्व सातवाहनों के सामन्त थे।
- पल्लवों के प्रारम्भिक अभिलेख प्राकृत भाषा में तथा बाद के संस्कृत भाषा में मिले हैं।
- पल्लववंशी शासक शिवस्कन्दवर्मन को अग्निष्टोम, वाजपेय एवं अश्वमेध आदि यज्ञों का यज्ञकर्ता माना जाता है।
- जिस समय समुद्रगुप्त ने दक्षिणपथ को जीता उस समय कांची का शासक विष्णु गोप था।
- पल्लववंशी शासक सिंहविष्णु (575-600 ई०) को 'सिंह विष्णुयोत्तर युग' एवं 'अवनिसिंह' भी कहा जाता था। सिंहविष्णु ने चोलों को परास्त कर अवनि सिंह की उपाधि धारण की थी।
- संस्कृत के महान कवि भारवि सिंहविष्णु के दरबार में रहते थे।
- सिंहविष्णु वैष्णव धर्म का अनुयायी था।
- सिंहविष्णु के समय में मामल्लपुरम् के आदिवराह गुहा मन्दिर का निर्माण हुआ था।
- सिंहविष्णु का पुत्र एवं उत्तराधिकारी महेन्द्रवर्मन प्रथम था।
- महेन्द्रवर्मन प्रथम (600-630 ई०) ने मत्तविलास, विचित्र चित्र तथा गुणभर की पदवी धारण की थी।
- महेन्द्रवर्मन प्रथम ने 'मत्तविलास प्रहसन' तथा 'भगवदज्जुकीयम्' ग्रंथों की रचना की थी।
- महेन्द्रवर्मन प्रथम के संरक्षण में संगीत शास्त्र पर आधारित ग्रंथ 'कुडमिमालय' की रचना हुई थी।
- महेन्द्रवर्मन प्रथम के बाद महेन्द्रवर्मन प्रथम का पुत्र नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668 ई०) राजगद्दी पर बैठा।
- नरसिंहवर्मन प्रथम को इसके अभिलेखों में 'वातापीकोड' कहा गया है।
- नरसिंहवर्मन प्रथम को असाधारण धैर्य एवं पराक्रम के कारण 'महामल्ल' कहा गया है।
- कुर्रम दान पत्र अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि नरसिंहवर्मन प्रथम ने चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय को परास्त किया था।
- नरसिंहवर्मन प्रथम के काशाक्कुटि ताम्रपत्र अभिलेख से इसकी श्रीलंका विजय प्रमाणित होती है।
- नरसिंहवर्मन प्रथम का पुत्र एवं उत्तराधिकारी महेन्द्रवर्मन द्वितीय (668-670 ई०) था। महेन्द्रवर्मन द्वितीय को मध्यम लोकपाल कहा गया है।
- महेन्द्रवर्मन द्वितीय का पुत्र एवं उत्तराधिकारी परमेश्वर वर्मन प्रथम (670-700 ई०) था।
- परमेश्वरवर्मन प्रथम का संघर्ष सबसे पहले चालुक्य नरेश विक्रमादित्य से हुआ था।
- परमेश्वरवर्मन प्रथम ने विद्याविनीत उग्रदण्ड, लोकादित्य, चित्रमाय, गुणभाजन, श्रीभर एकमल्ल तथा रणजय की उपाधियाँ धारण की थीं।
- परमेश्वरवर्मन प्रथम के समय में मामल्लपुर का प्रसिद्ध गणेश मन्दिर निर्मित हुआ था।
- परमेश्वरवर्मन प्रथम के बाद उसका पुत्र नरसिंह वर्मन द्वितीय (700-728 ई०) राजगद्दी पर बैठा।
- नरसिंहवर्मन द्वितीय को राजसिंह कहा जाता था।
- कांची में प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर (राज सिद्धेश्वर मन्दिर) को नरसिंह वर्मन द्वितीय ने बनवाया था।
- नरसिंहवर्मन द्वितीय ने मन्दिर निर्माण शैली में एक नई शैली 'राजसिंह शैली' का प्रयोग किया था।
- नरसिंहवर्मन द्वितीय ने महाबलीपुरम् का समुद्रतटीय मन्दिर, कांची का कैलाशनाथ मन्दिर एवं ऐरावतेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया था।
- नरसिंहवर्मन द्वितीय ने वाद्य विद्याधर, वीणानारद तथा अन्तोदय-तुम्बुरू की उपाधियाँ धारण की थीं।
- महाकवि दण्डिन नरसिंहवर्मन द्वितीय का समकालीन था।
- नरसिंहवर्मन द्वितीय के बाद उसका छोटा पुत्र परमेश्वर वर्मन द्वितीय (728-730 ई०) राजगद्दी पर बैठा।
- चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वितीय ने गंग शासक दुर्विनीत ऐरयप्प की सहायता से परमेश्वरवर्मन द्वितीय पर आक्रमण कर उसे परास्त कर हत्या कर दी।

- नन्दिवर्मन द्वितीय (730-800 ई०) परमेश्वर वर्मन द्वितीय का एक रिश्तेदार हिरण्य का पुत्र था।
- राष्ट्रकूट नरेश दन्तिदुर्ग ने पल्लवों की राजधानी कांची पर विजय प्राप्त कर अपनी पुत्री का विवाह नंदिवर्मन द्वितीय से किया।
- नन्दिवर्मन द्वितीय के बाद उसका पुत्र दन्तिवर्मन राजा बना।
- दन्तिवर्मन को पल्लव कुल भूषण कहा गया है।
- दन्तिवर्मन के बाद उसका पुत्र नन्दिवर्मन तृतीय गद्दी पर बैठा।
- तमिल साहित्य के महान कवि 'पोरून्देवनार' को नन्दिवर्मन तृतीय का राजाश्रय मिला हुआ था।
- नन्दिवर्मन तृतीय के बाद उसका पुत्र नृपत्तुंगवर्मन गद्दी पर बैठा।
- नृपत्तुंगवर्मन को अपदस्थ कर अपराजितवर्मन गद्दी पर बैठा।
- चोलों का उदय अपराजितवर्मन के शासनकाल में हुआ था।
- अपराजितवर्मन ने विरुत्तनि में वीरट्टानेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया।
- अपराजितवर्मन (880-903 ई०) को पल्लव वंश का अन्तिम शासक माना जाता है।

(ii) कदंब वंश

- चौथी सदी में उत्तरी कर्नाटक और कोंकण में कदंबों ने अपना राज्य स्थापित किया था।
- कदंब राजवंश की स्थापना पल्लव वंश के सामंत मयूरशर्मन ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित करके की थी। उसने 18 अश्वमेघ यज्ञ करवाये थे और ब्राह्मणों को कई गाँव दान में दिये थे।
- कदंबों ने अपनी राजधानी वैजयंती (वनवासी) में बनायी थी।

(iii) चालुक्य वंश

- चालुक्य वंश का संस्थापक जयसिंह था। इसकी राजधानी वातापि थी।
- जयसिंह के बाद उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी रणराग 520 ई० में राजगद्दी पर बैठा।
- गदा युद्ध में कुशल होने के कारण रणराज ने रणरागसिंह की उपाधि धारण की थी।
- चालुक्य वंश का प्रथम प्रतापी राजा रणराग का पुत्र पुलकेशिन प्रथम था।
- पुलकेशिन प्रथम ने रणविक्रम, सत्याश्रम तथा धर्म महाराज की उपाधियाँ धारण की थीं।
- पुलकेशिन प्रथम के बाद उसका पुत्र कीर्तिवर्मन प्रथम 566-67 ई० में गद्दी पर बैठा।
- कीर्तिवर्मन प्रथम ने पुरूरण पराक्रम, पृथ्वी वल्लभ तथा सत्याश्रम की उपाधियाँ धारण की थीं।
- कीर्तिवर्मन प्रथम के बाद उसका भाई मंगलेश राजगद्दी पर बैठा।
- कीर्तिवर्मन प्रथम का पुत्र पुलकेशिन द्वितीय मंगलेश की हत्या कर राजगद्दी पर बैठा।
- पुलकेशिन द्वितीय ने श्री पृथ्वी वल्लभ महाराज, सत्याश्रम, वल्लभ परमेश्वर परम भागवत, भट्टारक, महाराजाधिराज, दक्षिणापथेश्वर आदि की उपाधियाँ धारण की थीं।
- पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को युद्ध में परास्त कर 'परमेश्वर' की उपाधि धारण की।
- पल्लववंशीय शासक नरसिंह वर्मन प्रथम ने पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में परास्त कर उसकी राजधानी पर अधिकार कर लिया था। वातापि के चालुक्य वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक पुलकेशिन द्वितीय था। चालुक्यवंशीय शासक पुलकेशिन द्वितीय ने अपना राजदूत फारस के शाह खुसरो के दरबार में भेजा था।
- पुलकेशिन द्वितीय के बाद उसका पुत्र विक्रमादित्य प्रथम राजगद्दी पर बैठा।
- विक्रमादित्य प्रथम ने श्री पृथ्वी वल्लभ, भट्टारक महाराजाधिराज, परमेश्वर तथा रणरसिक की उपाधियाँ धारण कीं।
- विक्रमादित्य प्रथम के बाद उसका पुत्र विनयादित्य राजगद्दी पर बैठा।
- विनयादित्य के बाद उसका पुत्र विजयादित्य राजगद्दी पर बैठा।
- विजयादित्य के बाद विक्रमादित्य द्वितीय राजगद्दी पर बैठा। इसने कांचिनकोड की उपाधि धारण की। पल्लवों के राज्य कांची को विक्रमादित्य द्वितीय ने तीन बार विजित किया था। विक्रमादित्य द्वितीय के शासनकाल में दक्कन में अरबों ने आक्रमण किया था। अरबों पर विजय प्राप्त करने के बाद विक्रमादित्य द्वितीय ने अवनिजनाश्रय की उपाधि धारण की।
- विक्रमादित्य द्वितीय के बाद उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी कीर्तिवर्मन द्वितीय राजगद्दी पर बैठा।

- कीर्तिवर्मन द्वितीय ने सार्वभौम, लक्ष्मी, पृथ्वी का प्रिय, राजाओं का राजा, महाराज आदि उपाधियाँ धारण की थीं।
- वातापि के चालुक्यों का साम्राज्य राष्ट्रकूटों ने नष्ट किया था। वातापि के चालुक्य शासक हिन्दू धर्म के अनुयायी थे।
- 'विक्रमांक देव चरित्र' के लेखक कश्मीरी कवि विल्हण विक्रमादित्य षष्ठ के दरबार के अमूल्य रत्न थे।
- विक्रमादित्य षष्ठ के समय में हिन्दू विधि की पुस्तक 'मिताक्षरा' की रचना विज्ञानेश्वर ने की थी।
- तैल अथवा तैलप द्वितीय (973-997 ई०) ने राष्ट्रकूट नरेश कर्क को युद्ध में परास्त कर कल्याणी के चालुक्य वंश की नींव डाली थी।
- कल्याणी के चालुक्य वंश का सर्वाधिक महान एवं प्रतापी शासक विक्रमादित्य षष्ठ था।
- 1076 ई० में कल्याणी के विक्रमादित्य षष्ठ ने चालुक्य-विक्रम सम्वत् की शुरूआत की थी।
- चालुक्य राजधानी को मान्यखेट से कल्याणी सोमेश्वर प्रथम ले गया।
- कल्याणी के चालुक्य की राजधानी कल्याणी थी।
- वेंगी के चालुक्य वंश का संस्थापक विष्णुवर्धन था। इसने वेंगी को अपनी राजधानी बनाया। इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विजयादित्य तृतीय था।
- वेंगी के चालुक्य शासक विष्णुवर्धन ने सिंह, दीपक तथा त्रिशूल चिह्नांकित चाँदी के सिक्के जारी किये थे।

(iv) गुर्जर-प्रतिहार वंश

- 7वीं से 12वीं शताब्दी के उत्तर भारत के इतिहास को 'राजपूत काल' या 'सन्धि काल' के नाम से जाना जाता है।
- 'राजपूत काल' के महत्वपूर्ण राजपूत वंशों में गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चालुक्य, चौहान, चंदेल, परमार, गहड़वाल आदि आते हैं।
- 'राजपूत' शब्द संस्कृत के 'राजपुत्र' शब्द का अपभ्रंश है।
- गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक नागभट्ट प्रथम था। नागभट्ट प्रथम ने मालवा में शासन स्थापित किया था।
- नागभट्ट प्रथम के दो भतीजे कक्कुक एवं देवराज के बाद देवराज का पुत्र वत्सराज राजगद्दी पर बैठा।
- वत्सराज ने पालवंश के शासक धर्मपाल को युद्ध में पराजित किया था। वत्सराज राष्ट्रकूट नरेश ध्रुव से युद्ध में पराजित हुआ था।
- वत्सराज के बाद उसका पुत्र नागभट्ट द्वितीय राजगद्दी पर बैठा।
- नागभट्ट द्वितीय के बाद उसका पुत्र रामभद्र राजगद्दी पर बैठा।
- रामभद्र के बाद उसका पुत्र मिहिरभोज राजगद्दी पर बैठा।
- गुर्जर-प्रतिहार वंश का सर्वाधिक प्रतापी एवं महान शासक मिहिरभोज था।
- मिहिरभोज ने 836 ई० के करीब कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया, जो आगामी सौ वर्षों तक प्रतिहारों की राजधानी बनी रही। मिहिरभोज ने 'आदिवराह' की उपाधि धारण की।
- मिहिरभोज के बाद महेन्द्रपाल राजगद्दी पर बैठा।
- संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान राजशेखर, जिनकी कृति 'कर्पूरमंजरी' एवं 'काव्यमीमांसा' है, महेन्द्रपाल के गुरु थे।
- महेन्द्रपाल के बाद उसका पुत्र महीपाल राजगद्दी पर बैठा।
- महीपाल के शासनकाल में 915-16 ई० में बगदाद निवासी अलमसूदी गुजरात आया था।
- महीपाल के शासनकाल में लगभग 915-18 ई० में कन्नौज पर आक्रमण कर राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय ने नगर को उजाड़ दिया।
- 11वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गहड़वाल या राठौर वंश ने गुर्जर-प्रतिहारों को हमेशा के लिए उखाड़ फेंका।

(v) राष्ट्रकूट वंश

- राष्ट्रकूट वंश की स्थापना 752 ई० में दन्तिदुर्ग ने की थी।
- दन्तिदुर्ग ने नासिक (सम्प्रति महाराष्ट्र में) को अपनी राजधानी बनाया।
- दन्तिदुर्ग ने महाराजाधिराज, परमेश्वर तथा परमभट्टारक की उपाधियाँ धारण की थीं।
- दन्तिदुर्ग के बाद उसका चाचा कृष्ण प्रथम 758 ई० में राजा बना।

- एलोरा का प्रसिद्ध गुहा मन्दिर (शिव मन्दिर) का निर्माण कृष्ण प्रथम ने करवाया था। डॉ० बी० ए० स्मिथ ने इस मन्दिर को 'भारतीय वास्तुकला की सर्वाधिक अद्भुत कृति' माना है। इसे वास्तुकला का एक आश्चर्य माना जाता है।
- कृष्ण प्रथम ने 'शुभतुंग' और 'अकालवर्ष' की उपाधियाँ धारण की थीं।
- कृष्ण प्रथम के बाद उसका जयेष्ठ पुत्र गोविन्द द्वितीय 773 ई० में राजा बना तथा उसने 'प्रभूतवर्ष विक्रमावलोक' की उपाधि धारण की।
- गोविन्द द्वितीय के बाद उसका छोटा भाई ध्रुव 780 ई० में राजा बना तथा उसने 'निरूपम् कालि-वल्लभ', 'धारावर्ष' और 'श्रीवल्लभ' की उपाधियाँ धारण कीं।
- राष्ट्रकूट वंश का पहला शासक ध्रुव था, जिसने कन्नौज पर अधिकार करने हेतु 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में भाग लिया।
- ध्रुव के बाद उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी गोविन्द तृतीय 793 ई० में राजा बना।
- गोविन्द तृतीय के बाद उसका पुत्र सर्व 814 ई० में राजा बना, जो अमोघवर्ष के नाम से अधिक प्रसिद्ध था।
- अमोघवर्ष ने 'नृपतुंग', 'महाराजाशण्ड', 'वीर-नारायण' और 'अतिशयधवल' आदि की उपाधियाँ धारण कीं।
- अमोघवर्ष की गणना विश्व के तत्कालीन चार महान शासकों में अरब यात्री सुलेमान ने की थी।
- अमोघवर्ष ने कन्नड़ में 'कविराज मार्ग' नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- 'आदिपुराण' के रचनाकार जिनसेन, 'गणितासार-संग्रह' के रचनाकार महावीराचार्य तथा 'अमोघवृति' के रचनाकार सक्तायना के आश्रयदाता अमोघवर्ष थे।
- अमोघवर्ष ने मान्यखेत या मालखंड को अपनी राजधानी बनाया।
- अमोघवर्ष के बाद उसका पुत्र कृष्ण द्वितीय 878 ई० में राजा बना।
- कृष्ण द्वितीय ने अकालवर्ष और शुभतुंग की उपाधियाँ धारण कीं।
- कृष्ण द्वितीय के बाद उसका पौत्र इन्द्र तृतीय 914 ई० में राजा बना। इसने 'निष्यावर्ष', 'कीर्ति नारायण' तथा 'राजामार्तण्ड' की उपाधियाँ धारण कीं।
- इन्द्र तृतीय ने पालवंश के राजा देवपाल प्रथम को युद्ध में परास्त कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया था।
- इन्द्र तृतीय के समय में अरबी यात्री अल मसूदी भारत आया था। अरब लेखकों ने राष्ट्रकूट वंश को बलहारा (बल्लराज) कहकर सम्बोधित किया था।
- इन्द्र तृतीय के बाद अमोघवर्ष द्वितीय, गोविन्द चतुर्थ, अमोघवर्ष तृतीय, कृष्ण तृतीय, खोत्तिग तथा कर्क द्वितीय राजा बने।
- खोत्तिग के शासनकाल में सियक परमार ने 971 ई० में राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेत को लूटा।
- राष्ट्रकूटों के एक सामन्त तैल द्वितीय ने कर्क द्वितीय के विरुद्ध युद्ध की तैयारियाँ की और 973 ई० के अन्त में विद्रोह कर दिया। कर्क द्वितीय युद्ध में परास्त हुआ और भाग गया। इस प्रकार लगभग 225 वर्ष के गौरवमय शासन के पश्चात् राष्ट्रकूट वंश इतिहास से लुप्त हो गया।

(vi) पाल वंश

- पाल वंश का संस्थापक गोपाल (750-770 ई०) था।
- गोपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था। इसने ओदन्तपुर में एक मठ का निर्माण करवाया।
- गोपाल के बाद उसका पुत्र धर्मपाल 770 ई० में राजा बना।
- पालवंश का योग्यतम शासक धर्मपाल (770-810 ई०) था। कवि सोड्ढल ने इसे उत्तरापथस्वामिन कहा है।
- धर्मपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था। इसने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना पाथरघाट, भागलपुर (बिहार) में की थी।
- धर्मपाल के बाद उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी देवपाल राजगद्दी पर बैठा।
- देवपाल ने अपनी राजधानी मुँगेर में स्थापित की।
- देवपाल के बाद विग्रहपाल प्रथम, नारायण पाल, राज्यपाल, गोपाल द्वितीय, विग्रहपाल द्वितीय, महीपाल प्रथम, नयपाल, विग्रहपाल तृतीय, सरपाल, रामपाल, कुमारपाल, गोपाल तृतीय, मदनपाल आदि प्रमुख राजा हुये।

- पालवंश के द्वितीय संस्थापक के रूप में महीपाल प्रथम को माना जाता है।
- कन्नौज पर आधिपत्य को लेकर लगभग दो सौ वर्षों तक गुजरात एवं राजपूताना के गुर्जर-प्रतिहार, दक्कन के राष्ट्रकूट एवं बंगाल के पाल शासकों के बीच होने वाले संघर्ष को त्रिपक्षीय संघर्ष कहा गया है। त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत प्रतिहार शासक वत्सराज ने की थी। त्रिपक्षीय संघर्ष में अन्तिम सफलता गुर्जर-प्रतिहारों को मिली थी।

(vii) गहड़वाल वंश

- गहड़वाल वंश की स्थापना चन्द्रदेव (1080-85 ई०) ने कन्नौज में की थी।
- गहड़वाल शासकों को काशी नरेश के रूप में जाना जाता था।
- गहड़वाल शासक चन्द्रदेव ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी।
- चन्द्रदेव के बाद उसका पुत्र मदनचन्द्र राजगद्दी पर बैठा।
- मदनचन्द्र के बाद गोविन्द चन्द्र राजगद्दी पर बैठा।
- गोविन्द चन्द्र के समय में लक्ष्मीधर (गोविन्द चन्द्र का मन्त्री) ने 'कल्पद्रुम' नामक विधिग्रंथ की रचना की थी।
- गहड़वाल वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं प्रतापी राजा गोविन्द चन्द्र था।
- गोविन्द चन्द्र के बाद विजयचन्द्र राजगद्दी पर बैठा।
- गहड़वाल वंश का अन्तिम राजा जयचन्द्र था।
- 1193 ई० में हुए प्रसिद्ध चन्दावर के युद्ध में मुहम्मद गोरी की सेनाओं ने जयचन्द्र को पराजित कर उसकी हत्या कर दी।
- जयचन्द्र के पुत्र हरिश्चन्द्र ने मुहम्मद गोरी के अधीन शासन किया।
- जयचन्द्र के दरबार में संस्कृत का प्रसिद्ध कवि श्रीहर्ष रहता था, जिसने 'नैषधचरित' की रचना की।
- चौहान वंश का शासक पृथ्वीराज तृतीय ने स्वयंवर से जयचन्द की पुत्री संयोगिता का अपहरण कर लिया था।

(viii) चौहान वंश

- शाकभरी चौहान वंश की स्थापना वासुदेव ने की थी।
- वासुदेव के बाद पूर्णतल्ल, जयराज, विग्रहराज प्रथम, चन्द्रराज, गोपराज, अजयराज, अर्णोराज, जगदेव, विग्रहराज चतुर्थ वीसलदेव, अपर गांगेय, पृथ्वी राज द्वितीय, सोमेश्वर, पृथ्वीराज तृतीय आदि चौहान वंश के प्रमुख शासक हुये।
- अजयराज ने अजमेर नामक शहर की स्थापना की थी।
- हरिकेल नाटक विग्रहराज चतुर्थ वीसलदेव की रचना है।
- महाकवि सोमदेव ने वीसलदेव के चरित्र की प्रशंसा में ललित विग्रहराज नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- सोमेश्वर का पुत्र एवं उत्तराधिकारी पृथ्वीराज तृतीय 1178 ई० में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- पृथ्वीराज तृतीय को 'राय पिथौरा' भी कहा जाता था।
- तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज तृतीय और मुहम्मद गोरी के बीच हुई थी। इस युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय की जीत हुई थी।
- तराइन का द्वितीय युद्ध 1192 ई० में पृथ्वीराज तृतीय और मुहम्मद गोरी के बीच हुआ था। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी की जीत हुई थी।
- पृथ्वीराज तृतीय की मृत्यु के बाद मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज तृतीय के पुत्र गोविन्द को अपनी अधीनता में अजमेर का शासक बनाया।
- पृथ्वीराज तृतीय की समाधि अफगानिस्तान में है।
- चौहान वंश का अन्तिम शक्तिशाली शासक पृथ्वीराज तृतीय (1178-1192 ई०) था।

(ix) चन्देल वंश

- चन्देल वंश का संस्थापक नन्नुक (831 ई०) था।
- नन्नुक के बाद वाक्पति, जयशक्ति, विजयशक्ति, राहिल, हर्ष, यशोवर्मन, धंगदेव, गंडदेव, विद्याधर, विजयपाल, देववर्मन, कीर्तिवर्मन, सल्लक्षणवर्मन, जयवर्मन, पृथ्वीवर्मन, मदनवर्मन, परमार्दिदेव आदि प्रमुख शासक बने।
- चन्देल वंश का पराक्रमी शासक हर्ष का पुत्र यशोवर्मन था।
- खजुराहो के चतुर्भुज मन्दिर को यशोवर्मन ने बनवाया था।

- चन्देलों की वास्तविक स्वाधीनता का जन्मदाता यशोवर्मन का पुत्र धंगदेव को माना जाता है।
- चन्देल शासक विद्याधर ने प्रतिहार शासक राज्यपाल की हत्या मात्र इसलिए कर दी, क्योंकि उसने महमूद गजनवी के कन्नौज पर आक्रमण के समय बिना युद्ध किये ही गजनवी के सामने समर्पण कर दिया था।
- चन्देल वंश का अन्तिम शासक परमार्दिदेव (परमाल) था।
- 1203 ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने परमार्दिदेव को पराजित कर कालिंजर पर अधिकार कर लिया।

(x) परमार वंश

- परमार वंश का संस्थापक उपेन्द्र (कृष्णराज) था।
- परमार वंश की प्रारम्भिक राजधानी उज्जैन थी।
- परमार वंश में उपेन्द्र, बैरिसिंह प्रथम, सियक प्रथम, वाक्पति प्रथम, वैरिसिंह द्वितीय, वाक्यपति मुंज, सिन्धुराज, भोज, जयसिंह, लक्ष्मण देव, जगतदेव, नरवर्मन, यशोवर्मन, जयवर्मन, विंध्यवर्मन, सुभटवर्मन आदि प्रमुख शासक थे।
- परमार वंश का प्रथम स्वतन्त्र एवं प्रतापी राजा सीयक अथवा श्रीहर्ष था।
- परमार वंश के मुंज ने श्री वल्लभ, पृथ्वीवल्लभ तथा अमोघवर्ष आदि उपाधियाँ धारण कीं।
- परमार वंश के मुंज के दरबार में यशोरूपावलोक के रचयिता धनिक, नवसाहसांकचरित के लेखक पद्मगुप्त, दशरूपक के लेखक धनंजय आदि रहते थे।
- मुंज के बाद उसका छोटा भाई सिन्धुराज शासक हुआ, जिसने कुमार नारायण एवं साहसांक की उपाधियाँ धारण कीं।
- परमार वंश का योग्य एवं प्रतापी शासक सिन्धुराज का पुत्र एवं उत्तराधिकारी भोज था।
- भोज ने उज्जैन के स्थान पर अपनी नई राजधानी धारा को बनाया।
- भोज ने अपनी विद्वता के कारण कविराज की उपाधि धारण की।
- भोज ने भोजपुर नगर एवं भोजसेन नामक तालाब का निर्माण करवाया।
- भोज ने समरांगणसूत्रधार, सरस्वतीकंठाभरण, सिद्धान्त संग्रह, राजमार्तण्ड, योगसूत्रवृत्ति, विद्याविनोद, युक्ति-कल्पतरू, चारूचर्या, आदित्य प्रताप सिद्धान्त, आयुर्वेद सर्वस्त्र आदि ग्रंथों की रचना की।

(xi) कलचुरी वंश

- कलचुरी वंश की स्थापना 845 ई० में कोकल्ल प्रथम ने की थी।
- कलचुरी वंश की राजधानी त्रिपुरी थी।
- कोकल्ल प्रथम के बाद शंकरगण, बालहर्ष, युवराज प्रथम, लक्ष्मणराज, शंकरगण द्वितीय, युवराज द्वितीय, कोकल्ल द्वितीय, गांगेय देव, कर्ण देव, यश कर्ण, गय कर्ण, नरसिंह, जयसिंह, विजयसिंह आदि प्रमुख शासक हुए।
- युवराज प्रथम 'केयूर वर्ष' की उपाधि धारण कर सिंहासन पर बैठा। राजशेखर कृत 'विद्धसाल भंजिका' में युवराज प्रथम को 'उज्जगिनी भुजंग' कहा गया है।
- युवराज प्रथम के दरबार में रहते हुए ही राजशेखर ने 'काव्य मीमांसा' एवं 'विद्धसाल भंजिका' नामक पुस्तक की रचना की थी।
- कलचुरी वंश के शासक लक्ष्मण राज ने कालिया नाग को छीन लिया था।
- लक्ष्मण राज शैवमत का समर्थक था।
- गांगेयदेव शैवमत का अनुयायी थ।
- कर्णदेव ने कलिंग विजय के बाद 'त्रिकलिंगाधिपति' की उपाधि धारण की थी।
- चन्देल शासक त्रैलोक्यवर्मन ने विजयसिंह को युद्ध में परास्त करके त्रिपुरी को अपने राज्य में मिला लिया।

(xii) सेन वंश

- सेन वंश का संस्थापक सामंत सेन था। सेन वंश की स्थापना राढ़ में हुई थी। इसकी राजधानी नदिया (लखनौती) थी।
- सेन वंश का पराक्रमी शासक विजयसेन था।
- विजयसेन का उत्तराधिकारी बल्लालसेन तथा बल्लालसेन का उत्तराधिकारी लक्ष्मणसेन था।
- लक्ष्मणसेन के दरबार में 'गीत गोविन्द' के रचयिता जयदेव तथा 'हलायुध' एवं 'पवनदूतम' के रचयिता धोई रहते थे।
- लक्ष्मणसेन के बाद विश्वरूपसेन तथा केशवसेन राजा बने।

- 1202 ई० में इख्तयारूद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार ने लक्ष्मणसेन की राजधानी लखनौती पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया।

(xiii) हिन्दूशाही वंश

- हिन्दूशाही वंश का संस्थापक कल्लर था।
- हिन्दूशाही वंश का योग्य एवं पराक्रमी शासक जयपाल था।
- जयपाल ने महमूद गजनवी से हारने के बाद 1001 ई० में अग्नि में कूदकर आत्महत्या कर ली।
- जयपाल के बाद आनन्दपाल, त्रिलोचनपाल तथा भीमपाल आदि प्रमुख शासक बने।
- हिन्दूशाही वंश के शासक भीम ने अपनी पुत्री की शादी लोहर वंश के शासक सिंहराम से की थी।

(xiv) सोलंकी वंश

- सोलंकी वंश का संस्थापक मूलराज प्रथम था।
- मूलराज प्रथम ने अन्हिलवाड़ा में अपनी राजधानी बनाई।
- मूलराज प्रथम के बाद चामुण्डराज, दुर्लभराज, भीमप्रथम, कर्ण, जयसिंह, कुमारपाल, अजयपाल, मूलराज द्वितीय, भीम द्वितीय आदि प्रमुख राजा बने।
- भीम प्रथम के शासनकाल में 1025-26 ई० में महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर पर आक्रमण कर लूट-पाट की थी।
- जयसिंह ने सिद्धराज की उपाधि धारण की थी।
- सोलंकी वंश का सर्वाधिक योग्य एवं प्रतापी राजा जयसिंह था।
- जयसिंह के दरबार में प्रसिद्ध जैन आचार्य हेमचन्द्र रहते थे।
- सोलंकी वंश के मूलराज द्वितीय ने 1178 ई० में आबू पर्वत के समीप मुहम्मद गोरी को युद्ध में परास्त किया था।

(xv) कार्कोट वंश

- सातवीं शताब्दी में दुर्लभवर्धन ने कश्मीर में कार्कोट वंश की स्थापना की थी।
- दुर्लभवर्धन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी दुर्लभक ने 'प्रतापादित्य' की उपाधि धारण की थी।
- 'प्रतापपुर नगर' की स्थापना दुर्लभक ने की थी।
- कार्कोट वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक ललितादित्य मुक्तापीड था।
- ललितादित्य मुक्तापीड के बाद उसका पुत्र जयापीड विनयादित्य राजा बना।
- जयापीड विनयादित्य के दरबार में क्षीर, उद्भट भट्ट, दामोदर गुप्त आदि विद्वान रहते थे।
- कार्कोट वंश का अन्तिम शासक जयापीड विनयादित्य था।

(xvi) उत्पल वंश

- उत्पल वंश का संस्थापक अवन्तिवर्मन (855-884 ई०) था। इसका शासन कश्मीर पर था।
- अवन्तिवर्मन ने अवन्तिपुर नगर एवं 'सुय्यापुरा' का निर्माण करवाया था।
- अवन्तिवर्मन के दरबार में 'रत्नाकर' एवं 'आनन्दवर्धन' नामक कवि रहते थे।
- अवन्तिवर्मन के बाद शंकरवर्मन, गोपालवर्मन, यशस्कर आदि कश्मीर के शासक बने।
- यशस्कर की मृत्यु के बाद यशस्कर का मन्त्री पूर्वगुप्त कश्मीर का शासक बना।
- पूर्वगुप्त के बाद क्षेमगुप्त 950 ई० में शासक बना।
- क्षेमगुप्त का विवाह लोहरवंश की राजकुमारी दिद्दा से हुआ था।
- क्षेमगुप्त की मृत्यु के बाद रानी दिद्दा ने 50 वर्षों तक कुशलता से कश्मीर पर शासन किया।
- 1003 ई० में रानी दिद्दा की मृत्यु के बाद रानी दिद्दा का भतीजा संग्राम राज कश्मीर का शासक बना।

(xvii) लोहर वंश

- लोहर वंश का संस्थापक संग्राम राज था।
- संग्राम राज के बाद अनन्त, कलश, हर्ष, जयसिंह आदि प्रमुख कश्मीर के शासक बने।
- कल्हण कवि हर्ष के शासनकाल में था।
- हर्ष की हत्या 1101 ई० में हुई थी।
- लोहरवंश का अन्तिम शासक जयसिंह था, जिसने यवनों को युद्ध में परास्त किया था।
- कल्हण ने राजतरंगिणी की रचना लोहर वंश के शासक जयसिंह के शासनकाल में की थी। राजतरंगिणी में कल्हण ने संस्कृत भाषा का प्रयोग किया है। इस पुस्तक से कश्मीर के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।

(xviii) वर्मन वंश

- कामरूप के वर्मन वंश का प्रथम महत्वपूर्ण शासक पुष्यवर्मन था।

- पुष्यवर्मन ने प्राग्ज्योतिषपुर को अपनी राजधानी बनाया।
- पुष्यवर्मन के बाद भूतिवर्मन राजा बना। भूतिवर्मन ने सम्पूर्ण कामरूप को अपने अधिकार में कर लिया।
- भूतिवर्मन के बाद सुस्थितवर्मन, सुप्रतिष्ठितवर्मन, भास्करवर्मन आदि प्रमुख शासक बने।
- सुस्थितवर्मन को मृगांक कहा जाता था।
- वर्मन वंश का अन्तिम महान शासक भास्करवर्मन था।

(xix) गंग वंश

- अभिलेखों के अनुसार, गंग वंश का पहला शासक कोंगनिवर्मा था।
- गंग वंश की स्थापना वज्रहस्त पंचम ने किया था। इस वंश का प्रमुख शासक श्रीपुरुष था।
- गंग वंश की प्रारम्भिक राजधानी कुवलाल (कोलर) थी, बाद में तलकाड हो गई।
- 1004 ई० में चोल शासक राजराज प्रथम ने गंग वंश के शासक को पराजित करके अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- उड़ीसा के पूर्वी गंग वंश का सर्वाधिक प्रतापी शासक अनन्तवर्मा चोदगंग था। इसका शासनकाल 1076 से 1148 ई० तक था।
- पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथ मन्दिर का निर्माण अनन्तवर्मा चोदगंग ने करवाया था।
- गंग राजा राजमल्ल चतुर्थ के मन्त्री चामुण्ड राय ने 983 ई० में श्रवणबेलगोला में साढ़े 56 फीट ऊँची गोमतेश्वर की प्रतिमा का निर्माण कराया था।

(xx) चेर वंश

- चेर वंश का प्रथम शासक उदियन जेरल था।
- उदियन जेरल का पुत्र आदन ने सात छत्रधारी राजाओं पर विजय प्राप्त की थी।
- आदन ने 55 वर्ष के शासनकाल में अधिराज एवं श्रमयवरम्वन की उपाधियाँ धारण की थी।
- आदन की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई पल्यानैशेल्केलु कुट्टवन राजा बना।
- शुनगुट्टवन अथवा धर्मपरायण कुट्टवन को लालचेर कहा जाता था।
- दक्षिणी प्रायद्वीप में सर्वप्रथम 'पत्तिनी' या 'कण्णानी' पूजा की प्रथा शेनगुट्टवन ने प्रारम्भ की थी।
- आदन का पुत्र इरंपोरई ने सामन्तों की राजधानी तडगूर (धर्मपुर) पर आक्रमण कर जीत लिया था।
- दक्षिणी भू-भाग में सर्वप्रथम गन्ने की खेती को तगडूर के राजा अडिगयमान अथवा नडुमान ने आरम्भ करवाया था।
- पेरूने जेरल इरंपोरई ने पाण्ड्य तथा चोल शासकों से युद्ध किया और बहुत-सा धन अपनी राजधानी वांजि (करूवुर) लाया।

(xxi) पाण्ड्य वंश

- पाण्ड्य वंश का प्रथम ऐतिहासिक शासक पलशालैमुडुकुडमी था। यह अनेक यज्ञों का अनुष्ठान करवाने के कारण पलशालै कहा गया।
- पाण्ड्यों की राजधानी मदुरा (मदुरई) थी। पाण्ड्यों की प्रारम्भिक राजधानी कोल्कई थी।
- पाण्ड्यों का राजचिह्न मत्स्य (मछली) था।
- पाण्ड्य वंश के प्रमुख शासक नेडियोन, पलशालैमुडुकुडमी, नेडुंजेलियन, वेरिवरशेलियकोरकै आदि हुये।
- नेडियोन शब्द का अर्थ लम्बा आदमी होता है।
- 'पहरूली नदी' को नेडियोन ने अस्तित्व में लाया। इसने 'सागर पूजा' की परम्परा को आरम्भ किया।
- नक्कीरर, कल्लादनार एवं मागुंडिमरूदन आदि कवि नेडुंजेलियन के समकालीन थे।
- नवरत्न की उपाधि वेरिवरशेलियकोरकै ने धारण की थी।
- शिलप्पदिकारम की नायिका 'कण्णगी' के निर्देश पति को हार चुकाने के अपराध में नेडुजेलियन ने मृत्युदण्ड दे दिया, परन्तु वास्तविकता के पता चलने पर राजा ने एक निर्दोष व्यक्ति को प्राणदण्ड देने के प्रायश्चित में आत्महत्या कर ली।
- सती कण्णनी के सम्मान में वेरिवरशेलियकोरकै ने एक विशाल उत्सव आयोजित करवाया था।

(xxii) चोल वंश

- चोलों के विषय में प्रथम जानकारी पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी' से मिलती है।
- चोलों की पहली राजधानी 'उत्तरी मनलूर' थी। कालान्तर में चोलों की राजधानी उरैयुर तथा तंजावुर बनी। चोलों का शासकीय चिह्न बाघ था।